नई दिल्ली, उत्तर प्रदेश, हरियाणा, पंजाब, राजस्थान, महाराष्ट्र, मध्य प्रदेश, झारखंड, उड़ीसा, बिहार से प्रसारित

सोशल मीडिया से जुड़ें
Parivehan_Vishesh

RNI No :- DELHIN/2023/86499
DCP Licensing Number : F.2 (P-2) Press/2023

www.newsparivahan.com

परिवहन विशेष

वर्ष 04, अंक 187, नई दिल्ली, सोमवार 12 अक्टूबर 2026, मूल्य ₹ 5, पेज 8

देश का पहला ट्रांसपोर्ट दैनिक समाचार पत्र

02 आपके स्वास्थ्य की आठ दिशाएँ : सुधारित दिशात्मक तत्व द्व वात–पित्त–कफ संबंध
06 एआई या विनाश?
08 11 ड्रोन से 2,708 रूट किलोमीटर रेलमार्ग और 284 स्टेशनों की निगरानी

परिवहन विशेष समाचार पत्र को जिस तरह आप लोगों के सहयोग लगातार पिछले 3 वर्षों से प्राप्त हुआ और दिन प्रतिदिन आपकी आवाज को आगे पहुंचाने में आपका सहयोगी बना उसको देखते हुए परिवहन विशेष समाचार पत्र के प्रबंधक मंडल और ट्रांसपोर्ट विशेष न्यूज लिमिटेड कंपनी द्वारा जनहित, जनकल्याण जनसूचना और जानकारी को और तेजी से भारत सरकार और राज्य सरकारों के साथ सभी राजनीतिक संगठनों को सबसे पहले पहुंचाने के उद्देश्य से अक्टूबर माह से जनता की आवाज का अपना चैनल "परिवहन विशेष न्यूज दूरदर्शन" शुरू करने का निर्णय लिया है।

जल्द आपके बीच में....

परिवहन विशेष न्यूज दूरदर्शन

बड़ी खुशखबरी! अब आपकी आवाज गूंजेगी पूरी दुनिया में
परिवहन विशेष समाचार पत्र के सफल 3 वर्षों के बाद अब नई क्रांति

आशा करते हैं जैसे आपने आज के इस दौर मे "परिवहन विशेष समाचार पत्रों" को इतना आगे ले कर जाने में सहयोग दिया उसी प्रकार हमारे द्वारा आपकी आवाज बनने के लिए शुरू किए जा रहे "परिवहन विशेष न्यूज दूरदर्शन" को विश्व का सबसे बड़ा चैनल बनवाएंगे।

संजय बाठला
मुख्य संपादक

परिवहन विशेष - संपादकीय धार्मिक - द्वितीय मां ब्रह्मचारिणी : द्वितीय मां ब्रह्मचारिणी: तप, त्याग और संयम की देवी - जिनकी आराधना से मिलती है

शारदीय नवरात्रों के दूसरे दिन होती है ब्रह्मचारिणी की पूजा – जानिए कथा, पूजा विधि, भोग, मंत्र और आशीर्वाद का सम्पूर्ण रहस्य

प्रधान संपादक: संजय कुमार बाठला - सह संपादक: पिंकी कुंडू

परिचय - संपादकीय टिप्पणी:

नवरात्रि का दूसरा दिन देवी ब्रह्मचारिणी को समर्पित है। 'ब्रह्म' का अर्थ है तपस्या और 'चारिणी' का अर्थ है आचरण करने वाली। यानी तप का आचरण करने वाली देवी। माँ पार्वती के इसी रूप ने कठोर तप करके भगवान शिव को पति रूप में प्राप्त किया। उनकी आराधना से भक्त को तप, धैर्य, संयम, वैराग्य और ज्ञान की प्राप्ति होती है।

1. तथ्य - स्वरूप और पहचान

- स्वरूप: श्वेत वस्त्र धारण किए, दाहिने हाथ में जपमाला, बाएं हाथ में कमंडल
- वाहन: पैदल, चरण कमल - पवित्रता का प्रतीक
- अन्य नाम: तपस्विनी, तपश्चारिणी, अपर्णा (बिना पत्ते खाए तप करने के कारण)
- चक्र: स्वाधिष्ठान चक्र की अधिष्ठात्री
- प्रिय रंग: सफेद, पीला
- प्रिय फूल: कमल, चमेली, गेंदा
- प्रिय भोग: शक्कर, मिश्री, सफेद मिठाई, फल

2. तथ्य - कथा - तप की महिमा

पूर्व जन्म में मां पार्वती ने हिमालय राज के घर जन्म लिया। नारद मुनि की सलाह पर उन्होंने भगवान शिव को पति रूप में पाने के लिए कठोर तप किया। 1000 वर्ष तक केवल फल-फूल खाकर, 100 वर्ष तक केवल जमीन पर सोकर, 3000 वर्ष तक केवल बिल्व पत्र खाकर, अंत में बिना कुछ खाए - बिना पत्तों के भी तप किया, इसलिए उन्हें 'अपर्णा' कहा गया। देवताओं ने उन्हें वरदान दिया कि उनकी तपस्या सफल होगी और शिव उन्हें प्राप्त होंगे। यही तपस्या ही ब्रह्मचारिणी का प्रतीक है।

3. तथ्य - पूजा विधि - द्वितीय दिवस

- स्नान एवं संकल्प: प्रातःकाल स्नान कर पीले/सफेद वस्त्र पहनकर व्रत का संकल्प लें
- कलश पूजा: पहले कलश, गणेश और नवग्रह की पूजा करें
- मंत्र जाप: ॐ देवी ब्रह्मचारिण्यै नमः - 108 बार जप करें
- ध्यान मंत्र: दधाना कर पद्माभ्यामक्षमाला कमण्डलू। देवी प्रसीदतु मयि ब्रह्मचारिण्यनुत्तमा।।
- पुष्प अर्पण: सफेद कमल, चमेली का फूल अर्पित करें
- भोग: मिश्री, शक्कर, सफेद मिठाई और फल का भोग लगाएं
- आरती: मां की आरती, दुर्गा चालीसा और सप्तशती का पाठ करें
- कन्या पूजन: द्वितीय दिवस पर छोटी कन्याओं को भोजन कराना शुभ माना जाता है

4. तथ्य - लाभ और आशीर्वाद

- विद्या और ज्ञान: विद्यार्थियों को विशेष लाभ - बुद्धि, एकाग्रता में वृद्धि
- वैराग्य और संयम: मन की चंचलता दूर होती है, संयम और धैर्य बढ़ता है
- कष्ट निवारण: तप की शक्ति से जीवन के दुख, विघ्न और बाधाएं दूर होती हैं
- सिद्धि: साधक को तप की सिद्धि, मनोकामना पूर्ति का आशीर्वाद मिलता है
- सौभाग्य: विवाह, दाम्पत्य सुख में वृद्धि और सौभाग्य प्राप्ति

मुख्य बिंदु - संपादकीय निष्कर्ष:

1. ब्रह्मचारिणी की पूजा का अर्थ है - अपने मन को तप और संयम में लगाना।
2. सफेद रंग त्याग और पवित्रता का प्रतीक है - मां सफेद वस्त्रों में तप का संदेश देती हैं।
3. आज के भौतिक युग में ब्रह्मचारिणी का संदेश सबसे अधिक प्रासंगिक है - धैर्य, संयम और कठिन परिश्रम ही सफलता का मार्ग है।
4. पूजा में भोग से अधिक भाव महत्वपूर्ण है - श्रद्धा और भक्ति से मां प्रसन्न होती हैं।

संपादकीय बॉक्स:

"जो भक्त मां ब्रह्मचारिणी की श्रद्धा से आराधना करता है, उसे तप, त्याग और विजय का वरदान मिलता है। माँ की कृपा ही जीवन की सबसे बड़ी शक्ति है।"

फुटर - ट्रांसपोर्ट विशेष न्यूज लिमिटेड | परिवहन विशेष समाचार पत्र दैनिक | टेंपल आफ लिबरलाइजेशन एंड वेलफेयर अलाइड ट्रस्ट (पंजीकृत) | ट्रांसपोर्ट ऑपरेटर्स एंड लेबर वेलफेयर एसोसिएशन (पंजीकृत) के प्रमुख सांझा प्रबंधन मंडल की ओर से आप सभी को शारदीय नवरात्रों की हार्दिक शुभकामनाएं।

"माँ की अनुपम ममता और कृपा सब पर बनी रहे यही कामना है हमारी."

संजय कुमार बाठला - प्रधान संपादक | पिंकी कुंडू - सह संपादक | Parivahan Vishesh Newspaper RNI DELHIN/2023/86499

परिवहन विशेष - संपादकीय - सेवक पार्क PIL

दिल्ली हाई कोर्ट का बड़ा आदेश - सेवक पार्क को मिलेगा पानी और सफाई, जनहित याचिका पर पहले ही दिन प्रभावी अंतरिम आदेश

रात 2–3 बजे तक पानी के लिए जागने को मजबूर थे निवासी, MCD और दिल्ली जल बोर्ड को 2 सप्ताह में जवाब देने का निर्देश – अगली सुनवाई 2 दिसंबर 2026

प्रस्तुतकर्ता पिंकी कुंडू सामाजिक परामर्शदाता

मामला क्या है?

- क्षेत्र: सेवक पार्क, द्वारका मोड़, दक्षिण-पश्चिम दिल्ली - 110059
- मुद्दा: मूलभूत नागरिक सुविधाओं से जुड़ा - कचरा संग्रहण, स्वच्छता और पेयजल आपूर्ति
- याचिकाकर्ता: गौरव गुप्ता
- अधिवक्ता: अनिमेष शुक्ला (सुप्रीम कोर्ट और विभिन्न हाई कोर्ट में प्रैक्टिसरत, नामांकन सं. UP-00001-2025) और वरिष्ठ सहयोगी Ms. Aarati Sah

निवासियों की शिकायत:

1. MCD द्वारा कचरा संग्रहण एवं स्वच्छता से संबंधित दायित्वों के निर्वहन में कथित कमी।
2. दिल्ली जल बोर्ड (DJB) द्वारा नियमित और निर्धारित समय पर पेयजल उपलब्ध नहीं कराया जाना।
3. निवासियों को पीने का पानी प्राप्त करने के लिए रात लगभग 2-3 बजे तक जागकर जलापूर्ति शुरू होने की प्रतीक्षा करनी पड़ती है। दिन के समय जलापूर्ति उपलब्ध नहीं होती।
4. DJB अपने द्वारा आधिकारिक रूप से प्रकाशित जलापूर्ति समय-सारणी का भी पालन नहीं कर रहा है।

हाई कोर्ट का आदेश - 07.10.2026:

- केस: W.P.(C) 14855/2026 & CM APPL. 69590/2026, CNR No. DLHC010484262026
- पीठ: माननीय कार्यकारी मुख्य न्यायाधीश नितिन वासुदेव साम्ब्रे (ACJ) और माननीय न्यायमूर्ति अरुण भारद्वाज
- अंतरिम आदेश (पैरा 9-10): प्रतिवादी संख्या 1, 2 और 3 (MCD, DJB आदि) को निर्देश - याचिकाकर्ता की शिकायतों के समाधान के लिए उठाए गए कदमों की जानकारी दें।
- समय सीमा: उक्त निर्णय/जानकारी 2 सप्ताह के भीतर याचिकाकर्ता को उपलब्ध कराई जाए और उसकी एक प्रति अगली सुनवाई से पहले न्यायालय के रिकॉर्ड पर रखी जाए।
- काउंटर एफिडेविट: प्रतिवादियों को 4 सप्ताह में काउंटर एफिडेविट और उसके बाद 2 सप्ताह में रिज्वाइंडर दाखिल करने का निर्देश।
- अगली सुनवाई: 02 दिसंबर 2026

विशेष तथ्य:

अधिवक्ता अनिमेष शुक्ला ने इस सुनवाई में उस समय कलकत्ता हाई कोर्ट में उपस्थित रहते हुए वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से दिल्ली हाई कोर्ट के समक्ष अपनी दलीलें प्रस्तुत कीं।

संपादकीय निष्कर्ष:

>पानी, सफाई और कचरा प्रबंधन केवल सेवा नहीं, नागरिकों का मूल अधिकार है। हाई कोर्ट का पहले ही दिन अंतरिम आदेश इस बात का प्रमाण है कि जनहित याचिका जन-जीवन बदल सकती है। अब नजर MCD और DJB के जवाब पर है।

फुटर:

संजय कुमार बाठला - प्रधान संपादक | Parivahan Vishesh Newspaper | RNI DELHIN/2023/86499

परिवहन विशेष - संपादकीय - महिला सुरक्षा ही सबसे बड़ी सुरक्षा : अनधिकृत बसों के लिए कोई जगह नहीं - जनता की सुरक्षा के लिए हर राज्य की प्रवर्तन शाखा को सघन जांच करना चाहिए

महिला सुरक्षा ही सबसे बड़ी सुरक्षा – ऑपरेशन कवच सिर्फ एक अभियान नहीं, एक स्थायी व्यवस्था हो
मोटर वाहन अधिनियम, न्यायिक आदेशों, राजपत्रित अधिसूचनाओं और राज्य सरकारों के आदेशों के अनुसार ही सड़कों पर चले जन सेवा

प्रस्तुतकर्ता पिंकी कुंडू सामाजिक परामर्शदाता

1. **संपादकीय प्रस्तावना** - क्यों लिखना पड़ा? गौतमबुद्ध नगर और दिल्ली में छात्राओं और महिला यात्रियों के साथ हुई घटनाओं ने एक बार फिर यह प्रश्न खड़ा कर दिया -
* क्या सड़क पर चल रही बस वास्तव में सुरक्षित है?
* क्या उसके पास वैध परमिट है ?
* क्या उसमें GPS, CCTV और पैनिक बटन लगा है और वो भी 112 से जुड़ा है या नहीं?
* क्या चालक-परिचालक का पुलिस सत्यापन हुआ है?

उत्तर प्रदेश शासन के निर्देश पर शुरू हुआ 'ऑपरेशन कवच' और 'ऑपरेशन कवच 2.0' इस प्रश्न का प्रशासनिक उत्तर है, परंतु यह उत्तर तभी सार्थक होगा जब यह सभी राज्यों में निरंतर चलने वाली व्यवस्था बने, न कि केवल घटना के बाद का अभियान।

2. कानूनी आधार - मोटर वाहन अधिनियम, 1988 (संशोधित 2019)

- धारा 66 - परमिट की अनिवार्यता: बिना परमिट के किसी भी स्टेज कैरिज / कॉन्ट्रैक्ट कैरिज बस का संचालन अवैध है। परमिट शर्तों का उल्लंघन अपराध है।
- धारा 56 - फिटनेस प्रमाणपत्र: यात्री बस का फिटनेस प्रमाणपत्र प्रत्येक 6 माह में अनिवार्य है। बिना फिटनेस के बस का संचालन निषिद्ध है।
- धारा 86 और 86A - परमिट निलंबन / रद्दीकरण: यदि वाहन मालिक सुरक्षा शर्तों का उल्लंघन करे, तो राज्य परिवहन प्राधिकरण परमिट निलंबित या रद्द कर सकता है।
- धारा 112-113 - गति सीमा और यात्री भार: ओवरलोडिंग और ओवरस्पीडिंग पर चालान और सीज का प्रावधान।
- धारा 207 - वाहन का जब्तीकरण: नियमों के विरुद्ध संचालित वाहन को प्रवर्तन अधिकारी मौके पर ही जब्त कर सकता है।
- केंद्रीय मोटर वाहन नियम, 1989 - नियम 125H: सार्वजनिक सेवा वाहनों में VLT (GPS), पैनिक बटन और CCTV / AIS-140 मानक अनिवार्य है।

3. राजपत्रित अधिसूचनाएं और दिशा-निर्देश

- AIS-119 और AIS-140: बसों की बॉडी, सीट, इमरजेंसी एग्जिट, अग्निशमन यंत्र, GPS ट्रैकिंग, पैनिक बटन का राष्ट्रीय मानक। AIS-119 के तहत निरीक्षण में विफल बस को फिटनेस नहीं मिल सकता।
- भारत सरकार, सड़क परिवहन एवं राजमार्ग मंत्रालय की अधिसूचना: सभी सार्वजनिक सेवा वाहनों में VLTD (Vehicle Location Tracking Device), पैनिक बटन और कैमरा अनिवार्य। पैनिक बटन दबाते ही संदेश 112 इमरजेंसी रिस्पांस सिस्टम को जाएगा।
- राज्य सरकारों के आदेश: उत्तर प्रदेश, दिल्ली, हरियाणा, राजस्थान सहित अधिकांश राज्यों ने महिला सुरक्षा हेतु विशेष आदेश जारी किए हैं - बस में महिला हेल्पलाइन नंबर, चालक का फोटो-नाम, रूट डिटेल और आपातकालीन नंबर 112 प्रदर्शित करना अनिवार्य।
- परिवहन विभाग के आदेश: बिना पुलिस सत्यापन के चालक/परिचालक को बस चलाने की अनुमति नहीं, प्राइवेट बसों के लिए रात्रि संचालन में विशेष जांच, स्कूल बसों के लिए अलग मानक - हरियाणा / दिल्ली स्कूल बस नियम।

4. न्यायिक आदेश - न्यायालयों का मार्गदर्शन

- सुप्रीम कोर्ट - मुकेश कुमार बनाम हरियाणा राज्य और अन्य (सड़क सुरक्षा मामला): सुप्रीम कोर्ट ने सड़क सुरक्षा को नागरिकों के अनुच्छेद 21 के तहत जीवन के अधिकार से जोड़ा है और राज्यों को सख्त प्रवर्तन के निर्देश दिए हैं।
- दिल्ली हाई कोर्ट: बसों में CCTV, GPS और पैनिक बटन अनिवार्य करने के निर्देश, बिना वैध दस्तावेजों के बस संचालन पर सीज और दंड का समर्थन।
- उत्तर प्रदेश शासन और हाई कोर्ट की निगरानी: गौतमबुद्ध नगर की घटना के बाद शासन ने सभी जिलों को निर्देश दिया कि अनधिकृत बसों पर तत्काल कार्रवाई हो।
- महिला सुरक्षा के लिए नेशनल क्राइम रिकॉर्ड ब्यूरो और निर्भया फंड: निर्भया योजना के तहत बसों में सुरक्षा उपकरणों के लिए फंड का प्रावधान।

5. तथ्य - ऑपरेशन कवच से क्या सीखा?

- गौतमबुद्ध नगर अभियान में: 5 प्रवर्तन टीमें (3 एआरटीओ + 2 पीटीओ) - परी चौक, महामाया फ्लाईओवर, सेक्टर-37, सूरजपुर पर चेकिंग।
- अनियमितताएं जो मिलीं: बिना परमिट, बकाया टैक्स, नियम विरुद्ध माल ढुलाई, बिना फिटनेस, बिना GPS/CCTV।
- सघन जांच की आवश्यकता: हर जिले में सप्ताह में कम से कम 2 बार रैंडम चेकिंग, रात्रि 10 बजे के बाद बसों की विशेष जांच, महिला यात्रियों से फीडबैक।

6. मुख्य बिंदु - संपादकीय मांग - सभी राज्यों के लिए 10 सूत्री एजेंडा

1. परमिट के बिना कोई बस नहीं: हर बस पर रूट, परमिट नंबर, मालिक का नाम और फोन नंबर अनिवार्य।
2. **फिटनेस: फिटनेस फेल बस को मौके पर सीज।**
3. GPS + पैनिक बटन + CCTV: AIS-140 के अनुसार अनिवार्य, बिना इसके परमिट नवीनीकरण नहीं और विभाग द्वारा यह 112 से जुड़ा होना अनिवार्य
4. चालक सत्यापन: पुलिस वेरिफिकेशन, मेडिकल और ड्राइविंग लाइसेंस की जांच बिना, कोई चालक नियुक्त नहीं।
5. **रात्रि सुरक्षा: रात 10 बजे से सुबह 6 बजे तक महिला यात्रियों की सुरक्षा के लिए अतिरिक्त जांच।**
6. नियमित प्रवर्तन: अभियान नहीं, व्यवस्था - हर सप्ताह रैंडम चेकिंग और त्रैमासिक ऑडिट।
7. नागरिक शिकायत: 112 और 1091 (महिला हेल्पलाइन) पर शिकायतों पर तत्काल कार्रवाई।
8. स्कूल बसें: स्कूल बसों के लिए विशेष मानक - गति नियंत्रण, परिचारक, फर्स्ट एड।
9. डिजिटल ट्रैकिंग: हर बस का डैशबोर्ड RTO/कंट्रोल रूम से जुड़ा हो।
10. दंड: सुरक्षा नियमों का उल्लंघन करने वाले पर मोटर वाहन अधिनियम की धारा 86-86A के तहत परमिट निलंबन/रद्दीकरण और धारा 207 के तहत सीज।

संपादकीय निष्कर्ष: ऑपरेशन कवच का अर्थ केवल बसों को सीज करना नहीं, बल्कि जनता, विशेषकर महिलाओं में यह विश्वास जगाना है कि बस में चढ़ते समय वह सुरक्षित हैं। जब तक हर राज्य की प्रवर्तन शाखा नियम-कानून-अधिनियम और दिशा-निर्देशों के अनुसार नियमित सघन जांच नहीं करेगी, तब तक सुरक्षा की गारंटी अधूरी रहेगी। महिला सुरक्षा ही सबसे बड़ी सुरक्षा है - यह केवल नारा नहीं, सरकारों का संवैधानिक दायित्व है।

आपातकालीन सेवा: आपातकाल 112 | महिला हेल्पलाइन 1091 | चाइल्ड हेल्पलाइन 1098

पारुल भटनागर
(एस्ट्रो-न्यूमरो-वास्तु विशेषज्ञ)
8750075550
parullbhatnaggar@gmail.com

आपके स्वास्थ्य की 8 दिशाएँ : सुधारित दिशात्मक तत्व - वात-पित्त-कफ संबंध

स्वास्थ्य से जुड़ी हमारी इस यात्रा में पश्चिम दिशा की शुरुआत एक स्पष्ट तात्त्विक पहचान से होती है: पश्चिम = आकाश तत्व।

दोषों से इसका संबंध भी उतना ही महत्वपूर्ण है: आकाश, वात का एक घटक है; उसका दूसरा घटक वायु है। इसे समझ लेने पर स्वास्थ्य से जुड़ी चर्चा अधिक तार्किक हो जाती है।

तत्व से दोष तक

वात वायु और आकाश से मिलकर बनता है। यह गति, गतिशीलता, परिसंचरण और शारीरिक क्रियाओं के प्रवाह को संचालित करता है।

पित्त अग्नि और जल से मिलकर बनता है। यह ऊष्मा, पाचन और रूपांतरण को संचालित करता है, जबकि जल उस अग्नि को नियंत्रित करता है और उसका वहन करता है।

कफ जल और पृथ्वी से मिलकर बनता है। यह जुड़ाव, पोषण, स्थिरता, स्निग्धता और संचय को संचालित करता है।

इसलिए किसी असंतुलन का अर्थ यह नहीं कि कोई तत्व केवल "बुरा" है। वह अधिक, कम, अवरुद्ध, अत्यधिक गर्म, भार से दबा हुआ या अपनी स्वाभाविक भूमिका निभाने में असमर्थ हो सकता है। यह अंतर पूरी समझ को बदल देता है।

पश्चिम दिशा में असंतुलन होने पर क्या दिखाई दे सकता है?

इस श्रृंखला में प्रयुक्त पारंपरिक मेडिकल वास्तु दृष्टिकोण के अनुसार, इस दिशात्मक क्षेत्र के असंतुलन का संबंध कई शारीरिक या मानसिक प्रवृत्तियों से जोड़ा जा सकता है। उदाहरण के लिए, श्वसन संबंधी प्रवृत्तियाँ—अस्थमा, गले में खराश, गले की सूजन, सूखी खाँसी या साँस लेने में कठिनाई। संबंधित सूक्ष्म क्षेत्रों में आँतों और मलत्याग से जुड़े संकेत भी देखे जाते हैं, जैसे बलगम या श्लेष्मा, दस्त, कब्ज, बवासीर, गुदा में दरार या भगंदर तथा आँतों के कार्य में गड़बड़ी।

कृपया "संबंध जोड़ा जा सकता है" शब्दों को ध्यान से पढ़ें। ये संभावित पारंपरिक संबंध हैं; यह भविष्यवाणी नहीं है कि वास्तु दोष वाले घर में रहने वाले हर व्यक्ति को ये समस्याएँ होंगी।

वास्तविक अभिव्यक्ति तीन बातों पर निर्भर करती है: संपत्ति में क्या असंतुलित है, उससे तत्व या दोष की कौन-सी स्थिति बन रही है और ज्योतिषीय कुंडली के अनुसार परिवार में कौन-सा व्यक्ति उसके प्रति संवेदनशील है।

एक ही दिशा अलग-अलग प्रभाव क्यों दिखाती है?

इस पर विचार करें: उपयोग योग्य आकाश या खुला स्थान बहुत कम होने से गति और निष्कासन बाधित हो सकते हैं; अत्यधिक आकाश वात को बिखरा सकता है। ठंडक, गर्मी, अपशिष्ट जल और कमरे का उपयोग भी इसके प्रभाव को अलग-अलग ढंग से बदलते हैं।

संपत्ति की प्रत्येक स्थिति तत्व पर अलग प्रभाव डालती है। दिशा का कटा हुआ भाग कमी दर्शाता है। दिशा में विस्तार अतिशयता दर्शाता है। भारी सामान का भंडारण पृथ्वी तत्व और कफ जैसी पकड़ या रोकने की प्रवृत्ति बढ़ाता है। जल तरलता जोड़ता है, लेकिन जमा हुआ जल ठहराव या प्रतिधारण भी दर्शाता है। अग्नि पित्त जैसी गर्मी बढ़ाती है। बिजली के उपकरण सक्रियता और अग्नि जैसी उत्तेजना बढ़ाते हैं। शौचालय या सेप्टिक व्यवस्था जल के साथ अपशिष्ट और निष्कासन का कार्य जोड़ती है। गड्ढा निचलापन पैदा करता है। अत्यधिक ऊँचाई या भार धारण करने की स्थिति प्रभाव बदलती है।

इसलिए पश्चिम दिशा के दो अलग दोषों का स्वास्थ्य पर एक जैसा प्रभाव होना आवश्यक नहीं है।

दोषों की अधिकता और कमी दोनों महत्वपूर्ण हैं

यहीं वात, पित्त और कफ की समझ इस लेख को अधिक उपयोगी बनाती है।

पारंपरिक दृष्टि से बढ़ा हुआ वात बेचैनी, अनियमितता, भय, रूखापन या अत्यधिक गति के रूप में दिखाई दे सकता है। कम या अवरुद्ध वात शारीरिक क्रियाओं की धीमी या बाधित गति के रूप में दिखाई दे सकता है।

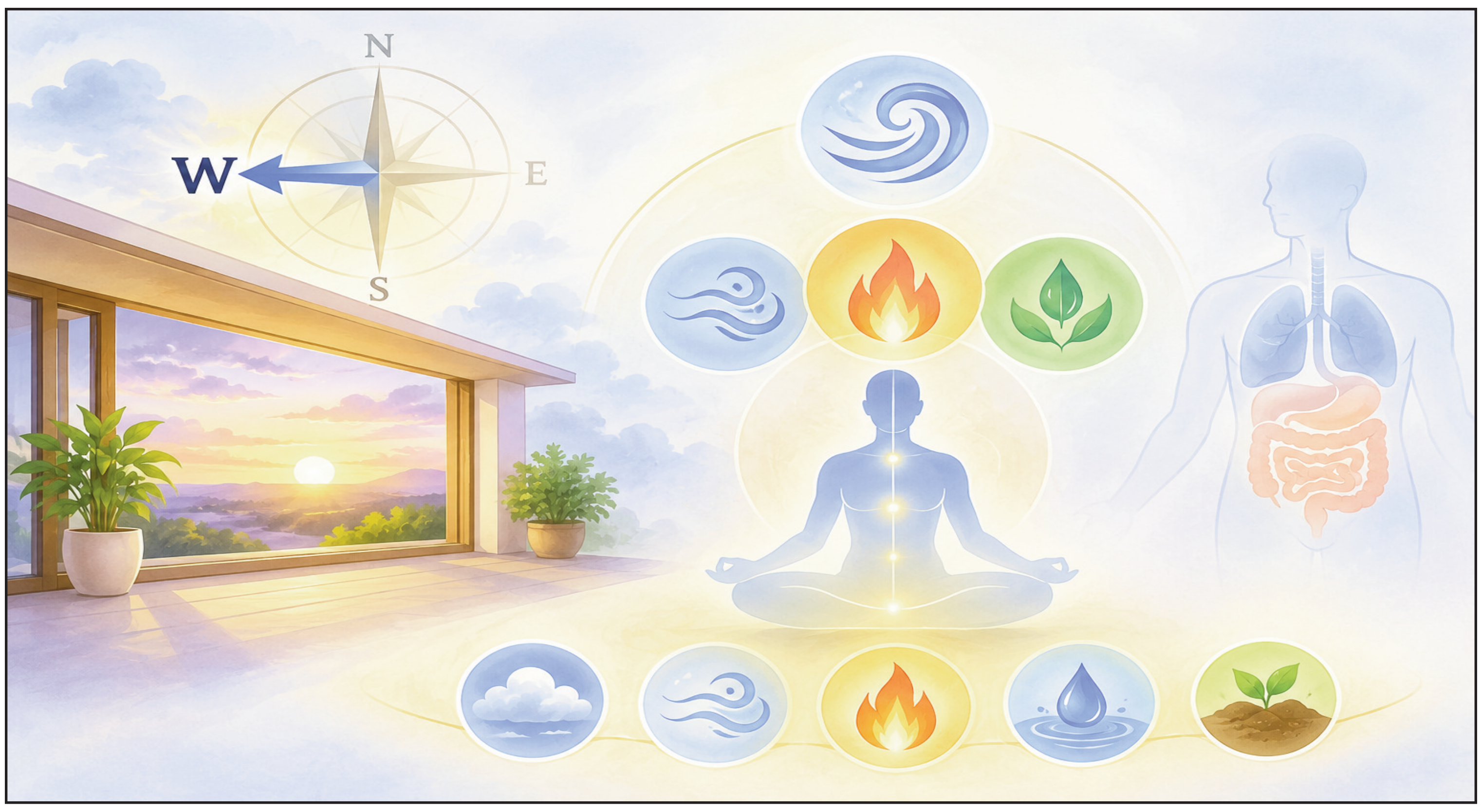

बढ़ा हुआ पित्त गर्मी, जलन, उत्तेजना या अत्यधिक रूपांतरण के रूप में दिखाई दे सकता है। कम पित्त कमजोर रूपांतरण या मंद पाचन का संकेत दे सकता है।

बढ़ा हुआ कफ भारीपन, बलगम, सूजन, प्रतिधारण या संचय के रूप में दिखाई दे सकता है। कम कफ का अर्थ अपर्याप्त स्थिरता, पोषण या स्निग्धता हो सकता है।

इसलिए कोई उपाय लागू करने से पहले यह समझना आवश्यक है कि अभिव्यक्ति अधिक, कम या अवरुद्ध है।

पाठक के लिए एक उदाहरण

मान लें कि किसी निवासी को ऊपर बताए गए व्यापक समूह से संबंधित कोई समस्या है, जिसका चिकित्सकीय निदान हो चुका है। "इसके लिए आपकी पश्चिम दिशा जिम्मेदार है" कहने के बजाय, मैं पहले पूछूँगी कि शरीर किस प्रकार के संकेत दिखा रहा है।

क्या गर्मी है या ठंडक? संचय है या कमी? अत्यधिक गति है या अवरोध? रूखापन है या द्रव का प्रतिधारण? उत्तेजना है या सुस्ती?

इसके बाद मैं ज्योतिषीय कुंडली का अध्ययन करूँगी।

यदि कुंडली उसी तत्व या दोष के असंतुलन के प्रति संवेदनशीलता दिखाती है, तो मैं पश्चिम दिशा के सटीक सूक्ष्म क्षेत्र और उसके वर्तमान उपयोग की जाँच करूँगी।

यदि शरीर, ज्योतिषीय कुंडली और संपत्ति—तीनों स्तर एक ही तात्त्विक संकेत दोहराते हैं, तो उस संबंध पर ध्यान देना उचित हो जाता है। यदि ऐसा नहीं होता, तो हमें जबरन वास्तु संबंधी व्याख्या नहीं करनी चाहिए।

प्रक्रिया को दूसरे क्रम में भी समझें

हम घर से भी शुरुआत कर सकते हैं।

मान लें कि मुझे पश्चिम दिशा में कोई बड़ा असंतुलन दिखाई देता है। मैं पूछ सकती हूँ कि क्या परिवार में किसी को इस क्षेत्र से संबंधित प्रवृत्तियाँ अनुभव हुई हैं और क्या वे समस्याएँ मरम्मत, निर्माण में बदलाव या उपयोग बदलने के बाद शुरू हुईं अथवा बढ़ीं।

क्या कोई टंकी जोड़ी गई? क्या क्षेत्र को काटा गया या बढ़ाया गया? क्या शयनकक्ष को भंडार कक्ष बना दिया गया? क्या मशीनरी लगाई गई? क्या शौचालय का स्थान बदला गया? क्या छत ऊँची की गई? क्या भारी और अनावश्यक सामान जमा हो गया?

घटनाओं का समयक्रम संकेत दे सकता है। लेकिन समयक्रम का मेल भी केवल एक सुराग है—चिकित्सकीय कारण का प्रमाण नहीं।

अपने घर में यह अभ्यास करें

पश्चिम दिशा का सही स्थान निर्धारित करें। अब तुरंत उसे अच्छा या बुरा कहने की इच्छा को रोकें। इसके बजाय पूछें:

इसका मुख्य तत्व क्या है? आकाश।

मैंने इस क्षेत्र में क्या जोड़ा है? क्या मैंने इस तत्व को बहुत अधिक बढ़ा दिया है? क्या मैंने इसे दबा दिया है? क्या मैंने इसके विपरीत गुण जोड़ दिए हैं? क्या मैंने इसे पृथ्वी तत्व के भार से दबा दिया है? क्या मैंने इसे अग्नि से अत्यधिक गर्म कर दिया है? क्या मैंने गति अवरुद्ध कर दी है? क्या मैंने आवश्यक खुला स्थान हटा दिया है? क्या जल बह रहा है या केवल जमा हो रहा है?

फिर वहाँ रहने वाले लोगों पर ध्यान दें। उस क्षेत्र में सबसे अधिक समय कौन बिताता है? वास्तव में संबंधित संकेत किस व्यक्ति में दिखाई दे रहे हैं? क्या उस व्यक्ति की ज्योतिषीय कुंडली भी उसी तात्त्विक संवेदनशीलता को दर्शाती है?

यही व्यक्तिगत स्तर है, जो सामान्य वास्तु सुझावों में अक्सर छूट जाता है।

स्वास्थ्य से जुड़ी व्यापक सीख

मेडिकल एस्ट्रो वास्तु का उद्देश्य दिशाओं के साथ लोगों को जोड़कर डराना नहीं है। इसका उद्देश्य संतुलन को समझना है।

शरीर को वायु चाहिए, लेकिन अनियंत्रित गति नहीं। उसे आकाश चाहिए, लेकिन अत्यधिक बिखराव नहीं। उसे अग्नि चाहिए, लेकिन जलन नहीं। उसे जल चाहिए, लेकिन अनियंत्रित प्रतिधारण नहीं। उसे पृथ्वी चाहिए, लेकिन ठहराव या जड़ता नहीं।

संपत्ति में भी इन्हीं पाँच तत्वों का अध्ययन किया जाता है।

इसलिए पश्चिम दिशा की व्याख्या केवल किसी एक वस्तु या याद किए गए किसी एक लक्षण के आधार पर नहीं करनी चाहिए। दिशा का तत्व, दोषों का संयोजन, सटीक सूक्ष्म क्षेत्र, व्यक्ति की ज्योतिषीय कुंडली और वास्तविक चिकित्सकीय स्थिति—इन सभी के बीच संबंध समझना आवश्यक है।

सुधार सबसे अंत में आता है

विश्लेषण के बाद ही सुधार शुरू होना चाहिए।

कभी सुधार व्यावहारिक होता है: अनावश्यक सामान हटाना, रिसाव ठीक करना, अत्यधिक गर्मी या ठंडक कम करना, वायु संचार बेहतर करना, अनुपयुक्त भंडारण या मशीनरी का स्थान बदलना अथवा कमरे के उपयोग को उचित करना।

कभी दिशा में कटाव, विस्तार, गड्ढा, ऊँचाई का अंतर या संरचनात्मक विशेषता के लिए अधिक विशेषज्ञ वास्तु मूल्यांकन आवश्यक होता है। और कभी संपत्ति में कोई सार्थक संबंध दिखाई ही नहीं देता। इस संभावना को भी खुला रखना चाहिए।

सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि वास्तु चिकित्सकीय देखभाल का विकल्प नहीं है। लगातार बने रहने वाले या गंभीर लक्षणों के लिए उपयुक्त योग्य स्वास्थ्य विशेषज्ञ से परामर्श लें। मेडिकल एस्ट्रो वास्तु को चिकित्सकीय निदान और उपचार के साथ एक पारंपरिक पर्यावरणीय दृष्टिकोण के रूप में अपनाया जा सकता है, उनके स्थान पर नहीं।

पश्चिम दिशा की चर्चा समाप्त करने से पहले स्वयं से पूछें:

"क्या यहाँ आकाश तत्व इतना संतुलित है कि वह अपनी स्वाभाविक भूमिका निभा सके?"

क्योंकि तत्व को समझ लेने पर दोष को समझना आसान हो जाता है। और दोष को समझ लेने पर शरीर, ज्योतिषीय कुंडली और संपत्ति के बीच संबंध अधिक अर्थपूर्ण हो जाता है।

मेडिकल वास्तु श्रृंखला में हमारी यात्रा जारी है! पश्चिम दिशा को समझने के बाद अब हम उत्तर-पश्चिम दिशा की ओर बढ़ेंगे—इसके तत्व, जो फिर से आकाश है, और वात, पित्त तथा कफ से इसके रोचक संबंध की चर्चा करेंगे। उत्तर-पश्चिम दिशा की ऊर्जाएँ हमारे स्वास्थ्य और जीवन की गुणवत्ता को कैसे प्रभावित कर सकती हैं?

इन संबंधों को जानिए अगले सोमवार आने वाले हमारे लेख में।

इस श्रृंखला से संबंधित किसी भी प्रश्न के लिए मुझे डीएम या व्हाट्सऐप करें: 8750075550।

मां दुर्गा के सिद्ध मंत्रों के जाप से मनोकामना होगी पूर्ण

पंडित योगेश
पौराणिक(ज्योतिषाचार्य)
परिवहन विशेष समाचार पत्र दैनिक

श्री मार्कण्डेय पुराण अंतर्गत देवी महात्यम तथा दुर्गा सप्तशती में देवी के सिद्ध मंत्रों का वर्णन मिलता है। नवरात्रि में इन सिद्ध मंत्रों के जाप से चारों पुरुषार्थ अर्थात धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष की प्राप्ति होती है तथा मां शीघ्र प्रसन्न होकर भक्तों की मनोकामना पूर्ण करती है।

मंत्र कुछ इस प्रकार से है।

सब प्रकारके कल्याणके लिये -

सर्वमङ्गलमङ्गल्ये शिवे सर्वार्थसाधिके ।

शरण्ये त्र्यम्बके गौरि नारायणि नमोऽस्तु ते ॥

शक्ति-प्राप्तिके लिये -

सृष्टिस्थितिविनाशानां शक्तिभूते सनातनि ।

गुणाश्रये गुणमये नारायणि नमोऽस्तु ते ॥

प्रसन्नताकी प्राप्तिके लिये -

प्रणतानां प्रसीवोद त्वं देवि विश्वार्तिहारिणि ।

त्रैलोक्यविस्वानामीड्ये लोकानां वरदा भव ॥

रक्षा पानेके लिये -

शूलेन पाहि नो देवि पाहि खड्गेन चाम्बिके।

घण्टास्वनेन नः पाहि चापज्यानिःस्वनेन च ॥

स्वप्नमें सिद्धि-असिद्धि जाननेके लिये -

दुर्गे देवि नमस्तुभ्यं सर्वकामार्थसाधिके ।

मम सिद्धिमसिद्धिं वा स्वप्ने सर्वं प्रदर्शय ॥

पापनाश तथा भक्तिकी प्राप्तिके लिये -

नतेभ्यः सर्वदा भक्त्या चण्डिके दुरितापहे।

रूपं देहि जयं देहि यशो वीसीहि द्विषो जहि ॥

सुलक्षणा पत्नीकी प्राप्तिके लिये -

पत्नीं मनोरमां देहि मनोवृत्तानुसारिणीम्।

तारिणीं दुर्गसंसारसागरस्य कुलोद्भवाम् ॥

रोग-नाशके लिये -

रोगानशेषानपहंसि तुष्टा रुष्टा तु कामान्सकलानभीष्टान्।

त्वामाश्रितानां न विपन्नराणां त्वामाश्रिता ह्याश्रयतां प्रयान्ति ॥

दारिद्र्यदुःखादिनाशके लिये -

दुर्गे स्मृता हरसि भीतिमशेषजन्तोः

स्वस्थैः स्मृता मतिमतीव शुभां ददासि ।

दारिद्र्यदुःखभयहारिणि का त्वदन्या

सर्वोपकारकरणाय सदाऽऽर्द्रचित्ता ॥

आरोग्य और सौभाग्यकी प्राप्तिके लिये -

देहि सौभाग्यमारोग्यं देहि मे परमं सुखम्।

रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ॥

विपत्तिनाश और शुभकी प्राप्तिके लिये -

करोतु सा नः शुभहेतुरीश्वरी शुभानि भद्राण्यभिहन्तु चापदः ।

भय-नाशके लिये -

सर्वस्वरूपे सर्वेशे सर्वशक्तिसमन्विते ।

भयेभ्यस्त्राहि नो देवि दुर्गे देवि नमोऽस्तु ते ॥

धन और रिश्तों का दैनिक अंक ज्योतिष भविष्यफल

जानिए दिन की ऊर्जा • संभालिए धन • मजबूत बनाइए रिश्ते

12 अक्टूबर 2026 | दिन का अंक: 5 — बदलाव, अनुकूलन, संवाद, गति और अवसर

मूलांक 1

धन व करियर: दिन का अंक 5 आपकी नेतृत्व ऊर्जा में गति और बदलाव लाता है। नया अवसर अचानक सामने आ सकता है; पहल करें, लेकिन योजना में आवश्यक लचीलापन रखें।
रिश्ते: आप चीजें अपने तरीके से चाह सकते हैं, जबकि आज स्वतंत्रता और विविधता की ऊर्जा है। सामने वाले को थोड़ा स्पेस दें और बातचीत को नियंत्रित करने के बजाय सहज रखें।
सावधानी: अचानक आर्थिक निर्णय, अधीरता और बदलाव पर तुरंत प्रतिक्रिया देने से बचें।
दिन बेहतर बनाएं: एक सोच-समझकर नया कदम लें और बेहतर विकल्प के लिए खुले रहें।

मूलांक 2

धन व करियर: दिन 5 की तेज गति आपकी संवेदनशील प्रकृति को अस्थिर कर सकती है। साझेदारी तभी बेहतर चलेगी जब अपेक्षाएं, भुगतान और जिम्मेदारियां स्पष्ट हों।
रिश्ते: आज अस्पष्ट संकेत आपको अधिक प्रभावित कर सकते हैं। अनुमान लगाने के बजाय सीधे पूछें और हर बदलाव पर संदेह न करें।
सावधानी: भावनात्मक खर्च, अनिर्णय और देर से मिले उत्तर का अधिक अर्थ निकालने से बचें।
दिन बेहतर बनाएं: लचीले रहें, लेकिन धन और भावना से जुड़ी एक स्पष्ट सीमा बनाए रखें।

मूलांक 3

धन व करियर: संवाद, रचनात्मकता और दिन 5 की बहुमुखी ऊर्जा मार्केटिंग, नेटवर्किंग, प्रस्तुति और नए संपर्कों के लिए मजबूत संयोजन बनाती है। ध्यान केंद्रित रखें ताकि विचार परिणाम बनें।
रिश्ते: मस्ती और बातचीत बढ़ेगी। हल्की ऊर्जा का आनंद लें, लेकिन जरूरी गंभीर विषय को मजाक में न टालें।
सावधानी: बिखरे प्रयास, बढ़ा-चढ़ाकर वादा और अनावश्यक सामाजिक खर्च से बचें।
दिन बेहतर बनाएं: सबसे अच्छे विचार को चुनें, स्पष्ट कहें और उसे पूरा करें।

मूलांक 4

धन व करियर: दिन 5 आपकी व्यवस्थित प्रकृति में बदलाव ला सकता है, लेकिन यही बदलाव बेहतर तरीका भी दिखा सकता है। तथ्य लाभ दिखाएं तो योजना में संशोधन करने को तैयार रहें।
रिश्ते: रूटीन में थोड़ी ताजगी संबंधों को अच्छा कर सकती है। छोटी योजना बदलने को नियंत्रण खोना न समझें।
सावधानी: कठोरता, देरी पर चिड़चिड़ापन और उपयोगी बदलाव से इनकार करने से बचें।
दिन बेहतर बनाएं: मजबूत आधार रखें, लेकिन एक पुराना तरीका बदलें।

मूलांक 5

धन व करियर: आपके मूलांक 5 और दिन के अंक 5 की ऊर्जा एक-दूसरे को बहुत मजबूत करती है। गति, संवाद, नेटवर्किंग और अवसर बढ़ सकते हैं; धन लगाने से पहले हर सौदे की जांच जरूर करें।
रिश्ते: आकर्षण और उत्साह अधिक रहेगा, लेकिन निरंतरता जरूरी है। सहजता का आनंद लें, पर अपने इरादों को लेकर भ्रम न पैदा करें।
सावधानी: अचानक खरीदारी, जोखिमपूर्ण सट्टा, जरूरत से ज्यादा काम लेना और हल्के वादों से बचें।
दिन बेहतर बनाएं: हर अवसर के पीछे भागने के बजाय एक महत्वपूर्ण अवसर पर ऊर्जा लगाएं।

मूलांक 6

धन व करियर: दिन 5 परिवार, क्लाइंट और धन से जुड़े मामलों में लचीलापन मांगता है। देखभाल के साथ व्यावहारिक सीमा रखें; नया तरीका पुराने विषय का समाधान दे सकता है।
रिश्ते: आप निकटता चाह सकते हैं, जबकि आज थोड़ा स्पेस भी जरूरी है। प्यार दें, लेकिन अधिकार या हर जिम्मेदारी अपने ऊपर लेने से बचें।
सावधानी: आराम के लिए खर्च, अनावश्यक हस्तक्षेप और दूसरों से अपनी योजना मानने की अपेक्षा से बचें।
दिन बेहतर बनाएं: अपनी प्राथमिकताएं सुरक्षित रखते हुए एक ताजगी भरा बदलाव करें।

मूलांक 7

धन व करियर: अचानक मिली जानकारी या नया विचार आपकी सोच बदल सकता है। कदम उठाने से पहले शोध करें, लेकिन इतना पीछे न हटें कि अवसर निकल जाए।
रिश्ते: आपको शांति चाहिए हो सकती है जबकि दूसरे संवाद चाहेंगे। गायब होने के बजाय अपनी स्पेस की जरूरत स्पष्ट बताएं।
सावधानी: अधिक विश्लेषण, संदेह और केवल दबाव से बचने के लिए अचानक निर्णय लेने से बचें।
दिन बेहतर बनाएं: ध्यान से देखें और एक सत्यापित समझ पर कार्य करें।

मूलांक 8

धन व करियर: दिन 5 व्यवसाय या धन से जुड़े तेज बदलाव ला सकता है। आपकी रणनीतिक क्षमता मदद करेगी, लेकिन हर स्थिति को नियंत्रित करने के बजाय जहां जरूरी हो बातचीत और बदलाव अपनाएं।
रिश्ते: कठोर या अधिकारपूर्ण रवैया आज विरोध पैदा कर सकता है। दबाव की तुलना में लचीलापन और हल्का व्यवहार अधिक असरदार रहेगा।
सावधानी: जोखिमपूर्ण विस्तार, शक्ति संघर्ष और जल्दबाजी में निर्णय से बचें।
दिन बेहतर बनाएं: लंबी अवधि का लक्ष्य सुरक्षित रखें, लेकिन रास्ते में लचीलापन रखें।

मूलांक 9

धन व करियर: दिन 5 किसी पुराने अध्याय के बाद आगे बढ़ने की ऊर्जा देता है। नया संपर्क, यात्रा या रणनीति संभावनाएं खोल सकती है, लेकिन भावना में धन या संसाधन न दें।
रिश्ते: पुराने भावनात्मक पैटर्न से आगे बढ़ने का अवसर है। नया अनुभव स्वीकार करें, पर पुरानी निराशा उसमें न लाएं।
सावधानी: आवेग में उदारता, भावनात्मक प्रतिक्रिया और अचानक संवाद बंद करने से बचें।
दिन बेहतर बनाएं: एक पुरानी आसक्ति छोड़ें और एक रचनात्मक नई दिशा अपनाएं।

कॉल / व्हाट्सऐप: 8750075550 | वेबसाइट: www.vediccodes.in | @vediccodes
Vediccodes - Your vibrations... our solutions

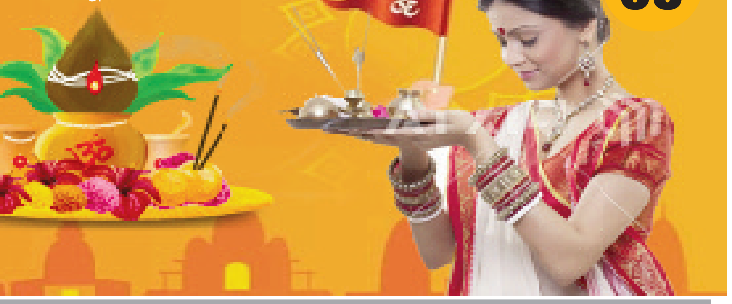

साप्ताहिकी अंकशास्त्र

मीन राशि : सम्पूर्ण वैदिक ज्योतिषीय विश्लेषण

डॉ. पूजाप्रसुन एन
गोल्ड मेडलिस्ट
Shivoham Shastr
shivohamshastr.com
07303855446

मीन राशि राशिचक्र की बारहवीं और अंतिम राशि है। इसका विस्तार 330° से 360° तक माना जाता है। मीन राशि के स्वामी देवगुरु बृहस्पति हैं और इसका तत्व जल तत्व है। मीन एक द्विस्वभाव राशि है। पारंपरिक वैदिक ज्योतिष में इसे स्त्री राशि, सम राशि, जल राशि, सौम्य प्रकृति वाली राशि तथा उभयोदय राशि माना जाता है। इसका प्रतीक दो मछलियां हैं, जो विपरीत दिशाओं में गतिशील दिखाई देती हैं। मीन राशि का संबंध कालपुरुष के पैरों से माना जाता है। यह राशिचक्र की अंतिम राशि होने के कारण पूर्णता, समापन, त्याग, करुणा, अंतर्मुखता, आध्यात्मिकता और मोक्ष जैसे विषयों से विशेष रूप से जुड़ी हुई है।

मीन राशि का तत्व: जल तत्व

मीन राशि का तत्व जल है। वैदिक ज्योतिष में जल तत्व का संबंध भावनाओं, संवेदनशीलता, ग्रहणशीलता, पोषण, करुणा, कल्पना, अंतर्ज्ञान और आंतरिक अनुभव से जोड़ा जाता है। जल जिस पात्र में रखा जाता है, उसका आकार ग्रहण कर सकता है। वह प्रवाहित भी हो सकता है, गहराई में शांत भी रह सकता है और आवश्यकता पड़ने पर अत्यंत शक्तिशाली रूप भी धारण कर सकता है। इसी प्रकार मीन राशि की जल प्रकृति को केवल भावुकता के रूप में नहीं समझना चाहिए। इसमें परिस्थितियों को महसूस करने, दूसरों के अनुभवों को समझने, सूक्ष्म भावनात्मक संकेतों को ग्रहण करने और जीवन के उन पहलुओं पर विचार करने की क्षमता का प्रतीकात्मक संकेत मिलता है जिन्हें केवल तर्क से समझना कठिन हो सकता है।

कर्क, वृश्चिक और मीन तीनों जल तत्व की राशियां हैं, लेकिन तीनों की अभिव्यक्ति अलग-अलग होती है। कर्क का जल पोषण, परिवार, सुरक्षा और मातृत्व से संबंधित है। वृश्चिक का जल गहराई, रहस्य, परिवर्तन और छिपी हुई शक्तियों से संबंधित है। मीन का जल व्यापक करुणा, कल्पना, संवेदना, आध्यात्मिक अनुभव और सीमाओं से परे जाने की प्रवृत्ति से जुड़ता है। इस प्रकार मीन का जल व्यक्तिगत भावनाओं से आगे बढ़कर व्यापक मानवीय और आध्यात्मिक संवेदना का प्रतीक बन सकता है।

मीन राशि की जल प्रकृति की सबसे बड़ी शक्ति यह हो सकती है कि व्यक्ति दूसरों के दुख को समझ सके, उनके अनुभवों के प्रति संवेदनशील रहे और केवल बाहरी व्यवहार के आधार पर किसी का मूल्यांकन न करे। लेकिन जल तत्व की यही ग्रहणशीलता असंतुलित होने पर अत्यधिक भावुकता, दूसरों की समस्याओं को अपने ऊपर ले लेना, सीमाएं निर्धारित करने में कठिनाई या कल्पना और वास्तविकता के बीच भ्रम उत्पन्न करने का प्रतीक भी बन सकती है। वास्तविक फल व्यक्ति की पूरी कुंडली पर निर्भर करता है।

मीन राशि: द्विस्वभाव राशि

मीन एक द्विस्वभाव राशि है। मिथुन, कन्या, धनु और मीन चार द्विस्वभाव राशियां हैं। इन्हें उभय राशि भी कहा जाता है। द्विस्वभाव का अर्थ यह नहीं है कि व्यक्ति अनिवार्य रूप से अस्थिर या निर्णय लेने में कमजोर होगा। इसका मूल अर्थ दो प्रकार की प्रवृत्तियों के बीच सामंजस्य स्थापित करने, परिस्थिति के अनुसार अपने दृष्टिकोण को बदलने और एक से अधिक पक्षों को समझने की क्षमता से संबंधित है।

चर राशियां आरंभ करने, आगे बढ़ने और परिवर्तन लाने की प्रवृत्ति रखती हैं। स्थिर राशियां किसी दिशा में दृढ़ता से टिके रहने और उसे बनाए रखने की प्रवृत्ति रखती हैं। द्विस्वभाव राशियां इन दोनों के बीच एक प्रकार का समन्वय प्रस्तुत करती हैं। इनमें परिवर्तन को समझने और आवश्यकता के अनुसार स्वयं को अनुकूल बनाने की क्षमता का प्रतीकात्मक संकेत मिलता है।

मीन राशि में द्विस्वभाव प्रकृति जल तत्व के साथ मिलकर काम करती है। इसलिए मीन की संवेदनशीलता किसी एक भावना या दृष्टिकोण तक सीमित नहीं रह सकती। व्यक्ति किसी परिस्थिति के अनेक पहलुओं को महसूस कर सकता है। वह एक ही घटना में दुख, करुणा, आशा, निराशा और परिवर्तन की संभावना को एक साथ देख सकता है। यही गुण कला, संगीत, साहित्य, परामर्श, सेवा और आध्यात्मिक चिंतन में उपयोगी हो सकता है, यदि कुंडली में अन्य ग्रह भी इसका समर्थन करें।

द्विस्वभाव प्रकृति की चुनौती यह है कि जब कई विकल्प, भावनाएं और संभावनाएं एक साथ उपस्थित हों तो निर्णय लेने में समय लग सकता है। व्यक्ति कभी-कभी दूसरों की आवश्यकताओं को इतना महत्व दे सकता है कि अपनी प्राथमिकताएं पीछे रह जाएं। इसलिए मीन राशि के लिए संवेदनशीलता के साथ विवेक, कल्पना के साथ व्यावहारिकता और करुणा के साथ स्पष्ट सीमाएं रखना महत्वपूर्ण जीवन-पाठ हो सकता है।

मीन राशि: उभयोदय राशि

मीन राशि को सामान्य पारंपरिक वर्गीकरण में उभयोदय राशि माना जाता है। शीर्षोदय राशियां सिर की ओर से उदित होने वाली राशियां कहलाती हैं, जबकि पृष्ठोदय राशियां पीछे के भाग की ओर से उदित होने वाली राशियां कहलाती हैं। मीन को इन दोनों से अलग उभयोदय कहा जाता है, अर्थात इसका उदय दोनों प्रकार से संबंधित माना गया है। यह वर्गीकरण बृहत्जातक, सारावली और पारंपरिक राशि-लक्षणों की व्याख्याओं में मिलता है।

उभयोदय शब्द को केवल आधुनिक व्यक्तित्व-विश्लेषण के आधार पर नहीं समझना चाहिए। यह सबसे पहले राशि के उदय-स्वरूप का पारंपरिक ज्योतिषीय वर्गीकरण है। फिर भी प्रतीकात्मक दृष्टि से मीन की दो मछलियों को दो दिशाओं में गतिशील देखना एक सुंदर अर्थ प्रस्तुत करता है। एक दिशा भौतिक संसार, अनुभव, संबंध और इच्छाओं की ओर हो सकती है, जबकि दूसरी दिशा आत्मचिंतन, वैराग्य, करुणा और आध्यात्मिक मुक्ति की ओर संकेत कर सकती है।

इस प्रतीक को मीन राशि की आंतरिक द्वैतता के रूप में समझा जा सकता है। व्यक्ति संसार में रहते हुए भी संसार से परे किसी अर्थ की खोज कर सकता है। वह भौतिक जीवन की जिम्मेदारियों को निभाते हुए भी आध्यात्मिक प्रश्नों में रुचि रख सकता है। वह संबंधों में गहरा जुड़ाव अनुभव कर सकता है, लेकिन कभी-कभी एकांत और आत्मचिंतन की आवश्यकता भी महसूस कर सकता है। यह प्रतीकात्मक व्याख्या है, कोई निश्चित फलादेश नहीं।

मीन राशि और दिग्बल

मीन राशि को तकनीकी रूप से दिग्बली राशि कहना उचित नहीं है, क्योंकि दिग्बल ग्रहों का बल है, राशियों का नहीं। वैदिक ज्योतिष में दिग्बल की परंपरागत व्यवस्था के अनुसार सूर्य और मंगल को दशम भाव में, चंद्रमा और शुक्र को चतुर्थ भाव में, बुध और बृहस्पति को लग्न में तथा शनि को सप्तम भाव में दिग्बल प्राप्त होता है। इसलिए मीन राशि के लिए "दिग्बली राशि" का प्रयोग करने के बजाय उसकी दिशात्मक संबद्धता और उदय-प्रकृति का उल्लेख करना अधिक शास्त्रसम्मत है।

पारंपरिक राशि-दिशा वर्गीकरण में मीन राशि को उत्तर दिशा से जोड़ा जाता है। हालांकि विभिन्न ग्रंथों और टीकाओं में राशि-लक्षणों की प्रस्तुति में कुछ भिन्नताएं मिल सकती हैं। इसलिए दिशा को राशि की पारंपरिक विशेषता के रूप में समझना चाहिए, न कि ग्रहों के दिग्बल के समान।

मीन राशि का स्वामी: देवगुरु बृहस्पति

मीन राशि के स्वामी देवगुरु बृहस्पति हैं। बृहस्पति का संबंध ज्ञान, धर्म, सद्बुद्धि, शिक्षा, गुरु, शास्त्र, नीति, विवेक, आस्था, उदारता और जीवन के व्यापक अर्थ को समझने से है। धनु राशि भी बृहस्पति के स्वामित्व में आती है, लेकिन दोनों राशियों में गुरु की अभिव्यक्ति अलग प्रकार से समझी जा सकती है।

धनु राशि में गुरु का ज्ञान दर्शन, सिद्धांत, धर्म, उच्चशिक्षा, यात्रा, सत्य की खोज और जीवन-दृष्टि के विस्तार से जुड़ सकता है। मीन राशि में वही गुरु करुणा, आंतरिक ज्ञान, विश्वास, आध्यात्मिक चिंतन, सेवा, समर्पण और जीवन के सूक्ष्म अर्थों की खोज के रूप में व्यक्त हो सकता है। यह अंतर दोनों राशियों के तत्व, प्रकृति और प्रतीकों के संयुक्त अध्ययन से समझा जा सकता है।

बृहस्पति केवल धार्मिक आस्था का कारक नहीं है। वह विवेक और सही निर्णय लेने की क्षमता का भी प्रतीक है। मीन राशि में गुरु का स्वामित्व इस बात की ओर संकेत कर सकता है कि संवेदनशीलता के साथ ज्ञान और करुणा के साथ विवेक आवश्यक हैं। केवल दूसरों के लिए दुख अनुभव करना पर्याप्त नहीं; यह भी समझना आवश्यक है कि उनकी सहायता किस प्रकार की जाए और किन परिस्थितियों में उचित सीमा बनाए रखना जरूरी है।

जब बृहस्पति मजबूत और शुभ रूप से समर्थित हो, तो मीन राशि के विषयों में ज्ञान, उदारता, नैतिक दृष्टि, आध्यात्मिक रुचि, परोपकार और व्यापक समझ की अभिव्यक्ति हो सकती है। लेकिन यदि गुरु पीड़ित हो या कुंडली में अन्य कठिन योग हों, तो आदर्शवाद की अधिकता, अव्यावहारिक विश्वास या दूसरों पर अत्यधिक भरोसा करने जैसी प्रवृत्तियां भी सामने आ सकती हैं। किसी ग्रह को केवल एक राशि के आधार पर शुभ या अशुभ घोषित करना उचित नहीं है।

मीन राशि का प्रतीक: दो मछलियां

मीन राशि का प्रतीक दो मछलियां हैं। पारंपरिक चित्रण में दोनों मछलियां विपरीत दिशाओं में गतिशील दिखाई देती हैं। यह प्रतीक मीन राशि की सबसे महत्वपूर्ण विशेषताओं में से एक है, क्योंकि इसमें गति, संवेदनशीलता, द्विस्वभाव और दो अलग दिशाओं के बीच संबंध का भाव दिखाई देता है।

जल में रहने वाली मछली अपने वातावरण के साथ निरंतर संबंध में रहती है। वह जल की गति, गहराई और परिस्थितियों के भीतर जीवन जीती है। इसी प्रकार मीन राशि का प्रतीकात्मक स्वभाव वातावरण और अनुभवों के प्रति संवेदनशीलता से जोड़ा जा सकता है। व्यक्ति बाहरी व्यवहार के पीछे छिपी भावनाओं को समझने का प्रयास कर सकता है और कभी-कभी उन बातों को भी महसूस कर सकता है जिन्हें दूसरे लोग स्पष्ट रूप से व्यक्त नहीं करते।

दो मछलियों का विपरीत दिशाओं में जाना भौतिक और आध्यात्मिक जीवन के बीच संतुलन का प्रतीक भी माना जा सकता है। एक ओर परिवार, धन, संबंध, कार्य और सांसारिक जिम्मेदारियां हैं; दूसरी ओर आत्मज्ञान, त्याग, सेवा, ध्यान और मुक्ति की खोज है। मीन का जीवन-पाठ इन दोनों में से किसी एक को पूरी तरह अस्वीकार करना नहीं, बल्कि परिस्थितियों के अनुसार उनके बीच उचित संतुलन स्थापित करना हो सकता है।

मीन राशि और कालपुरुष

कालपुरुष की प्राकृतिक राशि-व्यवस्था में मीन राशि का संबंध पैरों से माना जाता है। शरीर के पैर व्यक्ति को आगे बढ़ने, यात्रा करने, एक स्थान से दूसरे स्थान तक जाने और अपने भार को संभालने में सहायता करते हैं। राशिचक्र के अंतिम भाग में पैरों का यह संबंध एक प्रतीकात्मक पूर्णता भी प्रस्तुत करता है।

मेष से शुरू होने वाला कालपुरुष राशिचक्र शरीर के विभिन्न अंगों से गुजरते हुए मीन तक पहुंचता है। मीन पैरों का प्रतिनिधित्व करती है, जो शरीर को गति देने के साथ-साथ उसे धरती से संपर्क भी प्रदान करते हैं। प्रतीकात्मक रूप से इसे जीवन की लंबी यात्रा के अंतिम चरण, अनुभवों से सीखने, स्वीकार करने और आगे बढ़ने की क्षमता से जोड़ा जा सकता है।

ज्योतिषीय स्वास्थ्य-विचार में मीन लग्न या मीन राशि के संबंध में पैरों और उनसे जुड़े क्षेत्रों का पारंपरिक संकेत के रूप में अध्ययन किया जा सकता है। लेकिन यह चिकित्सा निदान नहीं है। किसी भी शारीरिक समस्या का निर्धारण चिकित्सकीय परीक्षण और योग्य स्वास्थ्य-विशेषज्ञ की सलाह से ही किया जाना चाहिए।

मीन राशि और द्वादश भाव

मीन राशिचक्र की बारहवीं राशि है और कालपुरुष की प्राकृतिक कुंडली में इसका सामंजस्य द्वादश भाव से माना जाता है। द्वादश भाव व्यय, एकांत, निद्रा, विदेश, आश्रम, अस्पताल, बंद स्थान, त्याग, परोपकार और मोक्ष जैसे विषयों से जुड़ा है। मीन राशि के जल तत्व और गुरु के स्वामित्व के साथ मिलकर यह संबंध जीवन के बाहरी अनुभवों से आगे बढ़कर आंतरिक संसार को समझने की दिशा प्रदान करता है।

लेकिन राशि और भाव में अंतर समझना आवश्यक है। मीन राशि अपने आप में द्वादश भाव नहीं है। किसी व्यक्ति की कुंडली में मीन जिस भाव में स्थित होगी, उस भाव के विषयों पर उसका प्रभाव देखा जा सकता है। इसी प्रकार वास्तविक द्वादश भाव का फल लग्न, भावस्थिति, द्वादशेश, ग्रहों की दृष्टि, युति और दशा से निर्धारित होता है।

द्वादश भाव को केवल हानि का भाव कहना अधूरा है। व्यय कभी अनावश्यक खर्च हो सकता है, लेकिन कभी दान, शिक्षा, यात्रा, उपचार, आध्यात्मिक साधना या किसी महत्वपूर्ण उद्देश्य पर किया गया उपयोगी निवेश भी हो सकता है। इसी प्रकार एकांत कभी अलगाव हो सकता है, लेकिन कभी अध्ययन, ध्यान, विश्राम और आत्मचिंतन के लिए आवश्यक अवसर भी बन सकता है।

मीन राशि का आध्यात्मिक संबंध इसी व्यापक दृष्टिकोण से समझा जा सकता है। जीवन में कुछ चीजें अर्जित करनी होती हैं, कुछ संरक्षित करनी होती हैं और कुछ समय आने पर छोड़नी भी होती हैं। मीन की उच्च अभिव्यक्ति इस अंतर को समझने की क्षमता का प्रतीक हो सकती है।

मीन राशि और मोक्ष

वैदिक ज्योतिष में मोक्ष जीवन के चार पुरुषार्थों में से एक है। धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष जीवन के चार व्यापक उद्देश्य माने जाते हैं। मीन राशि को प्राकृतिक बारहवें भाव के साथ उसके सामंजस्य के कारण मोक्ष, वैराग्य, समर्पण और आध्यात्मिक मुक्ति की प्रतीकात्मकता से जोड़ा जाता है।

मोक्ष का अर्थ केवल संसार छोड़ देना नहीं है। आध्यात्मिक दृष्टि से इसका संबंध अज्ञान, अहंकार, आसक्ति और आंतरिक बंधनों से मुक्त होने की खोज से भी है। मीन राशि की उच्च अभिव्यक्ति व्यक्ति को यह प्रश्न पूछने की ओर ले जा सकती है कि भौतिक उपलब्धियों के अतिरिक्त जीवन का गहरा अर्थ क्या है।

बृहस्पति का स्वामित्व इस खोज को ज्ञान, धर्म, विवेक और गुरु-मार्गदर्शन से जोड़ता है। जल तत्व इसे संवेदनशीलता और करुणा प्रदान करता है। द्विस्वभाव प्रकृति इसे अलग-अलग दृष्टिकोण समझने की क्षमता देती है। इन तीनों का संयुक्त प्रतीकात्मक अर्थ है कि व्यक्ति अनुभवों से सीखते हुए अपने जीवन की दिशा को अधिक व्यापक अर्थ दे सकता है।

मीन राशि की आध्यात्मिकता का उच्च रूप पलायन नहीं, बल्कि जागरूकता है। संसार की जिम्मेदारियों से भागना और संसार में रहते हुए आसक्ति तथा अहंकार को समझना दो अलग बातें हैं। मीन की परिपक्व अभिव्यक्ति करुणा के साथ विवेक, त्याग के साथ जिम्मेदारी और समर्पण के साथ आत्मसम्मान बनाए रखने की ओर संकेत कर सकती है।

मीन राशि और गुरु-शिष्य परंपरा

मीन के स्वामी बृहस्पति देवगुरु हैं। इसलिए गुरु, शिक्षा, शास्त्र, ज्ञान और आध्यात्मिक मार्गदर्शन इस राशि के महत्वपूर्ण प्रतीकात्मक विषय हैं। गुरु का कार्य केवल जानकारी देना नहीं है। वह शिष्य को ज्ञान का अर्थ समझने, सही और गलत में अंतर करने तथा अपने अनुभवों का विवेकपूर्ण उपयोग करने में सहायता करता है।

मीन राशि का गुरु-संबंध ऐसा ज्ञान दर्शा सकता है जो केवल बौद्धिक स्तर पर सीमित न रहे, बल्कि जीवन के व्यवहार, करुणा और नैतिक निर्णयों में भी दिखाई दे। किसी व्यक्ति को शास्त्रों का ज्ञान हो सकता है, लेकिन यदि वह ज्ञान उसके व्यवहार में विनम्रता, धैर्य और विवेक उत्पन्न नहीं करता, तो उसका व्यावहारिक उद्देश्य अधूरा रह जाता है।

इसलिए मीन की उच्च अभिव्यक्ति में ज्ञान और अनुभव के बीच संबंध महत्वपूर्ण है। ज्ञान व्यक्ति को समझ देता है, अनुभव उसे गहराई देता है और विवेक उसे सही दिशा में उपयोग करना सिखाता है।

मीन राशि और कल्पना

मीन राशि का जल तत्व और द्विस्वभाव प्रकृति कल्पना, संगीत, कविता, चित्रकला, साहित्य, नाटक और अन्य रचनात्मक क्षेत्रों के साथ प्रतीकात्मक सामंजस्य रख सकते हैं। कल्पना व्यक्ति को ऐसी संभावनाएं देखने में सहायता करती है जो अभी वास्तविक रूप में उपस्थित नहीं हैं। कला में यह क्षमता नए रूप, भावनाएं और अर्थ उत्पन्न कर सकती है।

लेकिन कल्पना और वास्तविकता के बीच संतुलन आवश्यक है। कल्पना प्रेरणा का स्रोत हो सकती है, परंतु किसी निर्णय को वास्तविक तथ्यों, अनुभव और विवेक से भी जांचना चाहिए। मीन राशि की चुनौती यह हो सकती है कि व्यक्ति किसी व्यक्ति, परिस्थिति या भविष्य की संभावना को आदर्श रूप में देखे और वास्तविक संकेतों को अनदेखा कर दे।

जब कल्पना को अनुशासन और व्यवहारिक समझ का साथ मिलता है, तब वह रचनात्मक शक्ति बन सकती है। जब वह वास्तविकता से पूरी तरह अलग हो जाती है, तब भ्रम या निराशा का कारण बन सकती है। यह सामान्य प्रतीकात्मक व्याख्या है, प्रत्येक मीन जातक के लिए निश्चित परिणाम नहीं।

मीन राशि और करुणा

मीन राशि की एक प्रमुख सकारात्मक विशेषता करुणा है। करुणा का अर्थ केवल किसी के दुख को देखकर दुखी होना नहीं है। करुणा का अर्थ है दूसरे व्यक्ति की परिस्थिति को समझना और जहां संभव हो, विवेकपूर्वक सहायता करना।

मीन की जल प्रकृति दूसरों के अनुभवों के प्रति ग्रहणशीलता का प्रतीक है। बृहस्पति का स्वामित्व इस संवेदनशीलता में ज्ञान, नैतिकता और उदारता का पक्ष जोड़ता है। इसलिए मीन की उच्च अभिव्यक्ति ऐसी हो सकती है जिसमें व्यक्ति दूसरों को केवल उनकी गलतियों से नहीं आंकता, बल्कि उनके अनुभवों, परिस्थितियों और सुधार की संभावना को भी समझने का प्रयास करता है।

करुणा की एक सीमा भी है। यदि व्यक्ति हर समस्या की जिम्मेदारी स्वयं लेने लगे, तो वह स्वयं थक सकता है और दूसरों की वास्तविक जिम्मेदारी भी अपने ऊपर ले सकता है। इसलिए मीन राशि के लिए यह सीख महत्वपूर्ण है कि दूसरों की सहायता करना और दूसरों के जीवन को पूरी तरह अपने नियंत्रण में लेना अलग बातें हैं।

मीन राशि और धन

मीन राशि का स्वामी बृहस्पति धन, विस्तार, ज्ञान और उदारता के प्रतीकात्मक विषयों से जुड़ा है। इसलिए मीन राशि के संदर्भ में धन का संबंध शिक्षा, ज्ञान, सेवा, रचनात्मक कार्य, परामर्श और ऐसे क्षेत्रों से जोड़ा जा सकता है जहां संवेदनशीलता या कल्पना उपयोगी हो।

लेकिन केवल मीन राशि देखकर किसी व्यक्ति की आर्थिक स्थिति का निर्णय नहीं किया जा सकता। धन के लिए द्वितीय भाव, एकादश भाव, उनके स्वामी, गुरु, शुक्र, धनयोग, ग्रहों की स्थिति, दशा और गोचर का अध्ययन आवश्यक है। मीन राशि में स्थित कोई ग्रह भी अपने भावेशत्व और अन्य संबंधों के अनुसार अलग-अलग परिणाम दे सकता है।

मीन की सकारात्मक आर्थिक अभिव्यक्ति में उदारता और दूरदृष्टि के बीच संतुलन महत्वपूर्ण है। किसी उद्देश्य के लिए खर्च करना उपयोगी हो सकता है, लेकिन बिना योजना के खर्च करना आर्थिक कठिनाई उत्पन्न कर सकता है। इसी प्रकार किसी की सहायता करना अच्छी बात हो सकती है, परंतु अपनी आर्थिक जिम्मेदारियों की उपेक्षा करना आवश्यक नहीं है।

मीन राशि और करियर

मीन राशि का संबंध उन क्षेत्रों से प्रतीकात्मक रूप से जोड़ा जा सकता है जहां कल्पना, संवेदनशीलता, ज्ञान, सेवा, मार्गदर्शन या आध्यात्मिक चिंतन उपयोगी हों। उदाहरण के लिए संगीत, साहित्य, फिल्म, चित्रकला, रचनात्मक लेखन, शिक्षा, परामर्श, सामाजिक सेवा, आध्यात्मिक अध्ययन, शोध, अस्पतालों या सेवा संस्थानों में कार्य और अन्य रचनात्मक या सहायता-प्रधान क्षेत्र।

बृहस्पति के कारण शिक्षा, अध्यापन, दर्शन, धर्म, नीति, मार्गदर्शन और शास्त्रीय अध्ययन के क्षेत्र भी महत्वपूर्ण हो सकते हैं। जल तत्व की प्रतीकात्मकता कला, भावनात्मक समझ और मानवीय अनुभवों से संबंधित कार्यों में दिखाई दे सकती है। लेकिन इन क्षेत्रों को केवल मीन राशि के आधार पर निश्चित करियर नहीं मानना चाहिए।

वास्तविक करियर का निर्णय दशम भाव, दशमेश, लग्न, लग्नेश, सूर्य, शनि, अमात्यकारक, ग्रहों की दृष्टि, दशा और नवांश आदि के अध्ययन से किया जाना चाहिए। मीन राशि केवल व्यापक व्याख्या का एक हिस्सा है।

मीन राशि और संबंध

मीन राशि की जल प्रकृति संबंधों में भावनात्मक निकटता, सहानुभूति, क्षमा और दूसरे व्यक्ति की परिस्थिति समझने की इच्छा का प्रतीक हो सकती है। व्यक्ति संबंधों में केवल बाहरी व्यवहार नहीं, बल्कि भावनात्मक अर्थ और आंतरिक जुड़ाव को भी महत्व दे सकता है।

ऐसी संवेदनशीलता संबंधों में गर्मजोशी और सहारा प्रदान कर सकती है। लेकिन अत्यधिक आदर्शवाद कभी-कभी व्यक्ति को दूसरे की कमियों को लगातार अनदेखा करने या ऐसे संबंध में बने रहने के लिए प्रेरित कर सकता है जिसमें स्पष्ट सीमाओं की आवश्यकता हो। इसलिए मीन की परिपक्व अभिव्यक्ति में प्रेम के साथ आत्मसम्मान और करुणा के साथ विवेक भी आवश्यक है।

मीन राशि और विवाह

विवाह का निर्णय केवल मीन राशि के आधार पर नहीं किया जा सकता। इसके लिए सप्तम भाव, सप्तमेश, शुक्र, गुरु, नवांश, उपपद, दाराकारक तथा संबंधित दशाओं का अध्ययन आवश्यक है। स्त्री और पुरुष की कुंडली में पारंपरिक कारक-व्याख्याओं के साथ पूरी कुंडली का समन्वित अध्ययन किया जाना चाहिए।

मीन का प्रभाव संबंधों में भावनात्मक समझ, क्षमा, सहानुभूति और आदर्शवादी प्रेम की प्रवृत्ति का प्रतीक हो सकता है। लेकिन संबंधों की सफलता केवल भावनाओं पर निर्भर नहीं करती। स्पष्ट संवाद, पारस्परिक सम्मान, जिम्मेदारी, विश्वास और व्यावहारिक समझ भी आवश्यक हैं।

यदि कुंडली में मीन या बृहस्पति प्रभावित हों, तो उनके फल का निर्णय ग्रहों की वास्तविक स्थिति और संपूर्ण योगों के आधार पर करना चाहिए। किसी एक राशि या ग्रह की स्थिति से विवाह के सुख-दुख का अंतिम निर्णय निकालना उचित नहीं है।

मीन राशि और स्त्री-पुरुष वर्गीकरण

पारंपरिक राशि-वर्गीकरण में मीन एक सम राशि है, इसलिए इसे स्त्री राशि माना जाता है। यह ज्योतिषीय वर्गीकरण है, आधुनिक अर्थ में किसी व्यक्ति के जैविक लिंग, पहचान या व्यक्तित्व का निर्णय नहीं।

स्त्री और पुरुष राशियों का वर्गीकरण अनेक पारंपरिक गणनाओं और ज्योतिषीय नियमों में उपयोग किया जाता है। इसे किसी व्यक्ति के स्वभाव, क्षमता या सामाजिक भूमिका का निश्चित प्रमाण नहीं समझना चाहिए। मीन राशि की वास्तविक व्याख्या में तत्व, स्वामी, भावस्थिति, नक्षत्र, ग्रहों की दृष्टि और अन्य कुंडलीगत कारकों को साथ देखना आवश्यक है।

मीन राशि और शुक्र का उच्च होना

मीन राशि का एक अत्यंत महत्वपूर्ण शास्त्रीय ग्रह-संबंध यह है कि शुक्र यहां उच्च का होता है। पारंपरिक ग्रह-उच्चता के अनुसार शुक्र की परम उच्चता 27° मीन पर मानी जाती है।

शुक्र प्रेम, सौंदर्य, कला, संबंध, सुख, सामंजस्य और आकर्षण का कारक है। मीन की जल प्रकृति और गुरु का स्वामित्व शुक्र की अभिव्यक्ति को करुणा, सौंदर्यबोध, आदर्शवाद और भावनात्मक गहराई की प्रतीकात्मक दिशा दे सकते हैं। उच्च शुक्र का अर्थ केवल सांसारिक प्रेम या विलासिता नहीं है। इसे प्रेम में उदारता, कला में संवेदनशीलता और संबंधों में सौंदर्य तथा सामंजस्य की क्षमता के रूप में भी समझा जा सकता है।

लेकिन उच्च ग्रह होने का अर्थ यह नहीं कि वह हर कुंडली में बिना शर्त शुभ परिणाम देगा। शुक्र किस भाव में स्थित है, वह किस लग्न का स्वामी है, किन ग्रहों से युत या दृष्ट है, नवांश में उसकी स्थिति क्या है और कौन-सी दशा चल रही है, इन सबका विचार आवश्यक है। उच्चता ग्रह की राशि-गत गरिमा बताती है, संपूर्ण फलादेश का अकेला आधार नहीं है।

मीन राशि और बुध का नीच होना

मीन राशि में बुध नीच का माना जाता है। पारंपरिक ग्रह-नीचता के अनुसार बुध की परम नीचता 15° मीन पर मानी जाती है।

बुध बुद्धि, तर्क, विश्लेषण, गणना, लेखन, संचार, व्यापार और सूचनाओं के आदान-प्रदान का कारक है। मीन की जल प्रकृति भावनाओं, कल्पना और व्यापक अनुभवों पर जोर देती है। प्रतीकात्मक स्तर पर बुध की तर्कप्रधान प्रकृति और मीन की ग्रहणशील, कल्पनात्मक प्रकृति के बीच अंतर देखा जा सकता है।

इसका अर्थ यह नहीं है कि मीन में बुध वाला व्यक्ति बुद्धिहीन होगा या व्यापार और लेखन में सफल नहीं हो सकता। बुध की वास्तविक क्षमता उसके भाव, अंश, दृष्टि, युति, नवांश, षड्बल और दशा के आधार पर समझी जाती है। नीचभंग जैसी स्थितियां भी फल को बदल सकती हैं। इसलिए नीचता को अकेले देखकर किसी व्यक्ति की बुद्धि या सफलता के बारे में निश्चित निष्कर्ष निकालना शास्त्रीय दृष्टि से उचित नहीं है।

मीन राशि में सूर्य

सूर्य आत्मविश्वास, आत्मबोध, अधिकार, प्रतिष्ठा, नेतृत्व और जीवनशक्ति का कारक है। मीन में सूर्य होने पर व्यक्ति की पहचान शिक्षा, सेवा, रचनात्मकता, आध्यात्मिकता या किसी व्यापक आदर्श के साथ जुड़ सकती है, यदि पूरी कुंडली इसका समर्थन करे।

सूर्य की व्यावहारिक अभिव्यक्ति इस बात पर निर्भर करेगी कि वह किस भाव में है, किस लग्न का स्वामी है, किन ग्रहों से प्रभावित है और किस दशा में फल दे रहा है। केवल मीन राशि में सूर्य होने से व्यक्ति का नेतृत्व, प्रतिष्ठा या आत्मविश्वास निश्चित नहीं किया जा सकता।

मीन राशि में चंद्रमा

चंद्रमा मन, भावनाओं, स्मृति, ग्रहणशीलता और मानसिक प्रतिक्रियाओं का कारक है। मीन में चंद्रमा होने पर संवेदनशीलता, कल्पना, करुणा और वातावरण से भावनात्मक रूप से प्रभावित होने की प्रवृत्ति प्रतीकात्मक रूप से देखी जा सकती है।

ऐसा संयोजन कला, संगीत, साहित्य, ध्यान या दूसरों के अनुभवों को समझने की क्षमता के साथ सामंजस्य रख सकता है। लेकिन अत्यधिक संवेदनशीलता की स्थिति में व्यक्ति को अपनी भावनाओं और दूसरों की भावनाओं के बीच अंतर समझने की आवश्यकता भी हो सकती है। वास्तविक परिणाम चंद्रमा की अवस्था, नक्षत्र, दृष्टि, युति, भाव और दशा पर निर्भर करेगा।

मीन राशि में मंगल

मंगल साहस, ऊर्जा, पराक्रम, संघर्ष, तकनीकी क्षमता और कार्रवाई का कारक है। मीन में मंगल होने पर ऊर्जा का उपयोग रचनात्मक कार्य, सेवा, आदर्श या किसी भावनात्मक रूप से महत्वपूर्ण उद्देश्य की दिशा में हो सकता है।

मंगल की अग्नि और मीन के जल के बीच प्रतीकात्मक संबंध कभी-कभी ऐसी ऊर्जा प्रस्तुत कर सकता है जो सीधी प्रतिस्पर्धा के बजाय प्रेरणा, सेवा या किसी उद्देश्य के लिए संघर्ष में व्यक्त हो। लेकिन यदि ग्रह प्रभावित हो तो कार्यवाही में अस्पष्टता, असंगत दिशा या भावनात्मक आवेग भी संभव हैं। ये संभावनाएं हैं, निश्चित परिणाम नहीं।

मीन राशि में बृहस्पति

बृहस्पति मीन राशि का स्वामी है। इसलिए मीन में स्थित बृहस्पति अपनी राशि में माना जाता है। यह स्थिति राशि-गत गरिमा के दृष्टिकोण से महत्वपूर्ण है।

बृहस्पति का ज्ञान, धर्म, शिक्षा, गुरु, सद्बुद्धि और व्यापक दृष्टिकोण मीन की करुणा, आध्यात्मिकता और ग्रहणशीलता के साथ जुड़ सकता है। यदि अन्य कुंडलीगत स्थितियां सहयोग करें, तो यह ज्ञान, मार्गदर्शन, उदारता, आध्यात्मिक रुचि और व्यापक समझ की अभिव्यक्ति कर सकता है।

फिर भी अपनी राशि में स्थित बृहस्पति का वास्तविक फल भावेशत्व, भावस्थिति, अंश, दृष्टि, युति, नवांश, षड्बल और दशा से निर्धारित होगा। किसी ग्रह का अपनी राशि में होना महत्वपूर्ण है, लेकिन वह अकेले पूरी कुंडली का निर्णय नहीं करता।

मीन राशि में शुक्र

मीन में शुक्र उच्च का होता है। इस कारण मीन में शुक्र का स्थान शास्त्रीय दृष्टि से विशेष महत्व रखता है।

शुक्र की कला, सौंदर्य, प्रेम और सामंजस्य की प्रकृति मीन की कल्पना और संवेदनशीलता के साथ मिलकर रचनात्मक अभिव्यक्ति, भावनात्मक उदारता और आदर्शवादी संबंधों का प्रतीक बन सकती है। लेकिन आदर्शवाद के साथ वास्तविकता की समझ भी आवश्यक है।

शुक्र की उच्चता को विवाह, धन या सुख की गारंटी नहीं माना जा सकता। भावेशत्व, भाव, दृष्टि, युति, नवांश और दशा के अनुसार परिणाम अलग हो सकते हैं।

मीन राशि में शनि

शनि अनुशासन, समय, कर्म, जिम्मेदारी, धैर्य और सीमाओं का कारक है। मीन में शनि होने पर व्यावहारिक जिम्मेदारी और भावनात्मक संवेदनशीलता के बीच संतुलन का विषय महत्वपूर्ण हो सकता है।

व्यक्ति को अपने आदर्शों को वास्तविक कार्यों में बदलना सीखना पड़ सकता है। सेवा, संस्थागत कार्य, दीर्घकालीन जिम्मेदारियां और कठिन परिस्थितियों में धैर्य जैसे विषय इसकी संभावित अभिव्यक्तियां हो सकती हैं। लेकिन वास्तविक फल शनि के भावेशत्व, स्थिति, दृष्टि, युति और दशा पर निर्भर करता है।

मीन राशि में राहु

राहु महत्वाकांक्षा, असामान्य अनुभव, तीव्र इच्छा, सीमाओं को पार करने और अपरंपरागत मार्गों की ओर आकर्षण का प्रतीक है। मीन में राहु होने पर कल्पना, विदेशी या अपरिचित विषयों, आध्यात्मिक अनुभवों, रचनात्मकता या ऐसी मान्यताओं की ओर आकर्षण देखा जा सकता है जो सामान्य अनुभव से आगे जाती हों।

लेकिन राहु की प्रकृति अतिशयता और भ्रम की संभावना भी रखती है। इसलिए किसी आध्यात्मिक अनुभव, आदर्श या विश्वास को विवेक के साथ जांचना उपयोगी हो सकता है। वास्तविक फल पूरी कुंडली और दशा पर निर्भर करेगा।

मीन राशि में केतु

केतु वैराग्य, अलगाव, अंतर्दृष्टि और किसी विषय की बाहरी परतों से आगे जाकर उसके सार को खोजने की प्रतीकात्मकता रखता है। मीन में केतु होने पर आध्यात्मिक चिंतन, एकांत, ध्यान, त्याग या भौतिक उपलब्धियों के पीछे छिपे अर्थ को समझने की प्रवृत्ति दिखाई दे सकती है।

लेकिन वैराग्य का अर्थ हर जिम्मेदारी से दूर हो जाना नहीं है। परिपक्व आध्यात्मिकता में जिम्मेदारी निभाते हुए आसक्ति को समझना भी शामिल है। वास्तविक फल केतु की स्थिति, नक्षत्र, दृष्टि, युति, भावेशत्व और दशा के अनुसार बदलता है।

मीन राशि के नक्षत्र

मीन राशि में तीन नक्षत्रों के भाग आते हैं। पूर्वाभाद्रपद का चतुर्थ चरण मीन में आता है। उत्तराभाद्रपद के चारों चरण मीन में आते हैं। रेवती के चारों चरण भी मीन राशि में आते हैं। इस प्रकार मीन राशि में कुल नौ नक्षत्रपाद आते हैं।

पूर्वाभाद्रपद और मीन राशि

पूर्वाभाद्रपद का चतुर्थ चरण मीन राशि में आता है। इस नक्षत्र का संबंध आदर्श, तप, गहरी अंतर्दृष्टि, परिवर्तन और जीवन के गंभीर प्रश्नों से जोड़ा जाता है। मीन में इसका चरण जल तत्व, गुरु के स्वामित्व और द्विस्वभाव प्रकृति के साथ जुड़कर आदर्शों को भावनात्मक और आध्यात्मिक अर्थ दे सकता है।

उत्तराभाद्रपद और मीन राशि

उत्तराभाद्रपद के चारों चरण मीन राशि में आते हैं। पारंपरिक नक्षत्र-विचार में इसका संबंध गहराई, स्थिरता, धैर्य, अंतर्मुखता और आंतरिक परिपक्वता से जोड़ा जाता है। मीन की संवेदनशीलता के साथ यह नक्षत्र भावनाओं को गहराई से समझने और कठिन अनुभवों के बीच धैर्य रखने की प्रतीकात्मकता प्रस्तुत कर सकता है।

रेवती और मीन राशि

रेवती मीन राशि का अंतिम नक्षत्र है। इसके चारों चरण मीन में आते हैं। रेवती के देवता पूषा माने जाते हैं, जिनका संबंध पोषण, संरक्षण, मार्गदर्शन और यात्रियों की सहायता से जोड़ा जाता है। रेवती का प्रतीकात्मक स्वभाव यात्रा के अंतिम चरण, संरक्षण, पोषण और आगे के मार्ग की ओर संकेत कर सकता है।

राशिचक्र की अंतिम राशि में स्थित रेवती को प्रतीकात्मक रूप से समापन और नई शुरुआत के बीच का सेतु भी समझा जा सकता है। कोई यात्रा समाप्त होती है, लेकिन उससे प्राप्त अनुभव आगे की यात्रा के लिए ज्ञान बन सकता है।

मीन राशि और अन्य जल राशियां

कर्क, वृश्चिक और मीन तीनों जल तत्व की राशियां हैं। कर्क सुरक्षा, परिवार और भावनात्मक पोषण की ओर जाता है। वृश्चिक गहराई, परिवर्तन, रहस्य और आंतरिक शक्ति से जुड़ता है। मीन करुणा, व्यापक संवेदना, कल्पना और आध्यात्मिक अर्थ की खोज से संबंधित है।

तीनों राशियों में भावनात्मक ग्रहणशीलता की प्रतीकात्मकता है, लेकिन उसकी दिशा अलग है। कर्क अपने निकट संबंधों की सुरक्षा चाहता है। वृश्चिक भावनाओं की गहराई और छिपे हुए सत्य को समझना चाहता है। मीन व्यक्तिगत अनुभवों से आगे बढ़कर व्यापक करुणा और जीवन के गहरे अर्थ को समझने की ओर जा सकता है।

मीन राशि और धनु

धनु और मीन दोनों बृहस्पति के स्वामित्व वाली राशियां हैं। धनु अग्नि तत्व की द्विस्वभाव राशि है, जबकि मीन जल तत्व की द्विस्वभाव राशि है। इसलिए दोनों में ज्ञान, दर्शन और व्यापक दृष्टि की समानता हो सकती है, लेकिन उनकी अभिव्यक्ति अलग होती है।

धनु ज्ञान को सिद्धांत, दर्शन, धर्म, शिक्षा और सत्य की खोज के माध्यम से व्यक्त कर सकता है। मीन ज्ञान को करुणा, अनुभव, संवेदनशीलता, समर्पण और आध्यात्मिक चिंतन के माध्यम से व्यक्त कर सकता है। दोनों का उच्च उद्देश्य विवेक और व्यापक समझ हो सकता है, लेकिन धनु का अग्नि तत्व सक्रिय खोज पर जोर देता है, जबकि मीन का जल तत्व अनुभव और आंतरिक ग्रहणशीलता को अधिक महत्व दे सकता है।

मीन राशि और कन्या अक्ष

कन्या और मीन एक-दूसरे के सामने स्थित राशियां हैं। कन्या विश्लेषण, विवरण, व्यवस्था, व्यावहारिक सेवा और सुधार से जुड़ती है। मीन व्यापक अनुभव, करुणा, कल्पना और समर्पण की प्रतीकात्मकता रखती है।

कन्या पूछ सकती है: "इस समस्या को ठीक करने के लिए क्या करना चाहिए?"

मीन पूछ सकती है: "इस अनुभव के पीछे कौन-सी मानवीय भावना या व्यापक सच्चाई है?"

दोनों के बीच संतुलन तब बनता है जब करुणा को व्यावहारिक व्यवस्था मिलती है और विश्लेषण को मानवीय संवेदनशीलता मिलती है। केवल भावना से समस्या हल करना कठिन हो सकता है, और केवल विश्लेषण से मानवीय अनुभव का पूरा अर्थ समझना भी कठिन हो सकता है।

मीन राशि की सकारात्मक अभिव्यक्ति

मीन की सकारात्मक अभिव्यक्ति में करुणा, संवेदनशीलता, कल्पना, उदारता, आध्यात्मिक रुचि, कला, संगीत, क्षमा, व्यापक दृष्टिकोण, अंतर्दृष्टि और दूसरों के अनुभवों को समझने की क्षमता शामिल हो सकती है।

ऐसा व्यक्ति किसी परिस्थिति को केवल लाभ-हानि के आधार पर नहीं देखता, बल्कि उसमें उपस्थित मानवीय अनुभव और भावनात्मक वास्तविकता को भी समझने का प्रयास कर सकता है। वह कला, सेवा, शिक्षा या आध्यात्मिक चिंतन के माध्यम से अपने अनुभवों को अर्थ दे सकता है।

जब बृहस्पति का विवेक और जल तत्व की संवेदनशीलता संतुलित रूप से कार्य करते हैं, तो करुणा कमजोर भावुकता नहीं रहती, बल्कि विवेकपूर्ण सहायता और मानवीय समझ का रूप ले सकती है।

मीन राशि की छाया प्रवृत्ति

मीन की छाया प्रवृत्ति में अत्यधिक आदर्शवाद, वास्तविकता से बचना, दूसरों पर जरूरत से अधिक भरोसा करना, अपनी सीमाएं स्पष्ट न कर पाना, भावनाओं में बह जाना और निर्णयों को टालना शामिल हो सकता है। द्विस्वभाव प्रकृति के असंतुलन में व्यक्ति कई संभावनाओं के बीच उलझ सकता है। जल तत्व के असंतुलन में वह दूसरों की भावनाओं को अपने ऊपर इतना ले सकता है कि अपनी आवश्यकताओं को पहचानना कठिन हो जाए।

लेकिन ये किसी भी मीन राशि वाले व्यक्ति के निश्चित गुण नहीं हैं। लग्न, चंद्रमा, बृहस्पति, शुक्र, बुध, नक्षत्र, दृष्टि, युति, नवांश और दशा के अनुसार अभिव्यक्ति बदल सकती है। मीन राशि की छाया का समाधान संवेदनशीलता को दबाना नहीं, बल्कि उसे विवेक, वास्तविकता की समझ और स्पष्ट सीमाओं के साथ जोड़ना है।

मीन राशि का जीवन-पाठ

मीन राशि का पहला जीवन-पाठ है करुणा रखना, लेकिन अपनी सीमाओं को न भूलना। दूसरा जीवन-पाठ है कल्पना करना, लेकिन वास्तविकता की जांच करना। तीसरा जीवन-पाठ है ज्ञान प्राप्त करना, लेकिन उसे व्यवहार में उतारना। चौथा जीवन-पाठ है दूसरों की सहायता करना, लेकिन उनकी सारी जिम्मेदारी अपने ऊपर न लेना। पांचवां जीवन-पाठ है संसार में रहते हुए आंतरिक शांति की खोज करना। छठा जीवन-पाठ है त्याग करना, लेकिन अपने आत्मसम्मान और विवेक को सुरक्षित रखना। और अंतिम जीवन-पाठ है अनुभवों से सीखकर जीवन के व्यापक अर्थ को समझना।

मीन राशि का उच्चतम स्वरूप

मीन राशि का उच्चतम स्वरूप उस व्यक्ति में प्रतीकात्मक रूप से दिखाई दे सकता है जो संवेदनशील होते हुए भी विवेकपूर्ण हो, उदार होते हुए भी जिम्मेदार हो और आध्यात्मिकता की खोज करते हुए भी जीवन के व्यावहारिक कर्तव्यों को समझता हो।

वह दूसरों के दुख को देखकर केवल भावुक नहीं होता, बल्कि जहां संभव हो वहां उपयोगी सहायता करने का प्रयास करता है। वह कल्पना करता है, लेकिन अपने विचारों को वास्तविकता से जोड़ना भी सीखता है। वह जीवन के अनुभवों को केवल व्यक्तिगत लाभ या हानि के रूप में नहीं देखता, बल्कि उनसे ज्ञान, करुणा और परिपक्वता प्राप्त करने का प्रयास करता है।

मीन का उच्च स्वरूप संसार से भागने में नहीं, बल्कि संसार को अधिक व्यापक दृष्टि से समझने में हो सकता है।

छाया से प्रकाश की यात्रा

अत्यधिक भावुकता से विवेकपूर्ण करुणा की ओर। भ्रम से स्पष्टता की ओर। अत्यधिक आदर्शवाद से वास्तविक समझ की ओर। निर्भरता से आत्मसम्मान की ओर। असीमित त्याग से संतुलित सेवा की ओर। कल्पना से रचनात्मक अभिव्यक्ति की ओर। भावनात्मक उलझन से आंतरिक शांति की ओर। संसार से पलायन से जागरूक सहभागिता की ओर। और अंततः व्यक्तिगत अनुभव से व्यापक करुणा की ओर।

मीन राशि का सम्पूर्ण सार

मीन राशिचक्र की बारहवीं और अंतिम राशि है। इसका तत्व जल है, इसकी प्रकृति द्विस्वभाव है और इसके स्वामी देवगुरु बृहस्पति हैं। इसे पारंपरिक रूप से सम, स्त्री, जल राशि, दिनबली और उभयोदय राशि माना जाता है। इसका विस्तार 330° से 360° तक है। कालपुरुष के शरीर में इसका संबंध पैरों से माना जाता है। इसके भीतर पूर्वाभाद्रपद का चतुर्थ चरण, उत्तराभाद्रपद के चारों चरण और रेवती के चारों चरण आते हैं। शुक्र मीन में उच्च का तथा बुध नीच का माना जाता है।

मीन का जल तत्व उसे संवेदनशीलता देता है। द्विस्वभाव प्रकृति उसे अनुकूलन और विभिन्न दृष्टिकोण समझने की क्षमता का प्रतीक देती है। बृहस्पति का स्वामित्व उसे ज्ञान, विवेक और धर्म से जोड़ता है। दो मछलियों का प्रतीक भौतिक जीवन और आध्यात्मिक खोज के बीच संतुलन की संभावना प्रस्तुत करता है। उभयोदय स्वरूप उसका विशिष्ट शास्त्रीय उदय-वर्गीकरण है। द्वादश राशि होने के कारण यह पूर्णता, समापन, त्याग और मोक्ष की प्राकृतिक प्रतीकात्मकता से जुड़ती है।

लेकिन मीन की वास्तविक कुंडलीगत अभिव्यक्ति केवल इन सामान्य विशेषताओं से निर्धारित नहीं होती। लग्न, चंद्र राशि, ग्रहों की स्थिति, भावेशत्व, नक्षत्र, दृष्टि, युति, नवांश, योग और दशाओं को साथ देखकर ही व्यक्तिगत फलादेश करना चाहिए।

मीन राशि का मूल सूत्र

"संवेदनशीलता को विवेक दो, कल्पना को दिशा दो, करुणा को कर्म में बदलो और अनुभवों से ज्ञान प्राप्त करो।"

मीन राशि का अंतिम संदेश

"जीवन में केवल प्राप्त करना ही महत्वपूर्ण नहीं है। कभी-कभी समझना, स्वीकार करना, क्षमा करना, उचित समय पर छोड़ देना और दूसरों के दुख को विवेकपूर्ण करुणा से समझना भी उतना ही महत्वपूर्ण है। ज्ञान का सर्वोच्च उपयोग केवल स्वयं को आगे बढ़ाने में नहीं, बल्कि अपने अनुभवों से स्वयं और दूसरों के जीवन को अधिक अर्थपूर्ण बनाने में है।"

मीन राशि का अंतिम सार

"जल से संवेदनशीलता ग्रहण करो, बृहस्पति से विवेक सीखो, द्विस्वभाव से अनुकूलन की क्षमता विकसित करो और अपने अनुभवों को करुणा, ज्ञान तथा आंतरिक शांति में रूपांतरित करो।"

सरकार सिंचाई की बुनियादी सुविधाओं के विस्तार के लिए प्रतिबद्ध : श्रुति चौधरी

सिंचाई एवं महिला बाल विकास मंत्री मंत्री श्रुति चौधरी ने झज्जर स्थित सिंचाई विभाग विश्राम गृह में 11 विकास योजनाओं का किया उद्घाटन व शिलान्यास

जल निकासी और सिंचाई व्यवस्था को मिलेगी मजबूती, विभिन्न गांवों के किसानों एवं नागरिकों को होगा लाभ

जलभराव और बाढ़ के पानी की निकासी से संबंधित योजनाओं से क्षेत्र के किसानों को मिलेगी राहत

परिवहन विशेष न्यूज

झज्जर, 11 अक्टूबर

हरियाणा की सिंचाई एवं महिला बाल विकास मंत्री श्रुति चौधरी ने रविवार को झज्जर स्थित सिंचाई विश्राम गृह में आयोजित कार्यक्रम के दौरान सिंचाई विभाग की 10 महत्वपूर्ण योजनाओं का उद्घाटन तथा एक परियोजना का शिलान्यास किया गया। इन 11 विकास योजनाओं की कुल लागत लगभग 37.50 करोड़ रुपये है। इन योजनाओं से जिला के विभिन्न गांवों में जल निकासी व्यवस्था सुदृढ़ होगी तथा खेतों में जलभराव और बाढ़ के पानी की निकासी में मदद मिलेगी। कार्यक्रम स्थल पर पौधरोपण भी किया गया। इससे पहले कार्यक्रम में पहुँचने पर एसडीएम रवि मीणा व सिंचाई विभाग के अधीक्षण अभियंता सतीश कुमार ने सिंचाई मंत्री का स्वागत करते हुए जिलाभर में चल रही सिंचाई से जुड़ी योजनाओं व परियोजनाओं की जानकारी दी। कैबिनेट मंत्री ने झज्जर नगर परिषद के चेयरमेन जिले सिंह सैनी व एडवोकेट लोकेश कुमार और गांव गवालिसन में राजेश धनखड़ के आवास पर लोगों से संवाद भी किया।

जलभराव की समस्या का स्थायी समाधान करना प्राथमिकता: सिंचाई मंत्री

सिंचाई मंत्री श्रुति चौधरी ने कहा कि प्रदेश सरकार किसानों के हितों की रक्षा और कृषि क्षेत्र में बुनियादी सुविधाओं के विस्तार के लिए प्रतिबद्ध है। जलभराव की समस्या का स्थायी समाधान करना सरकार की प्राथमिकताओं में शामिल है। उन्होंने कहा कि सिंचाई एवं जल निकासी से जुड़ी परियोजनाओं के माध्यम से किसानों को राहत देने और कृषि भूमि को जलभराव से बचाने की दिशा में निरंतर कार्य किए जा रहे हैं।

सिंचाई मंत्री ने इन योजनाओं का किया लोकार्पण

कैबिनेट मंत्री ने 428.83 लाख रुपये की लागत से बिसाहन लिंक नाले पर टेल रेगुलेटर सहित 50 सीएस क्षमता के पंप हाउस, 839.25 लाख रुपये की लागत से कासनी लिंक नाले का निर्माण तथा 687.99 लाख रुपये की लागत से नीलाहेड़ी गांव में भूजल स्तर कम करने के लिए ट्यूबवेल से संबंधित योजना का उद्घाटन किया। इसके अलावा गांव अकेहड़ी - मदनपुर में 225.34 लाख तथा 215.24 लाख रुपये की लागत से निर्मित दो भूमिगत एचडीपीई पाइपलाइन लिंक ड्रेन योजनाओं का उद्घाटन किया । जेएलएन फीडर पर 97.41 लाख रुपये की लागत से स्थापित 20 सीएस और 10 सीएस क्षमता के पंप सेट भी शुरू किए गए। उन्होंने गांव दुबलधन(घिक्यान) क्षेत्र में 362.32 लाख रुपये की लागत से बाढ़ के पानी की निकासी, दुबलधन (बिध्यान) लिंक नाली के 86.39 लाख रुपये की लागत से निर्माण, कासनी माइनर से नाला नंबर-8 तक 318.49 लाख रुपये की लागत से पाइपलाइन बिछाने तथा मुंडाहेड़ा गांव के खेतों से जेएलएन एस्केप चैनल तक 226.07 लाख रुपये की लागत से निर्मित आरसीसी पाइपलाइन योजनाओं का भी शुभारंभ किया।

चार गांवों में जल निकासी परियोजना का किया शिलान्यास

कैबिनेट मंत्री श्रुति चौधरी ने ढाकला, चंदोल और सुर्खपुर गांवों में बाढ़ के पानी की निकासी के लिए 263.17 लाख रुपये की लागत से नाला नंबर-8 तक 1000 मिलीमीटर व्यास की आरसीसी पाइपलाइन बिछाने की परियोजना का शिलान्यास किया। इस परियोजना से संबंधित गांवों में बरसाती पानी की निकासी सुगम होगी और किसानों को जलभराव की समस्या से राहत मिलेगी।

इन गांवों के किसानों को मिलेगा सीधा लाभ

इन विकास योजनाओं से रिटौली, कबूलपुर, गोच्छी, बिसाहन, बेरी, बाकरा, नीलाहेड़ी, अकेहड़ी- मदनपुर, अच्छेज, सफीपुर, मलिकपुर, गोधडी, सिवाना माजरा, दुबलधन, बिठला, लडायन, बिरहड़, मुंडाहेड़ा, चढ़वाना सहित विभिन्न गांवों को लाभ मिलेगा। जल निकासी की बेहतर व्यवस्था होने से खेतों में पानी जमा होने की समस्या कम होगी तथा कृषि गतिविधियों को बढ़ावा मिलेगा।

इस अवसर पर सिंचाई विभाग के एक्सईएन पुनीत साहनी, जेपी तंवर, प्रतिभा मुदगिल, डीपीओ नेहा दहिया सहित नगर परिषद चेयरमैन जिले सिंह सैनी, मार्केट कमेटी चेयरमैन सतबीर यादव, व्यापार मंडल जिलाध्यक्ष केशव सिंघल, सोमवती जाखड़, विद्या देवी व अन्य सम्बन्धित विभागीय अधिकारी उपस्थित रहे।

स्वर्ण पदक विजेता अमन सहरावत युवाओं के लिए प्रेरणास्त्रोत : कृष्ण लाल पंवार

कैबिनेट मंत्री कृष्ण लाल पंवार और पूर्व मंत्री ओमप्रकाश धनखड़ ने विजेता खिलाड़ी अमन सहरावत को किया सम्मानित

गांव बिरोहड़ में अंतरराष्ट्रीय पहलवान अमन सहरावत के सम्मान में स्वागत समारोह आयोजित

झज्जर, 11 अक्टूबर।

हरियाणा के विकास एवं पंचायत मंत्री कृष्ण लाल पंवार ने कहा कि अंतरराष्ट्रीय पहलवान अमन सहरावत ने अपनी मेहनत, लगन और प्रतिभा के दम पर देश और प्रदेश का नाम रोशन किया है। उनकी उपलब्धियां युवाओं के लिए प्रेरणास्त्रोत हैं। ग्रामीण परिवेश से निकलकर अंतरराष्ट्रीय खेल मंच पर अपनी पहचान बनाने वाले अमन सहरावत की सफलता से क्षेत्र के युवाओं को खेलों में आगे बढ़ने की प्रेरणा मिलेगी।

कैबिनेट मंत्री कृष्ण लाल पंवार रविवार को जिला के गांव बिरोहड़ में अंतरराष्ट्रीय पहलवान अमन सहरावत के सम्मान में आयोजित स्वागत समारोह को संबोधित कर रहे थे। इस अवसर पर उन्होंने अमन सहरावत को गदा भेंट कर सम्मानित किया और उनकी खेल उपलब्धियों की सराहना की। समारोह में बाढ़डा के विधायक श्री उमेद सिंह पातूवास और पूर्व मंत्री श्री ओमप्रकाश धनखड़ भी विशेष रूप से मौजूद रहे।

हरियाणा की धरती ने दिए देश को अनेक प्रतिभाशाली खिलाड़ी: पंवार

कैबिनेट मंत्री श्री कृष्ण लाल पंवार ने कहा कि हरियाणा वीरों और खिलाड़ियों की धरती है। देश की सीमाओं पर जहां प्रदेश के जवान राष्ट्र की सुरक्षा में अहम भूमिका निभा रहे हैं, वहीं खिलाड़ी अंतरराष्ट्रीय स्तर पर अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन कर देश का गौरव बढ़ा रहे हैं। उन्होंने कहा कि मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी के नेतृत्व में प्रदेश सरकार खेलों को बढ़ावा देने और खिलाड़ियों को प्रोत्साहित करने के लिए प्रतिबद्ध है।

उन्होंने कहा कि एशियाई खेलों में हरियाणा के 41 खिलाड़ियों ने पदक जीतकर प्रदेश का मान बढ़ाया है। अमन सहरावत जैसे प्रतिभाशाली खिलाड़ी अपनी उपलब्धियों से यह साबित करते हैं कि दृढ़ इच्छाशक्ति, अनुशासन और निरंतर मेहनत के बल पर कोई भी लक्ष्य हासिल किया जा सकता है। उनकी सफलता से न केवल गांव बिरोहड़, बल्कि जिला झज्जर और पूरे हरियाणा का गौरव बढ़ा है।

2028 ओलंपिक में भी देश का मान बढ़ाने का आह्वान

प्रदेश के विकास एवं पंचायत मंत्री श्री कृष्ण लाल पंवार ने अमन सहरावत को आगामी 2028 ओलंपिक खेलों के लिए अभी से कड़ी मेहनत करने और निरंतर अभ्यास जारी रखने के लिए प्रेरित किया। उन्होंने विश्वास जताया कि अमन अपनी प्रतिभा, लगन और समर्पण के बल पर भविष्य की अंतरराष्ट्रीय प्रतियोगिताओं में भी शानदार प्रदर्शन करेंगे और देश के लिए पदक जीतकर तिरंगे का मान बढ़ाएंगे।

उन्होंने युवाओं से आह्वान किया कि वे शिक्षा के साथ-साथ खेलों में भी बढ़-चढ़कर भाग लें। खेल न केवल शारीरिक और मानसिक विकास का माध्यम हैं, बल्कि अनुशासन, आत्मविश्वास और नेतृत्व क्षमता को भी मजबूत करते हैं। उन्होंने कहा कि ग्रामीण क्षेत्रों में प्रतिभाओं की कोई कमी नहीं है। जरूरत केवल उन्हें उचित अवसर, मार्गदर्शन और प्रोत्साहन देने की है। उन्होंने ग्रामीणों द्वारा रखी गई मांगों को नियमुनसार पूरा करवाने का आश्वासन दिया।

अमन सहरावत की उपलब्धियां युवाओं में भरती हैं नया उत्साह : धनखड़

पूर्व मंत्री श्री ओमप्रकाश धनखड़ ने अमन सहरावत को उनकी शानदार खेल उपलब्धियों के लिए बधाई देते हुए कहा कि उन्होंने अपनी मेहनत और प्रतिभा से देश व प्रदेश का नाम रोशन किया है। उनकी उपलब्धियां ग्रामीण क्षेत्र के युवाओं के लिए प्रेरणा का स्रोत हैं और यह संदेश देती हैं कि लगन व समर्पण के साथ आगे बढ़ने वाले खिलाड़ी अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भी सफलता हासिल कर सकते हैं। उन्होंने कहा कि अमन सहरावत जैसे खिलाड़ी युवाओं में आत्मविश्वास पैदा करते हैं और उन्हें अपने लक्ष्य के प्रति समर्पित रहने की प्रेरणा देते हैं। उन्होंने अमन के उज्ज्वल भविष्य की कामना करते हुए उम्मीद जताई कि वे आने वाले वर्षों में भी अपनी उपलब्धियों से देश को गौरवान्वित करते रहेंगे।

अंतरराष्ट्रीय स्तर पर बनाई विशिष्ट पहचान

काबिलेगौर है कि स्वर्ण पदक विजेता अमन सहरावत ने कुश्ती के क्षेत्र में राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर अपनी प्रतिभा का लोहा मनवाया है। ओलंपिक पदक विजेता और अर्जुन अवार्ड से सम्मानित अमन ने अपने प्रदर्शन से देश के प्रमुख युवा पहलवानों में स्थान बनाया है। उनकी उपलब्धियां विशेष रूप से ग्रामीण क्षेत्र के उन युवाओं के लिए प्रेरणादायक हैं, जो खेलों में अपना करियर बनाना चाहते हैं।

ये गणमान्य व्यक्ति रहे मौजूद

इस अवसर पर सतपाल पहलवान, भाजपा जिला अध्यक्ष विकास वाल्मिकी, जिला परिषद चेयरमैन कप्तान सिंह बिरधाना, पूर्व विधायक हुकम सिंह, भाजपा नेता संजय कबलाना, दीपक झांसवा, मनीष बंसल, सरपंच प्रतिनिधि रविंद्र, कालियावास के सरपंच जितेंद्र, सहरावत खाप के प्रधान वीरेंद्र, खाचरौली के सरपंच अनूप कुमार, भागवी के सरपंच अनिल कुमार सहित अनेक गणमान्य व्यक्ति मौजूद रहे।

प्रदूषण फैलाने वालों पर कसेगा शिकंजा, हॉटस्पॉट क्षेत्रों में दिन-रात हो रही निगरानी : डीसी

डीसी वर्षा खांगवाल के सख्त निर्देश–औद्योगिक इकाइयों से लेकर सड़कों की धूल और पराली जलाने तक हर गतिविधि पर नजर

झज्जर, 11 अक्टूबर

राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र (एनसीआर) में शामिल झज्जर जिला में वायु प्रदूषण पर प्रभावी नियंत्रण के लिए जिला प्रशासन ने सख्त रुख अपनाया है। संशोधित ग्रेडेड रिस्पांस एक्शन प्लान (ग्रेप) के प्रावधानों की पालना सुनिश्चित करने के लिए हॉटस्पॉट क्षेत्रों में विशेष निगरानी रखी जाएगी। डीसी वर्षा खांगवाल ने संबंधित विभागों को आपसी समन्वय के साथ प्रदूषण नियंत्रण की विशेष कार्ययोजना तैयार कर उसे प्रभावी ढंग से लागू करने के निर्देश दिए हैं। उन्होंने स्पष्ट किया कि प्रदूषण नियंत्रण के मामले में किसी भी स्तर पर लापरवाही बर्दाश्त नहीं की जाएगी और नियमों का उल्लंघन करने वालों के खिलाफ नियमानुसार कार्रवाई की जाए।

औद्योगिक इकाइयों से लेकर सड़कों तक प्रदूषण पर नजर

डीसी वर्षा खांगवाल ने कहा कि वायु प्रदूषण की रोकथाम के लिए सभी संबंधित विभाग अपनी जिम्मेदारी गंभीरता से निभाएं। औद्योगिक इकाइयों, डीजल जनरेटर सेट, वाहनों से निकलने वाले धुएं, सड़क की धूल, खुले में कचरा जलाने, अवैध डंपिंग और निर्माण गतिविधियों से होने वाले प्रदूषण पर प्रभावी नियंत्रण सुनिश्चित किया जाए। इसके साथ ही धान की पराली और फसल अवशेष जलाने की घटनाओं को रोकने के लिए भी फील्ड स्तर पर निगरानी बढ़ाई जाए। उन्होंने अधिकारियों को निर्देश दिए कि संशोधित ग्रेप के प्रावधानों की प्रभावी पालना सुनिश्चित करते हुए चिन्हित हॉटस्पॉट क्षेत्रों में नियमित निरीक्षण किया जाए। प्रदूषण फैलाने वाली गतिविधियों की पहचान कर तत्काल आवश्यक कदम उठाए जाएं, ताकि वायु गुणवत्ता में सुधार लाया जा सके।

सड़क की धूल रोकने के लिए स्वीपिंग और पानी के छिड़काव पर जोर

डीसी ने सड़कों से उड़ने वाली धूल को नियंत्रित करने के लिए मैकेनिकल एवं वैक्यूम स्वीपिंग की व्यवस्था प्रभावी बनाने के निर्देश दिए। आवश्यकता के अनुसार संबंधित अधिकारियों को पानी का छिड़काव सुनिश्चित करने और सड़कों की नियमित सफाई पर विशेष ध्यान देने को कहा। उन्होंने संबंधित विभागों को यातायात प्रबंधन बेहतर बनाने के साथ प्रदूषण फैलाने वाले वाहनों के खिलाफ भी नियमानुसार कार्रवाई करने के निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि सड़क किनारे जमा धूल, खाली प्लॉटों में पड़े कचरे और खुले स्थानों पर बिखरे निर्माण अपशिष्ट को हटाने के लिए भी ठोस कदम उठाए जाएं।

अवैध आरएमसी और एचएमपी इकाइयों पर होगी कार्रवाई

औद्योगिक प्रदूषण की रोकथाम को लेकर डीसी ने संबंधित अधिकारियों को औद्योगिक इकाइयों का नियमित निरीक्षण करने और पर्यावरणीय मानकों की अनुपालना सुनिश्चित करने के निर्देश दिए। उन्होंने अवैध रेडी

मिक्स कंक्रीट (आरएमसी) और हॉट मिक्स प्लांट (एचएमपी) इकाइयों के विरुद्ध नियमानुसार सख्त कार्रवाई करने को कहा।

इसके अतिरिक्त अवैध अथवा बंद इकाइयों के बिजली कनेक्शन काटने के संबंध में नियमानुसार आवश्यक कार्रवाई करने तथा औद्योगिक, ठोस और निर्माण अपशिष्ट की खुले स्थानों पर अवैध डंपिंग रोकने के निर्देश भी दिए।

पराली जलाने पर रोक के लिए गांवों में बढ़ेगी निगरानी

डीसी ने कहा कि फसल अवशेष जलाने से वायु प्रदूषण बढ़ता है, इसलिए किसानों को पराली प्रबंधन के वैकल्पिक उपाय अपनाने के लिए जागरूक किया जाए। इसके लिए गांवों में नियमित निगरानी के साथ फसल अवशेष प्रबंधन मशीनरी और कस्टम हायरिंग सेंटरों की उपलब्धता सुनिश्चित की जाए। अधिकारियों को निर्देश दिए गए कि पराली जलाने की किसी भी घटना की सूचना मिलने पर तुरंत कार्रवाई की जाए और किसानों को फसल अवशेषों का उचित प्रबंधन करने के लिए प्रेरित किया जाए।

बहादुरगढ़ के आठ गांवों पर रहेगा विशेष फोकस

डीसी ने बताया कि प्रदूषण नियंत्रण अभियान के तहत बहादुरगढ़ क्षेत्र के गांव परनाला, बामनोली, लडरावन, कसार, मुकंदपुर, खैरपुर, कानोंदा और गुभाना सहित अन्य चिन्हित क्षेत्रों में विशेष निगरानी रखने के निर्देश दिए गए हैं। इन क्षेत्रों में प्रदूषण नियंत्रण गतिविधियों की नियमित समीक्षा की जाएगी। खाली प्लॉटों, सड़क किनारे और खुले स्थानों पर पड़े कचरे व निर्माण अपशिष्ट को हटाने के लिए भी संबंधित विभागों को आवश्यक कार्रवाई करने को कहा गया है।

जनभागीदारी से ही बनेगा स्वच्छ और प्रदूषण मुक्त वातावरण

डीसी वर्षा खांगवाल ने अधिकारियों को निर्देश दिए कि आमजन को वायु प्रदूषण के दुष्प्रभावों और उससे बचाव के उपायों के प्रति जागरूक करने के लिए व्यापक अभियान चलाया जाए। लोगों को ग्रेप के प्रावधानों, पराली व कचरा जलाने से होने वाले नुकसान, सड़क की धूल पर नियंत्रण और वाहनों के प्रदूषण जांच प्रमाणपत्र (पीयूसी) की आवश्यकता के बारे में जानकारी दी जाए। उन्होंने कहा कि वायु प्रदूषण पर प्रभावी नियंत्रण के लिए प्रशासनिक प्रयासों के साथ नागरिकों की भागीदारी भी जरूरी है। आमजन प्रदूषण फैलाने वाली गतिविधियों से बचें और ऐसी घटनाओं की सूचना संबंधित विभागों को दें। प्राप्त शिकायतों पर त्वरित कार्रवाई सुनिश्चित की जाए, ताकि जिले में स्वच्छ और स्वस्थ वातावरण बनाए रखने के प्रयासों को गति मिल सके।

वोटर से प्राप्त दावे आपत्तियों का तत्काल निपटान करें अधिकारी : डीसी

आगामी 28 अक्टूबर तक होगा दावे आपत्तियों का निपटारा,6 नवम्बर को होगा अंतिम मतदाता सूची का प्रकाशन

डीसी एवं जिला निर्वाचन अधिकारी वर्षा खांगवाल ने निर्वाचक पंजीयन अधिकारियों को दिए निर्देश

झज्जर, 11 अक्टूबर भारत निर्वाचन आयोग के निर्देशानुसार जिला झज्जर के सभी चारों विधानसभा क्षेत्रों में एसआईआर-2026 के तहत मतदाता सूची के विशेष गहन पुनरीक्षण का कार्य जारी है। डीसी एवं जिला निर्वाचन अधिकारी वर्षा खांगवाल ने कहा कि अभियान का उद्देश्य प्रत्येक पात्र नागरिक का नाम मतदाता सूची में शामिल करना तथा अपात्र नामों को हटाकर सूची को शुद्ध एवं अद्यतन बनाना है। डीसी ने बताया कि एसआईआर-2026 के कार्यक्रम के अनुसार दावे एवं आपत्तियों का निपटारा 28 अक्टूबर तक होगा तथा अंतिम मतदाता सूची 6 नवंबर को प्रकाशित की जाएगी। मतदाता नाम, पता, आयु, फोटो सहित अन्य विवरणों की जांच कर त्रुटि मिलने पर समय रहते सुधार सम्भव है। डीसी ने कहा कि मतदाता सूची को शुद्ध एवं विश्वसनीय बनाने में नागरिकों की सक्रिय भागीदारी जरूरी है। उन्होंने सभी निर्वाचक पंजीयन अधिकारियों को एसआईआर प्रक्रिया नियमानुसार पूरी करने के निर्देश दिए हैं।

श्रद्धालुओं की सुरक्षा झज्जर प्रशासन की प्राथमिकता : डीसी

डीसी वर्षा खांगवाल के निर्देश -नवरात्र पर्व के दौरान सुरक्षा व्यवस्था रहेगी चाक-चौबंद

शारदीय नवरात्र पर्व, श्रद्धालुओं की सुरक्षा और भीड़ प्रबंधन के लिए प्रशासन ने जारी किए आवश्यक दिशा-निर्देश

झज्जर, 11 अक्टूबर। डीसी वर्षा खांगवाल ने कहा कि शारदीय नवरात्र पर्व के दौरान जिलाभर में श्रद्धालुओं की सुरक्षा, कानून-व्यवस्था बनाए रखने तथा भीड़ का सुचारू प्रबंधन सुनिश्चित करने के लिए जिला प्रशासन पूरी तरह सतर्क है। श्रद्धालुओं की सुरक्षा सर्वोच्च प्राथमिकता है। सभी विभाग आपसी तालमेल से कार्य करते हुए यह सुनिश्चित करें कि नवरात्र पर्व शांतिपूर्ण, सुरक्षित और सुव्यवस्थित ढंग से संपन्न हो तथा श्रद्धालु बिना किसी परेशानी के पूजा-अर्चना कर सकें। इस बार नवरात्र पर्व 11 से 19 अक्टूबर तक मनाया जा रहा है। इस दौरान मंदिरों, धार्मिक स्थलों, मेलों और जागरण कार्यक्रमों में श्रद्धालुओं की अधिक आवाजाही को देखते हुए संबंधित विभागों को आवश्यक प्रबंध सुनिश्चित करने के निर्देश दिए गए हैं।

सीसीटीवी कैमरों के माध्यम से रखी जा रही गतिविधियों पर निगरानी

डीसी ने कहा कि धार्मिक आयोजनों के दौरान किसी भी प्रकार की अप्रिय घटना, भगदड़ अथवा अव्यवस्था की स्थिति उत्पन्न न हो, इसके लिए प्रशासन के साथ प्रभावी समन्वय जरूरी है। प्रमुख देवी मंदिरों, शक्तिपीठों और पंडालों में आवश्यकता के अनुसार अतिरिक्त पुलिस बल तैनात किया जाए। प्रमुख मंदिरों और पंडालों में सीसीटीवी कैमरे लगाए जाएं तथा एक नियंत्रण कक्ष के माध्यम से गतिविधियों पर निगरानी रखी जाए। इसके साथ ही अग्निशमन यंत्रों, चिकित्सा सहायता, पेयजल और अन्य आवश्यक सुविधाओं की उपलब्धता सुनिश्चित की जाए, ताकि आपातकालीन परिस्थितियों में तत्काल सहायता उपलब्ध करवाई जा सके।

माछरौली व ढाकला में सेवा संकल्प अभियान के तहत सेवा सेतु कैंप आज

जिला परिषद के सीईओ मनीष फौगाट ने दी जानकारी

झज्जर, 11 अक्टूबर जिलाभर में सेवा संकल्प अभियान के तहत आमजन को सरकार की योजनाओं का लाभ उनके नजदीक पहुंचाने के उद्देश्य से जिला के शहरी व ग्रामीण क्षेत्र में सेवा सेतु कैम्प लगाए जा रहे हैं। डीसी वर्षा खांगवाल के मार्गदर्शन में लग रहे सेवा सेतु कैम्प में लोग सरकार की योजनाओं का लाभ उठा रहे हैं।

जिला परिषद के सीईओ मनीष फौगाट ने जानकारी देते हुए बताया कि सोमवार 12 अक्टूबर को माछरौली ब्लॉक मुख्यालय व गांव ढाकला, 13 अक्टूबर को गांव खुड्डन, 14 अक्टूबर को साल्हावास ब्लॉक मुख्यालय तथा 15 अक्टूबर को गांव भुरावास में सेवा सेतु कैंप आयोजित किए जाएंगे।

जन समस्याओं के समाधान के लिए झज्जर में जिला स्तरीय समाधान शिविर आज

उपमंडल स्तर पर बेरी, बहादुरगढ़ और बादली लघु सचिवालयों में सुबह 10 से 12 बजे तक आयोजित होंगे शिविर

झज्जर, 11 अक्टूबर ।

आमजन की समस्याओं के त्वरित, पारदर्शी एवं प्रभावी समाधान के उद्देश्य से जिला प्रशासन द्वारा सोमवार 12 अक्टूबर को जिला मुख्यालय सहित सभी उपमंडलों में समाधान शिविर आयोजित किए जाएंगे। ये शिविर सुबह 10 बजे से दोपहर 12 बजे तक लगाए जाएंगे, जहां नागरिकों की शिकायतें सुनकर उनका मौके पर ही निपटान सुनिश्चित किया जाएगा।

जिला स्तरीय समाधान शिविर का आयोजन लघु सचिवालय स्थित कॉन्फ्रेंस हॉल में होगा। इस दौरान संबंधित शिकायतें सुनते हुए अधिकारियों को समस्याओं के समयबद्ध समाधान के निर्देश दिए जाएंगे।

तीनों सब डिवीजन में भी लगेंगे समाधान शिविर

उपमंडल स्तर पर बहादुरगढ़ में एसडीएम अभिनव सिवाच, बादली में एसडीएम विशाल कुमार और बेरी लघु सचिवालय परिसर में एसडीएम रेणुका नांदल की अध्यक्षता में उपमंडल स्तरीय समाधान शिविर आयोजित किए जाएंगे। इन शिविरों में प्राप्त शिकायतों का प्राथमिकता के आधार पर निपटान किया जाएगा।

परिवहन विशेष - संपादकीय विशेषांक - एमपीआरडीसी टोल

एक दशक से एमपीआरडीसी के अधिकारी क्यों बने हैं अनजान? तेलदह-गड़ेरिया व्यावसायिक टोल पर ओवरलोड वाहनों की जांच व्यवस्था पर सवाल - सिंगरौली

रिपोर्ट संजय कुमार बाठला

1. तथ्य - क्या है मामला?

- स्थानः बैढ़न-बरगवां मार्ग, तेलदह-गड़ेरिया स्थित व्यावसायिक टोल प्लाजा, सिंगरौली, मध्य प्रदेश
- स्थापनाः वर्ष 2016 में स्थापित
- समस्याः करीब एक दशक बीत जाने के बाद भी वाहनों के वजन की जांच के लिए धर्मकांटा (तौल कांटा / Weighbridge) की व्यवस्था नहीं होने की बात सामने आ रही है।
- सवालः आखिर एमपीआरडीसी के अधिकारी इतने वर्षों से इस व्यवस्था से अनजान क्यों बने हुए हैं? क्या विभागीय अधिकारियों ने कभी मौके पर जाकर स्थिति की जांच नहीं की या फिर सब कुछ जानते हुए भी अनदेखी की जा रही है?

2. तथ्य - इस मार्ग से क्या गुजरता है?

- इस मार्ग से राखड़, कोयला, रेत, गिट्टी सहित अन्य सामग्री लाने-ले जाने वाले भारी वाहनों की आवाजाही होती है।
- सूत्रों का दावा है कि इनमें कई वाहन ओवरलोड भी रहते हैं।
- ऐसे में तौल व्यवस्था के अभाव में वाहनों के वजन की निगरानी कैसे की जाती है, यह बड़ा सवाल है।
- हालांकि ओवरलोडिंग और उससे होने वाले संभावित राजस्व नुकसान की आधिकारिक पुष्टि जांच के बाद ही हो सकेगी।

3. तथ्य - जवाबदेही कहां तय हो? रीवा से भोपाल तक

- एमपीआरडीसी के रीवा कार्यालय में पदस्थ संबंधित अधिकारियों की भूमिका पर सवाल उठ रहे हैं।
- आखिर टोल प्लाजा की व्यवस्था की नियमित समीक्षा क्यों नहीं हुई?
- भोपाल में बैठे विभागीय अधिकारियों को इसकी जानकारी थी या नहीं, यदि जानकारी थी तो कार्रवाई क्यों नहीं की गई और यदि जानकारी नहीं थी तो निगरानी तंत्र किस काम का है?
- राजनीतिक स्तर पर भी सवाल उठ रहे हैं कि भाजपा सरकार के दौरान कांग्रेसी नेता से जुड़े बताए जा रहे टोल संचालन के मामले में भाजपा नेताओं ने आवाज क्यों नहीं उठाई। क्या वे वास्तविक स्थिति से अनजान थे या फिर उन्होंने इस मुद्दे को गंभीरता से नहीं लिया।

4. तथ्य - ठंडे बस्ते में डालने की कवायद?

- स्थानीय चर्चाओं और सूत्रों के हवाले से शासन को करोड़ों रुपये के राजस्व नुकसान की आशंका जताई जा रही है।
- साथ ही टोल संचालक को अतिरिक्त आर्थिक लाभ मिलने के आरोप भी चर्चा में हैं।
- इन दावों की सच्चाई सामने लाने के लिए टोल की अनुबंध शर्तों, राजस्व वसूली और निगरानी व्यवस्था की जांच आवश्यक है।

मुख्य बिंदु - संपादकीय मांगः

1. धर्मकांटा तत्काल स्थापित होः टोल प्लाजा की अनुबंध शर्तों में धर्मकांटा की अनिवार्यता की जांच हो और तत्काल वे-इन-मोशन / स्थायी तौल व्यवस्था लागू हो।
2. ओवरलोड पर सख्त कार्रवाईः मोटर वाहन अधिनियम के तहत ओवरलोड वाहनों पर चालान और सीज, वजन घटाकर ही आगे जाने की अनुमति।
3. रीवा से भोपाल तक ऑडिटः रीवा कार्यालय से भोपाल मुख्यालय तक की जिम्मेदारी तय हो - कौन-कौन अधिकारी मौके पर गए, किसने रिपोर्ट दी, किसने अनदेखी की?
4. राजस्व का हिसाबः टोल अनुबंध, राजस्व वसूली और निगरानी व्यवस्था की स्वतंत्र जांच हो - करोड़ों के नुकसान की आशंका की सच्चाई सामने आए।
5. सड़क सुरक्षाः ओवरलोड से सड़कें क्षतिग्रस्त होती हैं, मरम्मत का बोझ जनता पर पड़ता है - सड़क की आयु घटती है।
6. प्रकरण ठंडे बस्ते में नहींः अब एमपीआरडीसी के वरिष्ठ अधिकारियों को टोल प्लाजा की शर्तों, धर्मकांटे की अनिवार्यता, ओवरलोड वाहनों की निगरानी और राजस्व वसूली की स्थिति स्पष्ट करनी चाहिए।

संपादकीय निष्कर्षः

> सबसे बड़ा सवाल यही है कि आखिर जिम्मेदार अधिकारी इस मामले में अब तक अनजान क्यों बने हुए हैं और

कार्रवाई करने के बजाय पूरे प्रकरण को ठंडे बस्ते में डालने की आशंका क्यों पैदा हो रही है? एक दशक की अनदेखी अब जवाब मांगती है - सड़क, राजस्व और जनता की सुरक्षा तीनों एक साथ प्रभावित हो रहे हैं।

परिवहन विशेष - संपादकीय - सेवा सेतु शिविर 2026

सेवा सेतु शिविर-2026 में 841 स्वास्थ्य जाँच एवं सेवा प्रविष्टियाँ दर्ज

पूर्वी जिला, दिल्ली – 10 एवं 11 अक्टूबर 2026 – निःशुल्क स्वास्थ्य जाँच, TB स्क्रीनिंग, ABHA और आयुष्मान कार्ड का लाभ हजारों नागरिकों को मिला

रिपोर्टः नवदीप सिंह, परिवहन विशेष समाचार पत्र दैनिक

परिचयः जिलाधिकारी, पूर्वी जिला, दिल्ली के निर्देशन में भाई परमानंद अंबेडकर इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी, शकरपुर में दो दिवसीय सेवा सेतु शिविर-2026 का आयोजन किया गया। शिविर का उद्घाटन भारतीय जनता पार्टी के महासचिव श्री जयप्रकाश जी द्वारा किया गया।

1. तथ्य - उपस्थित गणमान्य

- उद्घाटनकर्ताः श्री जयप्रकाश जी, महासचिव, भारतीय जनता पार्टी
- विशिष्ट अतिथिः श्री अभय वर्मा, विधायक, लक्ष्मी नगर
- अधिकारीः SDM श्री जितेंद्र कुमार, तहसीलदार श्री अरुण पाराशर तथा विभिन्न विभागों के अधिकारी
- स्वास्थ्य विभागः महानिदेशालय स्वास्थ्य सेवाएँ (DGHS), पूर्वी जिला, दिल्ली सरकार

2. तथ्य - स्वास्थ्य विभाग का नेतृत्व

- मुख्य जिला चिकित्साधिकारी (CDMO): डॉ. संदीप गौतम
- उप मुख्य जिला चिकित्साधिकारीः डॉ. इंदु सरना
- दोनों के मार्गदर्शन में नागरिकों को निःशुल्क स्वास्थ्य जाँच एवं चिकित्सा परामर्श प्रदान किया गया।

3. तथ्य - दो दिवसीय शिविर की प्रमुख उपलब्धियाँ (कुल 841)

सेवा	संख्या
ब्लड शुगर जाँच	150
ब्लड प्रेशर जाँच	115
टीबी संबंधी छाती का एक्स-रे	83
टीबी एवं DOTS काउंसलिंग	100
हीमोग्लोबिन जाँच	98
आशा कार्यकर्ताओं द्वारा NCD स्क्रीनिंग	187
आयुष्मान भारत हेल्थ आईडी (ABHA)	73
आयुष्मान भारत कार्ड	35
कुल जाँच एवं सेवा प्रविष्टियाँ	*841*

4. तथ्य - सहयोगी टीम

- डॉ. सागर मलिक - चिकित्सा परामर्श
- हेमलता ANM, आनंद कुमार पैरामेडिकल स्टाफ, ड्रेसर श्री अवतार सिंह एवं आशा कार्यकर्ताओं ने सक्रिय सहयोग दिया।

मुख्य बिंदु - संपादकीय निष्कर्षः

1. सबसे बड़ी सेवा NCD स्क्रीनिंगः 187 नागरिकों की NCD स्क्रीनिंग - डायबिटीज, हाइपरटेंशन जैसे गैर-संचारी रोगों की प्रारंभिक पहचान में बड़ी सफलता।
2. TB मुक्त भारत की दिशा मेंः 83 एक्स-रे और 100 DOTS काउंसलिंग - TB की शीघ्र पहचान और इलाज का मजबूत कदम।
3. डिजिटल स्वास्थ्यः 73 ABHA आईडी और 35 आयुष्मान कार्ड - नागरिकों को सरकारी स्वास्थ्य योजनाओं से सीधे जोड़ने का कार्य।
4. उद्देश्य पूराः नागरिकों को सरकारी स्वास्थ्य योजनाओं का लाभ पहुँचाना, रोगों की प्रारंभिक पहचान करना तथा स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता बढ़ाना - यही सेवा सेतु शिविर का मूल उद्देश्य है।

संपादकीय बॉक्सः

>सेवा सेतु शिविर यह साबित करता है कि जब प्रशासन, स्वास्थ्य विभाग और जनप्रतिनिधि एक साथ आते हैं, तो सरकारी योजनाएं सीधे जनता के द्वार तक पहुंचती हैं। स्वास्थ्य ही सेवा है।

चिराग दिल्ली में रामलीला का मंचन शुरू, 20 अक्टूबर तक चलेगा भव्य आयोजन

स्वतंत्र सिंह भुल्लर नई दिल्ली
परिवहन विशेष समाचार पत्र दैनिक

दक्षिण दिल्ली में श्रीराम की भक्ति और भारतीय संस्कृति का संदेश लेकर श्री धार्मिक रामलीला, दक्षिण दिल्ली (पंजी.) की नौवीं रामलीला का मंचन बीते दिन, 11 अक्टूबर से शुरू हो गया है। चिराग दिल्ली स्थित मिलेनियम पार्क, दशहरा ग्राउंड, बीआरटी कॉरिडोर में 20 अक्टूबर तक चलने वाले इस आयोजन में प्रतिदिन शाम 7:30 बजे से रात 12 बजे तक रामलीला का मंचन होगा। इस वर्ष आयोजन की थीम 'विकसित भारत' रखी गई है। रामलीला के साथ विशाल मेले और भव्य दशहरा उत्सव की भी तैयारी है।

आयोजन समिति के मुख्य संरक्षक राकेश गुलिया ने क्षेत्रवासियों से परिवार सहित रामलीला में पहुंचने की अपील की है। उन्होंने कहा कि यह क्षेत्र के लोगों की अपनी रामलीला है और अधिक से अधिक लोगों की भागीदारी से आयोजन को नई ऊर्जा मिलेगी। समिति का प्रयास है कि धार्मिक परंपरा के साथ भगवान श्रीराम के जीवन, आदर्शों और मर्यादा का संदेश जन-जन तक पहुंचे तथा नई पीढ़ी भारतीय संस्कृति से जुड़ सके। रामलीला आयोजन को दक्षिण दिल्ली की सांसद बांसुरी स्वराज का मार्गदर्शन प्राप्त है। समिति ने इस बार मंचन के साथ मेले और दशहरा आयोजन को भी व्यापक स्वरूप देने की तैयारी की है, ताकि परिवारों को एक ही स्थान पर धार्मिक और सांस्कृतिक कार्यक्रमों में भाग लेने का अवसर मिल सके।

दर्शकों की सुविधा के लिए चिराग दिल्ली पार्किंग और एलएससी मार्केट, शेख सराय-2 में वाहनों की पार्किंग व्यवस्था रहेगी। आयोजन समिति ने क्षेत्रवासियों और रामभक्तों से बड़ी संख्या में पहुंचकर रामलीला का आनंद लेने और मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम के आदर्शों को आत्मसात करने की अपील की है।

परिवहन विशेष - संपादकीय कानूनी - सुप्रीम कोर्ट का निर्देश : सुप्रीम कोर्ट का निर्देशः शांतिपूर्ण प्रदर्शनकारियों को हिरासत में न लिया जाए; मेट्रो, ट्रेन और इंटरनेट सेवाएं बिना रुकावट जारी रहें

रविवार को विशेष सुनवाई में जस्टिस जॉयमाल्या बागची और जस्टिस वी. मोहना की बेंच का कड़ा निर्देश – अनुच्छेद 19(2) के तहत ही प्रतिबंध, धारा 163 का बोर्ड हटाएं, बैरिकेड्स की समीक्षा करें

रिपोर्ट विशेष संवाददाता परिवहन विशेष समाचार पत्र

पृष्ठभूमिः यह सुनवाई 10 अक्टूबर को मुख्य चुनाव आयुक्त ज्ञानेश कुमार और भारत निर्वाचन आयोग (ECI) के खिलाफ हुए विरोध प्रदर्शनों को दिल्ली पुलिस द्वारा संभालने के तरीके से जुड़ी याचिकाओं पर की गई। इन मामलों में एक अवमानना याचिका शामिल है, जिसमें आरोप लगाया गया कि अधिकारियों ने कोर्ट के 9 अक्टूबर के आदेश का उल्लंघन करते हुए दिल्ली मेट्रो सेवाओं पर रोक जारी रखी। इसके अलावा, सीनियर एडवोकेट और तृणमूल कांग्रेस की राज्यसभा सांसद मेनका गुरुस्वामी द्वारा दायर एक 'हेबियस कॉर्पस' (बंदी प्रत्यक्षीकरण) याचिका भी शामिल है, जिसमें कई राजनीतिक नेताओं की हिरासत को चुनौती दी गई।

1. तथ्य - सुप्रीम कोर्ट के 5 प्रमुख निर्देश

1. हिरासत नहींः किसी भी व्यक्ति को कानून द्वारा तय प्रक्रिया के बिना हिरासत में नहीं लिया जाएगा - खासकर उन शांतिपूर्ण और निहत्थे लोगों के जमावड़े के संबंध में, जो उन इलाकों से बाहर हैं जहाँ निषेधाज्ञा लागू है।
2. धारा 163 बोर्ड हटाएंः सुप्रीम कोर्ट के आसपास के इलाके में BNSS की धारा 163 लागू करने से संबंधित बोर्ड को हटा दें, ताकि न्याय तक पहुँच में कोई आशंका न रहे।
3. मेट्रो-रेल सामान्यः मेट्रो और रेल सेवाएँ सामान्य रूप से चलनी चाहिए, सिवाय तब जब संविधान के अनुच्छेद 19(2) के तहत सार्वजनिक व्यवस्था में गड़बड़ी को देखते हुए प्रतिबंध लगाना ज़रूरी हो।
4. आवाजाही और बैरिकेड्सः ट्रैफिक नियमों के अधीन शहर में लोगों की स्वतंत्र आवाजाही की अनुमति दी जाए, बैरिकेड्स लगाने के फैसले की तुरंत समीक्षा की जाए।
5. इंटरनेट जारीः इंटरनेट सेवाएं बिना किसी रुकावट के जारी रहनी चाहिए।

2. तथ्य - सरकार का पक्ष (SGI तुषार मेहता)

- मेट्रो रेलवे पूरी तरह से काम कर रही है, शनिवार रात 10 बजे से सभी स्टेशन खुले हैं, ट्रेनें सामान्य रूप से चल रही हैं और इंटरनेट कनेक्शन भी बहाल कर दिया गया।
- 10 अक्टूबर को मेट्रो सेवा में कोई कटौती नहीं की गई, कुल 4750 ट्रेनें चलाई गईं। दिल्ली मेट्रो में 303 स्टेशन हैं, जिनमें से 47 बंद या सीमित किए गए।
- हेबियस कॉर्पस याचिका अब शायद काम की न रहे, क्योंकि जिन लोगों को हिरासत में लिया गया, उन्हें रिहा कर दिया गया।

3. तथ्य - शुक्रवार का आदेश

कोर्ट ने शुक्रवार को पारित आदेश में अधिकारियों को दिल्ली मेट्रो के 57 स्टेशनों को बंद करने के पिछले नोटिफिकेशन पर

पुनर्विचार करने का निर्देश दिया था। निर्देश में कहा गया था कि मेट्रो और रेल सेवाओं के संचालन को नियंत्रित तो किया जा सकता है, लेकिन उचित मामलों में उन्हें पूरी तरह से रोका नहीं जाना चाहिए। पुनर्विचार के बाद लिए गए फैसले को सार्वजनिक किया जाए।

4. तथ्य - याचिकाकर्ताओं की दलीलें

- सीनियर एडवोकेट कपिल सिब्बलः पुलिस ट्रेनों से और जंतर-मंतर के 4 किलोमीटर के दायरे के बाहर मौजूद लोगों को उठा रही थी। इंटरनेट बंद है और कोर्ट के आदेश के बावजूद 45 मेट्रो स्टेशन बंद कर दिए गए।
- सीनियर एडवोकेट शादान फरासतः ₹सवाल सिर्फ वकीलों का नहीं है। कल शहर में हालात बहुत दमनकारी थे। लोगों को वहां खड़े भी नहीं होने दिया जा रहा था। मुझे उठाकर एक चलती हुई बस में फेंक दिया गया। यह नागरिकों के विरोध करने के अधिकार का मामला है। मुझे जो महसूस हुआ - कल हम 'पुलिस स्टेट' बनने से बस एक कदम दूर थे। कृपया राजधानी में नागरिकों के शांतिपूर्ण विरोध के अधिकार को बहाल करें।₹
- सीनियर एडवोकेट एन. हरिहरनः हालात ऐसे हैं कि प्रैक्टिस करने वाले वकील शहर में घूम नहीं सकते और तस्वीरें खुद सब कुछ बयां कर रही हैं।
- सीनियर एडवोकेट गोपाल शंकरनारायणनः ₹यह आनुपातिकता का सवाल भी नहीं है। सबसे पहले ज़रूरत देखी जानी चाहिए। निहत्थे बच्चों को पीटना, लात मारना... ये लोग इसे बहादुरी के बैज की तरह दिखाते हैं। इस घटना ने हमारे मन में कई भावनाएं जगा दी हैं। यह हमारे दरवाज़े तक आ गई।₹ उन्होंने मांग की कि लोगों की आवाजाही पूरी तरह से बहाल की जाए, सभी बैरिकेड हटाए जाएं और मेट्रो स्टेशनों को फिर से खोलने का निर्देश दिया जाए। बिना बैज वाले पुलिसकर्मियों को अनुमति नहीं दी जानी चाहिए थी।
- सीनियर एडवोकेट संजय हेगड़ेः न्याय तक पहुंच का मतलब वकीलों तक पहुंच भी है और अगर वकीलों को अपना काम करने से रोका जाता है तो इससे सीधे तौर पर सुप्रीम कोर्ट की गरिमा प्रभावित होती है। पुलिस स्टेशनों में वकीलों की पिटाई की गई, FIR की धमकी दी गई।
- एक महिला वकीलः वह 150 अन्य वकीलों के साथ शांतिपूर्वक चल रही थीं, तभी उनमें से चार को पकड़कर जेल वैन में ले जाया गया। ₹कोई नेम बैज नहीं था। अगर हिंसा हुई होती तो कार्रवाई की जा सकती थी। लेकिन हम शांतिपूर्ण थे।₹
- सीनियर एडवोकेट शोएब आलमः चिंता नागरिकों के मौलिक अधिकारों से जुड़ी है और भारत के संविधान का अनुच्छेद 19 लोगों के पक्ष में है।
- सीनियर एडवोकेट मेनका गुरुस्वामी (याचिकाकर्ता): ₹पूरी दिल्ली में 45 डिटेंशन सेंटर बनाए जाने की खबर है। विपक्ष के नेताओं को हिरासत में लिया गया। सांसदों को उनके घरों में ही रोक दिया गया। 7000 लोगों को हिरासत में लिए जाने की खबर है और सरकार किसी को भी आधिकारिक आंकड़े नहीं दे रही है। क्या सरकार यह कह रही है कि अघोषित आपातकाल लगा हुआ है? हम 50 साल बाद फिर उसी स्थिति में हैं - आपके पूर्ववर्तियों ने ADM जबलपुर मामले में फैसला सुनाया था!₹ उन्होंने मांग की कि गृह सचिव और मेट्रो के वरिष्ठ अधिकारी सहित अवमानना के आरोपियों को नोटिस जारी किया जाए।

5. तथ्य - कोर्ट की टिप्पणी

- जस्टिस बागचीः ₹क्या ये सलाह रेलवे अधिकारियों की तरफ से हैं? कृपया इन याचिकाओं पर अपना जवाब और अनुपालन रिपोर्ट मंगलवार तक दाखिल करें। इस बीच, मेट्रो का कामकाज सामान्य शेड्यूल के अनुसार जारी रहना चाहिए (यह आर्टिकल 19(2) के तहत सार्वजनिक व्यवस्था की शर्त के अधीन है)। किसी भी वकील को उनके पेशेवर कर्तव्यों के निर्वहन में किसी भी तरह से रोका नहीं जाना चाहिए। हम जानबूझकर 'पेशेवर' शब्द कह रहे हैं। शहर में इंटरनेट सुविधा बहाल की जानी चाहिए।"
- जस्टिस बागची (पुलिस अधिकारियों के वकील को): 'पुलिस अधिकारियों को राज्य से ऊपर कानून-व्यवस्था बनाए रखने का कोई व्यक्तिगत अधिकार नहीं है। जीवन और स्वतंत्रता समान रूप से संवेदनशील हैं - हमने यह पहले भी कहा है। चाहे वह पुलिस अधिकारी हो या नागरिक।'
- जस्टिस बागची (अनुच्छेद 19 पर): CJI ने स्पष्ट कर दिया कि अनुच्छेद 19(2) कोई रोक नहीं है, बल्कि एक नियमन (रेगुलेशन) है।

6. मुख्य बिंदु - आदेश का परिणाम

- कोर्ट ने कथित अवमानना करने वालों को नोटिस जारी किया, उन्हें हलफनामा और अनुपालन रिपोर्ट (Compliance Report) जमा करने का निर्देश दिया।
- रविवार को ज़िक्र की गई अन्य सूचीबद्ध न की गई याचिकाओं को अवमानना की कार्यवाही के साथ जोड़ दिया जाएगा।
- कोर्ट ने यह भी कहा कि वह इस मुद्दे पर भी सुनना चाहेगी कि पुलिस का काम करने का तरीका आर्टिकल 19 के तहत अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता की आवश्यकताओं के साथ किस हद तक मेल खाता है।
- सिब्बल ने जवाब दिया कि देश का कोई भी पुलिस एक्ट या कानून सार्वजनिक व्यवस्था को छोड़कर आर्टिकल 19(2) का उल्लंघन नहीं कर सकता। पत्रकारों को भी अंदर और बाहर दोनों जगह बाधाओं का सामना करना पड़ रहा है।

संपादकीय निष्कर्षः > सुप्रीम कोर्ट का यह निर्देश लोकतंत्र के मूल संतुलन को फिर से स्थापित करता है - सार्वजनिक व्यवस्था जरूरी है, लेकिन शांतिपूर्ण विरोध, न्याय तक पहुंच, आवाजाही की स्वतंत्रता और इंटरनेट जैसी सेवाओं पर प्रतिबंध केवल कानून की प्रक्रिया और अनुच्छेद 19(2) की कसौटी पर ही लगाया जा सकता है।

गर्म होते महासागर, बदलती जलवायु: 2027 में अल नीनो और पृथ्वी का भविष्य

● डॉ. विजय गर्ग

वर्ष 2027 की जलवायु पर अल नीनो का प्रभाव इस बात पर निर्भर करेगा कि यह घटना विकसित होती है या नहीं, कब शुरू होती है, कितनी शक्तिशाली होती है और मानवजनित वैश्विक तापवृद्धि के साथ इसकी क्या अंतःक्रिया होती है। यदि एक महत्वपूर्ण अल नीनो विकसित होता है, तो यह 2027 में वैश्विक औसत तापमान को और बढ़ाने में योगदान दे सकता है। अल नीनो महासागर और वायुमंडल के बीच ऊर्जा के वितरण को प्रभावित करता है और समुद्र में संचित गर्मी का कुछ हिस्सा वायुमंडल में पहुँच सकता है। दीर्घकालिक वैश्विक तापवृद्धि के साथ मिलकर यह प्रभाव अत्यधिक गर्म परिस्थितियों की आशंका बढ़ा सकता है।

पृथ्वी की जलवायु में तेजी से बदलाव हो रहे हैं और इन परिवर्तनों के केंद्र में महासागर हैं। समुद्र के बढ़ते तापमान, पिघलते हिमनद, वर्षा के बदलते स्वरूप और चरम मौसमी घटनाएँ वायुमंडल, महासागरों तथा मानव समाज के बीच संबंधों को नया रूप दे रही हैं। वर्ष 2027 की ओर देखते हुए एक महत्वपूर्ण प्रश्न सामने आता है—अल नीनो की संभावित स्थिति और वैश्विक तापमान में वृद्धि मिलकर पृथ्वी की जलवायु को किस प्रकार प्रभावित कर सकती हैं?

यद्यपि वर्ष 2027 की जलवायु परिस्थितियों का सटीक पूर्वानुमान अभी निश्चित रूप से नहीं किया जा सकता, फिर भी अल नीनो और महासागरों के लगातार गर्म होने की प्रक्रिया को समझकर हम संभावित पर्यावरणीय चुनौतियों के लिए बेहतर तैयारी कर सकते हैं।

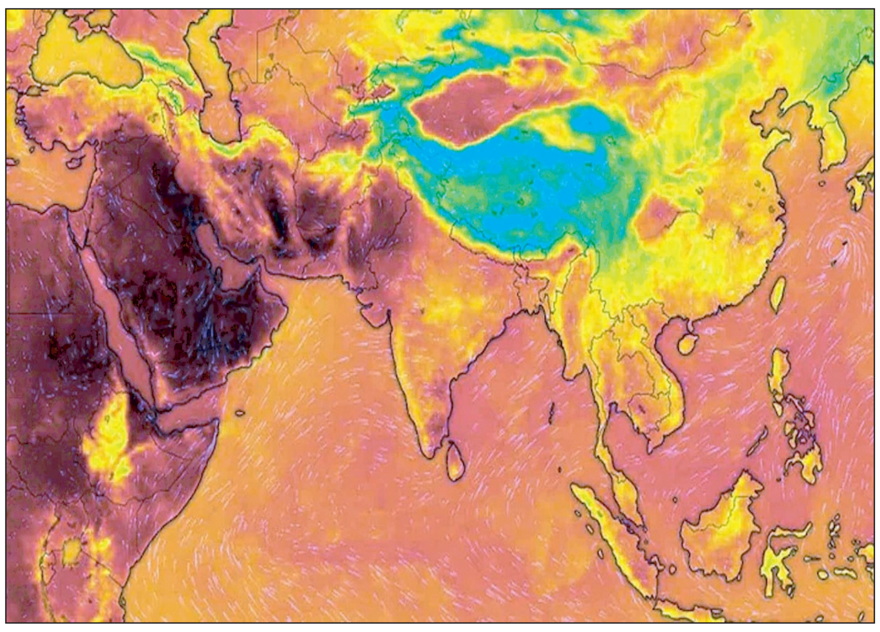

महासागर: पृथ्वी की जलवायु के नियामक

महासागर पृथ्वी के तापमान को नियंत्रित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। वे ग्रीनहाउस गैसों के कारण वातावरण में फँसी अतिरिक्त गर्मी का अधिकांश हिस्सा अवशोषित करते हैं और ऊर्जा की विशाल मात्रा को अपने भीतर संचित रखते हैं। समुद्री धाराएँ दुनिया के विभिन्न क्षेत्रों में गर्मी का परिवहन करती हैं, वर्षा को प्रभावित करती हैं तथा तूफानों के विकास और गति को निर्धारित करने में योगदान देती हैं।

लेकिन इस प्राकृतिक व्यवस्था की भी सीमाएँ हैं। मानवीय गतिविधियों से कार्बन डाइऑक्साइड और अन्य ग्रीनहाउस गैसों का उत्सर्जन बढ़ने के कारण महासागर लगातार गर्म हो रहे हैं। इससे समुद्री पारिस्थितिकी तंत्र प्रभावित होता है, प्रवाल भित्तियों के विरंजन का खतरा बढ़ता है और पानी के तापीय विस्तार के कारण समुद्र का स्तर ऊपर उठता है।

गर्म महासागर केवल समुद्री जल के तापमान में वृद्धि का संकेत नहीं हैं। वे वायुमंडलीय परिसंचरण, नमी की उपलब्धता, मानसून के व्यवहार और मौसम प्रणालियों के विकास को भी प्रभावित कर सकते हैं। महासागर और वायुमंडल एक-दूसरे से जुड़े हुए हैं, इसलिए एक में होने वाला परिवर्तन दूसरे को भी प्रभावित करता है।

अल नीनो क्या है?

अल नीनो एक प्राकृतिक जलवायु घटना है, जिसमें भूमध्यरेखीय प्रशांत महासागर के मध्य और पूर्वी भाग में समुद्र की सतह का तापमान सामान्य से अधिक हो जाता है। यह अल नीनो-दक्षिणी दोलन (ENSO) का हिस्सा है। इसके अंतर्गत ला नीना की स्थिति भी आती है, जिसमें समुद्र की सतह का तापमान सामान्य से कम हो जाता है। इनके बीच तटस्थ परिस्थितियाँ भी हो सकती हैं।

सामान्य परिस्थितियों में व्यापारिक पवनें गर्म सतही जल को पश्चिमी प्रशांत महासागर की ओर धकेलती हैं, जबकि दक्षिण अमेरिका के तट के पास अपेक्षाकृत ठंडा जल ऊपर उठता है। अल नीनो के दौरान ये पवनें कमजोर पड़ जाती हैं। गर्म जल पूर्व की ओर फैलने लगता है और वायुमंडलीय परिसंचरण के स्वरूप में बदलाव आता है।

इन परिवर्तनों का प्रभाव प्रशांत महासागर से दूर स्थित क्षेत्रों पर भी पड़ सकता है। कुछ क्षेत्रों में अत्यधिक वर्षा और बाढ़ की संभावना बढ़ती है, जबकि दूसरे क्षेत्रों में सूखा, गर्मी और जल संकट उत्पन्न हो सकता है। प्रभाव इस बात पर निर्भर करता है कि अल नीनो कितना शक्तिशाली है, कब विकसित होता है और अन्य जलवायु परिस्थितियाँ कैसी हैं।

यह समझना आवश्यक है कि प्रत्येक चरम मौसमी घटना का कारण अल नीनो नहीं होता। यह कुछ क्षेत्रों में विशेष प्रकार की मौसमी परिस्थितियों की संभावना को बढ़ा या घटा सकता है।

2027 में पृथ्वी की जलवायु को कैसे प्रभावित कर सकता है अल नीनो?

वर्ष 2027 की जलवायु पर अल नीनो का प्रभाव इस बात पर निर्भर करेगा कि यह घटना विकसित होती है या नहीं, कब शुरू होती है, कितनी शक्तिशाली होती है और मानवजनित वैश्विक तापवृद्धि के साथ इसकी क्या अंतःक्रिया होती है।

यदि एक महत्वपूर्ण अल नीनो विकसित होता है, तो यह 2027 में वैश्विक औसत तापमान को और बढ़ाने में योगदान दे सकता है। अल नीनो महासागर और वायुमंडल के बीच ऊर्जा के वितरण को प्रभावित करता है और समुद्र में संचित गर्मी का कुछ हिस्सा वायुमंडल में पहुँच सकता है। दीर्घकालिक वैश्विक तापवृद्धि के साथ मिलकर यह प्रभाव अत्यधिक गर्म परिस्थितियों की आशंका बढ़ा सकता है।

हालाँकि, यह मान लेना उचित नहीं होगा कि 2027 में निश्चित रूप से शक्तिशाली अल नीनो आएगा। वैज्ञानिक समुद्री तापमान, व्यापारिक पवनों, वायुमंडलीय दबाव और अन्य संकेतकों का अध्ययन करके इसकी संभावना का आकलन करते हैं।

1. वैश्विक तापमान में वृद्धि

अल नीनो का एक प्रमुख संभावित प्रभाव वैश्विक औसत तापमान में वृद्धि है। हाल के वर्षों ने दिखाया है कि प्राकृतिक जलवायु परिवर्तनशीलता और दीर्घकालिक वैश्विक तापवृद्धि मिलकर असाधारण गर्म परिस्थितियाँ पैदा कर सकती हैं।

यदि 2027 में अल नीनो विकसित होता है, तो पहले से गर्म हो रही पृथ्वी का तापमान और बढ़ सकता है। इससे विशेष रूप से उन क्षेत्रों में लू और अत्यधिक गर्मी का खतरा बढ़ सकता है, जहाँ पहले से तापमान बहुत अधिक रहता है।

अत्यधिक गर्मी मानव स्वास्थ्य, श्रमिकों की उत्पादकता, बिजली की माँग और कृषि उत्पादन को प्रभावित कर सकती है। बुजुर्गों, बच्चों, खुले में काम करने वाले श्रमिकों और शीतलन सुविधाओं से वंचित लोगों पर इसका प्रभाव अधिक गंभीर हो सकता है।

यहाँ प्राकृतिक जलवायु परिवर्तनशीलता और दीर्घकालिक तापवृद्धि के बीच अंतर समझना आवश्यक है। अल नीनो कुछ समय के लिए वैश्विक तापमान बढ़ा सकता है, लेकिन पृथ्वी के लगातार गर्म होने का मुख्य कारण मानवीय गतिविधियों से उत्पन्न ग्रीनहाउस गैसें हैं।

2. भारतीय मानसून और कृषि की चुनौतियाँ

भारत के लिए अल नीनो और दक्षिण-पश्चिम मानसून के बीच संबंध विशेष रूप से महत्वपूर्ण है। भारतीय कृषि का एक बड़ा हिस्सा मानसूनी वर्षा पर निर्भर करता है। यही वर्षा फसलों, भूजल पुनर्भरण और ग्रामीण आजीविका को सहारा देती है।

ऐतिहासिक रूप से अल नीनो की परिस्थितियों का संबंध भारत में सामान्य से कम मानसूनी वर्षा की बढ़ी हुई संभावना से रहा है। हालाँकि, यह संबंध हर वर्ष एक जैसा नहीं होता। कुछ अल नीनो वर्षों में भी अपेक्षाकृत अच्छी वर्षा हुई है। हिंद महासागर द्विध्रुव, क्षेत्रीय समुद्री तापमान, वायुमंडलीय परिसंचरण और अन्य कारक मानसून को प्रभावित कर सकते हैं।

यदि 2027 में अल नीनो विकसित होता है, तो वैज्ञानिकों और नीति-निर्माताओं को मानसून पर उसके संभावित प्रभावों का सावधानीपूर्वक आकलन करना होगा। केवल अल नीनो के आधार पर सूखे की निश्चित भविष्यवाणी करना उचित नहीं है।

किसानों को समय पर मौसम संबंधी जानकारी, उपयुक्त फसल किस्मों, कुशल सिंचाई, मिट्टी में नमी के संरक्षण और विविध फसल प्रणालियों से लाभ मिल सकता है। सरकारें सूखा प्रभावित क्षेत्रों के लिए आकस्मिक योजनाएँ तैयार कर सकती हैं और किसानों तक विश्वसनीय मौसम पूर्वानुमान पहुँचा सकती हैं।

पंजाब और अन्य कृषि प्रधान क्षेत्रों के लिए जल प्रबंधन विशेष महत्व रखता है। भूजल का संरक्षण, फसल विविधीकरण और सिंचाई की दक्षता बढ़ाना बदलती वर्षा परिस्थितियों के प्रति कृषि की संवेदनशीलता कम कर सकता है।

3. अत्यधिक वर्षा, बाढ़ और सूखा

अल नीनो वायुमंडल में गर्मी और नमी के वितरण को बदलकर दुनिया के विभिन्न हिस्सों में वर्षा के स्वरूप को प्रभावित करता है। कुछ क्षेत्रों में लंबे समय तक शुष्क परिस्थितियाँ रह सकती हैं, जबकि अन्य क्षेत्रों में असामान्य रूप से भारी वर्षा हो सकती है।

सूखे के कारण जलाशयों का स्तर घट सकता है, फसलें नष्ट हो सकती हैं, जंगलों में आग का खतरा बढ़ सकता है और पेयजल की कमी हो सकती है। दूसरी ओर, अत्यधिक वर्षा से जल निकासी व्यवस्था पर दबाव पड़ता है, अचानक बाढ़ आ सकती है और सड़कें, घर तथा कृषि भूमि क्षतिग्रस्त हो सकते हैं।

इन प्रभावों का स्वरूप सभी महाद्वीपों में एक जैसा नहीं होगा। स्थानीय भूगोल, मिट्टी की स्थिति, भूमि उपयोग, तूफानों के मार्ग और क्षेत्रीय मौसम प्रणालियाँ यह निर्धारित करती हैं कि किसी स्थान पर कितना नुकसान होगा।

इसलिए जलवायु के लिए तैयारी केवल वैश्विक पूर्वानुमान पर निर्भर नहीं रह सकती। सरकारों को क्षेत्रीय पूर्व चेतावनी प्रणालियाँ, बाढ़ जोखिम का आकलन, सूखे की निगरानी और संवेदनशील समुदायों तक समय पर सूचना पहुँचाने की व्यवस्था मजबूत करनी चाहिए।

4. महासागर, प्रवाल भित्तियाँ और समुद्री जीवन

महासागर दोहरी चुनौती का सामना कर रहे हैं—दीर्घकालिक तापवृद्धि और समुद्री तापमान में प्राकृतिक उतार-चढ़ाव। जब प्रवाल भित्तियों के आसपास समुद्री जल लंबे समय तक असामान्य रूप से गर्म रहता है, तो प्रवाल विरंजन की घटना हो सकती है। गंभीर या लंबे समय तक रहने वाला विरंजन प्रवालों की मृत्यु का कारण बन सकता है।

इससे उन समुद्री पारिस्थितिक तंत्रों को खतरा होता है, जो मत्स्य पालन, पर्यटन और तटीय समुदायों की आजीविका के लिए महत्वपूर्ण हैं।

समुद्री ताप लहरें मछलियों के वितरण को बदल सकती हैं, खाद्य श्रृंखलाओं को बाधित कर सकती हैं और समुद्री जीवों के प्रजनन तथा जीवित रहने की क्षमता को प्रभावित कर सकती हैं। कुछ प्रजातियाँ ठंडे पानी की ओर जा सकती हैं, जबकि दूसरी प्रजातियों के लिए बदलती परिस्थितियों के अनुकूल होना कठिन हो सकता है।

अल नीनो उष्णकटिबंधीय प्रशांत महासागर के कुछ हिस्सों में गर्मी बढ़ा सकता है, लेकिन समुद्री पारिस्थितिकी तंत्र पर इसका प्रभाव स्थान के अनुसार अलग-अलग होता है। व्यापक समस्या यह है कि जलवायु परिवर्तन प्राकृतिक घटनाओं के दौरान तापमान की मूल पृष्ठभूमि को लगातार ऊँचा कर रहा है।

समुद्री आवासों की रक्षा, प्रदूषण में कमी, प्रभावी समुद्री संरक्षित क्षेत्रों का विकास और ग्रीनहाउस गैसों के उत्सर्जन में कटौती समुद्री पारिस्थितिकी तंत्र की सुरक्षा के लिए आवश्यक हैं।

5. समुद्र का बढ़ता स्तर और तटीय समुदाय

वैश्विक तापवृद्धि के कारण समुद्र का स्तर मुख्यतः दो कारणों से बढ़ता है। पहला, गर्म होने पर समुद्री जल फैलता है। दूसरा, पिघलते हिमनदों और बर्फ की विशाल चादरों से अतिरिक्त पानी महासागरों में पहुँचता है।

अल नीनो समुद्र के स्तर में होने वाली दीर्घकालिक वृद्धि का एकमात्र कारण नहीं है। फिर भी यह महासागरीय क्षेत्रों में पानी के अस्थायी वितरण को बदल सकता है और कुछ स्थानों पर समुद्र के क्षेत्रीय स्तर को प्रभावित कर सकता है।

जब इन परिवर्तनों के साथ ऊँची ज्वार-भाटा की स्थिति, तूफानी लहरें और तटीय कटाव जुड़ते हैं, तो तटीय समुदायों के लिए खतरा बढ़ सकता है।

निचले द्वीपों, घनी आबादी वाले समुद्री तटों और तटीय शहरों को दीर्घकालिक योजना की आवश्यकता है। बेहतर जल निकासी, मैंग्रोव वनों की बहाली, मजबूत तटीय बुनियादी ढाँचा और सुनियोजित अनुकूलन उपाय संभावित नुकसान को कम कर सकते हैं।

6. बदलती जलवायु की मानवीय कीमत

जलवायु परिवर्तन केवल पर्यावरण का विषय नहीं है। यह स्वास्थ्य, समानता और आर्थिक सुरक्षा से भी जुड़ा हुआ है।

अत्यधिक गर्मी से निर्जलीकरण, हीट एग्जॉशन और जानलेवा हीटस्ट्रोक हो सकता है। सूखा खाद्य असुरक्षा बढ़ा सकता है, जबकि बाढ़ पेयजल को दूषित कर सकती है और स्वास्थ्य सेवाओं को बाधित कर सकती है। प्राकृतिक आपदाओं के कारण परिवार विस्थापित हो सकते हैं, बच्चों की शिक्षा प्रभावित हो सकती है और गरीबी बढ़ सकती है।

इस संकट का सबसे अधिक बोझ अक्सर उन लोगों पर पड़ता है, जिनका ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन में योगदान कम है, लेकिन जिनके पास आपदाओं से उबरने के संसाधन भी सीमित हैं।

इसलिए 2027 और उसके बाद की परिस्थितियों के लिए तैयारी में सार्वजनिक स्वास्थ्य सेवाओं को मजबूत करना, खुले में काम करने वाले श्रमिकों की सुरक्षा, आपातकालीन सेवाओं में सुधार और ग्रामीण तथा आर्थिक रूप से कमजोर समुदायों तक जलवायु संबंधी जानकारी पहुँचाना शामिल होना चाहिए।

क्या विज्ञान 2027 की जलवायु का पूर्वानुमान लगा सकता है?

आधुनिक जलवायु विज्ञान उपग्रहों, समुद्री बुआओं, मौसम केंद्रों, कंप्यूटर मॉडलों और ऐतिहासिक अभिलेखों की सहायता से पृथ्वी की बदलती परिस्थितियों की निगरानी करता है।

मौसमी पूर्वानुमान प्रणालियाँ यह अनुमान लगा सकती हैं कि अल नीनो, ला नीना या तटस्थ ENSO परिस्थितियों में से किसकी संभावना अधिक है। जलवायु मॉडल सामान्य से अधिक तापमान और कुछ क्षेत्रों में वर्षा के बदलते स्वरूप की संभावनाओं का भी आकलन कर सकते हैं।

फिर भी मौसमी पूर्वानुमानों की सीमाएँ हैं। उनकी सटीकता क्षेत्र और मौसम के अनुसार बदलती है। कई महीने पहले प्रत्येक तूफान, बाढ़ या लू की घटना का विश्वसनीय पूर्वानुमान लगाना संभव नहीं है।

इसलिए वैज्ञानिकों को भविष्यवाणियाँ निश्चित दावों के बजाय संभावनाओं के रूप में प्रस्तुत करनी चाहिए। संभावित अल नीनो को आपदा की निश्चित घोषणा नहीं, बल्कि तैयारी मजबूत करने के संकेत के रूप में देखना चाहिए।

2027 के नजदीक आने पर प्रशांत महासागर की लगातार निगरानी, मौसम विज्ञान संस्थानों के नियमित पूर्वानुमान और क्षेत्रीय जलवायु आकलन विशेष रूप से महत्वपूर्ण होंगे।

दुनिया को क्या करना चाहिए?

2027 में संभावित जलवायु चुनौतियाँ दो प्रकार के प्रयासों की आवश्यकता को रेखांकित करती हैं—अनुकूलन और उत्सर्जन में कमी।

अनुकूलन का अर्थ है उन जलवायु प्रभावों के लिए तैयारी करना, जिन्हें पूरी तरह टाला नहीं जा सकता। इसमें गर्मी से बचाव की योजनाएँ, सूखा सहने वाली फसलें, कुशल जल उपयोग, बाढ़-रोधी बुनियादी ढाँचा, पूर्व चेतावनी प्रणालियाँ और बेहतर आपदा प्रबंधन शामिल हैं।

जलवायु परिवर्तन को कम करना अर्थात उसके मूल कारणों पर कार्रवाई करना। जीवाश्म ईंधनों पर निर्भरता घटाना, स्वच्छ ऊर्जा का विस्तार करना, ऊर्जा दक्षता बढ़ाना, वनों की रक्षा करना और मीथेन उत्सर्जन कम करना भविष्य की तापवृद्धि को सीमित करने में मदद कर सकता है।

व्यक्ति भी जिम्मेदार ऊर्जा उपयोग, जल संरक्षण, पेड़ों की रक्षा और कचरे में कमी के माध्यम से योगदान दे सकते हैं। हालाँकि, व्यक्तिगत प्रयासों को प्रभावी सरकारी नीतियों, वैज्ञानिक अनुसंधान और अंतरराष्ट्रीय सहयोग का समर्थन मिलना आवश्यक है।

विद्यालयों और शैक्षणिक संस्थानों की भी महत्वपूर्ण भूमिका है। जलवायु शिक्षा युवाओं को प्राकृतिक जलवायु परिवर्तनशीलता और मानवजनित वैश्विक तापवृद्धि के बीच अंतर समझने, वैज्ञानिक जानकारी का मूल्यांकन करने और जिम्मेदार निर्णय लेने में सहायता कर सकती है।

निष्कर्ष: अनिश्चित भविष्य के लिए तैयारी

वर्ष 2027 की जलवायु प्राकृतिक प्रक्रियाओं और मानवीय गतिविधियों के संयुक्त प्रभाव से निर्धारित होगी। अल नीनो एक महत्वपूर्ण कारक बन सकता है, लेकिन उसके आने का समय और उसकी तीव्रता अभी निश्चित नहीं है। दूसरी ओर, यह स्पष्ट है कि महासागर अतिरिक्त गर्मी को अवशोषित कर रहे हैं और मानवजनित वैश्विक तापवृद्धि अनेक चरम मौसमी घटनाओं के जोखिम को बढ़ा रही है।

संभावित अल नीनो हमें याद दिलाता है कि पृथ्वी की जलवायु प्रणाली परस्पर जुड़ी हुई है। प्रशांत महासागर के तापमान में बदलाव दूर-दराज के महाद्वीपों के मौसम को प्रभावित कर सकता है और कृषि, जल संसाधनों, पारिस्थितिकी तंत्र तथा मानव स्वास्थ्य पर प्रभाव डाल सकता है।

सबसे जिम्मेदार प्रतिक्रिया न तो घबराहट है और न ही लापरवाही। आवश्यकता है वैज्ञानिक सतर्कता, विश्वसनीय पूर्वानुमान, प्रभावी योजना और ग्रीनहाउस गैसों के उत्सर्जन को कम करने के निरंतर प्रयासों की।

पृथ्वी की जलवायु का भविष्य केवल अल नीनो से निर्धारित नहीं होगा। यह उन निर्णयों पर भी निर्भर करेगा, जो मानवता आज लेती है। वैज्ञानिक ज्ञान और पर्यावरणीय जिम्मेदारी को साथ लेकर हम 2027 की चुनौतियों के लिए बेहतर तैयारी कर सकते हैं और आने वाली पीढ़ियों के लिए अधिक सुरक्षित, संतुलित तथा टिकाऊ भविष्य का निर्माण कर सकते हैं।

एआई या विनाश?

डॉ. विजय गर्ग

कृत्रिम बुद्धिमत्ता हमारे समय के सबसे शक्तिशाली तकनीकी विकासों में से एक है। यह शिक्षा, स्वास्थ्य सेवा, कृषि, संचार, उद्योग और वैज्ञानिक अनुसंधान के क्षेत्रों को तेजी से बदल रही है। मशीनें अब विशाल मात्रा में जानकारी का विश्लेषण कर सकती हैं, नई सामग्री तैयार कर सकती हैं, विभिन्न पैटर्न पहचान सकती हैं और ऐसे कार्य कर सकती हैं, जिनके लिए पहले मानवीय बुद्धिमत्ता की आवश्यकता होती थी। लेकिन इन उल्लेखनीय उपलब्धियों के साथ एक महत्वपूर्ण प्रश्न भी उठता है—*क्या एआई मानवता के लिए सबसे बड़ा वरदान बनेगी या इसका अनियंत्रित विकास विनाश का कारण बन सकता है?*

इसका उत्तर केवल इस बात पर निर्भर नहीं करता कि मशीनें कितनी बुद्धिमान बनती हैं, बल्कि इस पर भी निर्भर करता है कि मनुष्य उनका विकास और उपयोग कितनी जिम्मेदारी से करते हैं।

कृत्रिम बुद्धिमत्ता की संभावनाएँ

एआई में मानव जीवन को बेहतर बनाने की अपार क्षमता है। स्वास्थ्य सेवा के क्षेत्र में यह डॉक्टरों को मेडिकल इमेज का विश्लेषण करने, बीमारियों की पहचान करने और उपचार की रणनीतियाँ तैयार करने में सहायता कर सकती है। कृषि में एआई आधारित प्रणालियाँ किसानों को फसलों की निगरानी करने, मौसम का अनुमान लगाने, पौधों में रोगों की पहचान करने और पानी का अधिक कुशलता से उपयोग करने में मदद कर सकती हैं।

शिक्षा के क्षेत्र में एआई विद्यार्थियों की आवश्यकताओं के अनुसार व्यक्तिगत शिक्षण अनुभव प्रदान कर सकती है। यह कठिन विषयों को सरलता से समझाने, अध्ययन सामग्री तैयार करने और उन विद्यार्थियों की सहायता करने में उपयोगी है, जिन्हें गुणवत्तापूर्ण शैक्षिक संसाधन उपलब्ध नहीं हैं।

वैज्ञानिक एआई की सहायता से अनुसंधान को गति दे रहे हैं, जलवायु के पैटर्न का अध्ययन कर रहे हैं, संभावित दवाओं की खोज में सहायता प्राप्त कर रहे हैं और जटिल समस्याओं का समाधान खोज रहे हैं। उद्योगों में बुद्धिमान स्वचालन से उत्पादकता बढ़ाई जा सकती है, संसाधनों की बर्बादी कम की जा सकती है और कार्यस्थलों को अधिक सुरक्षित बनाया जा सकता है।

ये उपलब्धियाँ दर्शाती हैं कि एआई स्वभाव से विनाशकारी नहीं है। यदि इसका संचालन मानवीय मूल्यों और उचित सुरक्षा उपायों के आधार पर किया जाए, तो यह सामाजिक प्रगति का एक शक्तिशाली साधन बन सकती है।

अनियंत्रित एआई का खतरा

अनेक लाभों के बावजूद एआई गंभीर चुनौतियाँ भी प्रस्तुत करती है। सबसे बड़ी चिंताओं में से एक रोजगार पर इसका प्रभाव है। जैसे-जैसे मशीनें दोहराए जाने वाले कार्यों और कुछ कुशल कार्यों को करने में सक्षम होती जा रही हैं, वैसे-वैसे कई क्षेत्रों में काम करने वाले लोगों के सामने अनिश्चितता बढ़ सकती है। यदि उचित योजना, पुनः प्रशिक्षण और सामाजिक सहायता उपलब्ध नहीं कराई गई, तो तकनीकी प्रगति आर्थिक असमानता को बढ़ा सकती है।

दूसरा बड़ा खतरा भ्रामक सूचनाओं का प्रसार है। एआई ऐसी नकली तस्वीरें, वीडियो, आवाजें और लिखित संदेश तैयार कर सकती है, जो वास्तविक प्रतीत होते हैं। इनका उपयोग किसी की प्रतिष्ठा को नुकसान पहुँचाने, लोगों को गुमराह करने, धोखाधड़ी करने और सामाजिक विश्वास को कमजोर करने के लिए किया जा सकता है। जब लोगों के लिए वास्तविक और नकली जानकारी में अंतर करना कठिन हो जाता है, तो समाज के सामने एक गंभीर चुनौती खड़ी हो जाती है।

निजता भी चिंता का विषय है। एआई प्रणालियाँ बड़ी मात्रा में व्यक्तिगत जानकारी का विश्लेषण कर सकती हैं। यदि इस जानकारी को गैर-जिम्मेदाराना तरीके से एकत्रित, संग्रहित या उपयोग किया जाए, तो लोगों का अपनी निजी जिंदगी पर नियंत्रण कम हो सकता है। पक्षपातपूर्ण एल्गोरिदम भर्ती, ऋण वितरण, शिक्षा और अन्य महत्वपूर्ण निर्णयों में अनुचित परिणाम भी उत्पन्न कर सकते हैं।

साइबर हमलों और स्वायत्त हथियारों में एआई के उपयोग से जुड़े खतरे भी गंभीर हैं। सैन्य परिस्थितियों में लक्ष्यों की पहचान करने या तेजी से निर्णय लेने वाली प्रणालियाँ अनचाहे संघर्षों के जोखिम को बढ़ा सकती हैं। इसलिए जीवन-मृत्यु से जुड़े निर्णयों में मानवीय विवेक, जवाबदेही और प्रभावी मानवीय नियंत्रण अत्यंत आवश्यक हैं।

क्या मशीनें मनुष्य का स्थान ले लेंगी?

एआई द्वारा मनुष्यों की जगह ले लेने का डर स्वाभाविक है, लेकिन भविष्य को केवल मनुष्य और मशीनों के बीच प्रतिस्पर्धा के रूप में देखना उचित नहीं होगा। अनेक क्षेत्रों में एआई सभी मानवीय भूमिकाओं को समाप्त करने के बजाय काम करने के तरीकों और प्रकृति को बदल सकती है।

मशीनें सूचनाओं का तेजी से विश्लेषण कर सकती हैं, लेकिन मानव समाज को केवल गति और गणना की आवश्यकता नहीं है। सहानुभूति, नैतिक जिम्मेदारी, करुणा, सांस्कृतिक समझ और व्यक्तिगत संबंध मानवीय जीवन के महत्वपूर्ण आधार हैं।

एक मशीन शिक्षक को वैज्ञानिक सिद्धांत समझाने में सहायता कर सकती है, लेकिन एक संवेदनशील शिक्षक विद्यार्थी के भय को पहचान सकता है, उसमें आत्मविश्वास जगा सकता है और उसे कठिन परिस्थितियों में आगे बढ़ने की प्रेरणा दे सकता है। इसी प्रकार, एआई डॉक्टर को चिकित्सकीय जानकारी का विश्लेषण करने में मदद कर सकती है, लेकिन मरीज को विश्वास, आश्वासन और मानवीय संवेदना की भी आवश्यकता होती है।

वास्तविक चुनौती ऐसी व्यवस्था विकसित करना है, जिसमें तकनीक मानवीय क्षमताओं को मजबूत करे, न कि मनुष्य की गरिमा को कम करे।

एआई पर अंधनिर्भरता का खतरा

एआई पर अत्यधिक निर्भरता भी एक गंभीर जोखिम है। यदि विद्यार्थी बिना सोचे-समझे हर कार्य पूरा करने के लिए एआई का उपयोग करने लगें, तो उनकी तर्कशक्ति, रचनात्मकता और स्वतंत्र निर्णय लेने की क्षमता का विकास प्रभावित हो सकता है। यदि पेशेवर लोग मशीनों की प्रत्येक सलाह को बिना जाँच किए स्वीकार करने लगें, तो गलतियाँ अनदेखी रह सकती हैं। एआई प्रणालियाँ कभी-कभी गलत या भ्रामक उत्तर भी पूरे आत्मविश्वास के साथ प्रस्तुत करती हैं। इसलिए उनके उत्तरों की जाँच करना आवश्यक है, विशेषकर चिकित्सा, कानून, शिक्षा, विज्ञान और सार्वजनिक प्रशासन जैसे क्षेत्रों में।

तकनीक को जिज्ञासा बढ़ानी चाहिए, न कि उसका स्थान लेना चाहिए। विद्यार्थियों को सार्थक प्रश्न पूछना, प्रमाणों की जाँच करना, अनिश्चितताओं को समझना और स्वतंत्र निष्कर्ष निकालना सीखना चाहिए। एआई साक्षरता का अर्थ केवल बुद्धिमान तकनीकी साधनों का उपयोग करना नहीं, बल्कि उनके उत्तरों पर विवेकपूर्ण प्रश्न उठाने की क्षमता विकसित करना भी है।

एआई और शिक्षा का भविष्य

शिक्षा यह निर्धारित करने में निर्णायक भूमिका निभाएगी कि एआई मानवता के लिए कितनी उपयोगी सिद्ध होगी। विद्यालयों और महाविद्यालयों में विद्यार्थियों को कृत्रिम बुद्धिमत्ता की क्षमताओं, सीमाओं और नैतिक प्रभावों के बारे में शिक्षित किया जाना चाहिए।

शिक्षकों को विद्यार्थियों का मार्गदर्शन करना चाहिए, ताकि वे एआई का उपयोग अनुसंधान, अभ्यास, विचार-मंथन और समस्या समाधान के लिए कर सकें, लेकिन उनकी स्वतंत्र सोच भी बनी रहे। शैक्षिक कार्यों में मौलिक विचारों, व्यावहारिक प्रयोगों, चर्चा और आलोचनात्मक विश्लेषण को महत्व दिया जाना चाहिए, न कि केवल मशीन से तैयार सामग्री को दोहराने को। उद्देश्य मशीनों से गति की प्रतिस्पर्धा करना नहीं होना चाहिए। इसके बजाय जिज्ञासा, कल्पनाशक्ति, नैतिक विवेक और दूसरों को समझने की क्षमता जैसे गुणों का विकास करना चाहिए, जो मानवीय बुद्धिमत्ता को सार्थक बनाते हैं।

शिक्षकों को भी नई तकनीकों को सीखने और अपनी शिक्षण पद्धतियों को बदलती परिस्थितियों के अनुरूप ढालने के अवसर मिलने चाहिए। एआई को शिक्षकों की सहायता करनी चाहिए, न कि शिक्षा में मानवीय संबंधों को कमजोर करना चाहिए।

कृत्रिम बुद्धिमत्ता को कौन नियंत्रित करेगा?

सबसे महत्वपूर्ण प्रश्नों में से एक यह है कि एआई का विकास और उपयोग किसके नियंत्रण में होगा। यदि इसके लाभ कुछ शक्तिशाली कंपनियों या संस्थानों तक सीमित रह जाते हैं, तो समाज के संपन्न और वंचित वर्गों के बीच की खाई और बढ़ सकती है।

सरकारों, प्रौद्योगिकी कंपनियों, वैज्ञानिकों, शिक्षकों और नागरिक समाज को मिलकर सुरक्षा, निजता, पारदर्शिता और जवाबदेही के स्पष्ट मानक विकसित करने चाहिए। जोखिमपूर्ण उपयोगों के लिए सावधानीपूर्वक परीक्षण, स्वतंत्र मूल्यांकन और उचित मानवीय निगरानी आवश्यक है।

लोगों को महत्वपूर्ण स्वचालित निर्णयों पर सवाल उठाने और अनुचित निर्णयों को सुधारने का अवसर मिलना चाहिए। तकनीक विकसित करने वालों को भी संभावित खतरों की जिम्मेदारी स्वीकार करनी चाहिए। तकनीकी नवाचार के नाम पर उसके दुष्परिणामों की अनदेखी नहीं की जा सकती।

अंतरराष्ट्रीय सहयोग भी आवश्यक है, क्योंकि एआई से जुड़े जोखिम राष्ट्रीय सीमाओं तक सीमित नहीं रहते। साझा सिद्धांत और सुरक्षा उपाय इसके दुरुपयोग को कम करने के साथ-साथ उपयोगी अनुसंधान को आगे बढ़ाने में मदद कर सकते हैं।

मशीनों की बुद्धिमत्ता पर मानवीय मूल्यों का मार्गदर्शन

मूल प्रश्न यह नहीं है कि मशीनें कितनी बुद्धिमान बनेंगी, बल्कि यह है कि मनुष्य उनका उपयोग करने में कितने विवेकशील बनेंगे।

नैतिक जिम्मेदारी के बिना वैज्ञानिक प्रगति गंभीर समस्याएँ पैदा कर सकती है। जिस तकनीक से चिकित्सा अनुसंधान को सहायता मिलती है, उसका दुरुपयोग लोगों को प्रभावित करने और गुमराह करने के लिए भी किया जा सकता है। संचार को बेहतर बनाने वाली प्रणालियाँ झूठी सूचनाएँ फैला सकती हैं। इसी प्रकार, उत्पादकता बढ़ाने वाला स्वचालन आर्थिक असमानता को बढ़ा सकता है, यदि उसके लाभ समाज के सभी वर्गों तक उचित रूप से न पहुँचें।

इसलिए एआई का विकास मानवाधिकारों, निष्पक्षता, मानवीय गरिमा, पर्यावरणीय जिम्मेदारी और सामाजिक कल्याण को ध्यान में रखकर किया जाना चाहिए। नवाचार की सफलता केवल मुनाफे या कंप्यूटिंग शक्ति से नहीं, बल्कि मानव जीवन की गुणवत्ता में उसके योगदान से भी मापी जानी चाहिए।

निष्कर्ष: मानवता के सामने एक निर्णायक विकल्प

कृत्रिम बुद्धिमत्ता असाधारण अवसरों और गंभीर खतरों के बीच खड़ी है। यह बीमारियों से लड़ने, शिक्षा में सुधार करने, कृषि को मजबूत बनाने और वैज्ञानिक खोजों को गति देने में सहायता कर सकती है। लेकिन इसका गैर-जिम्मेदाराना उपयोग रोजगार, निजता, सामाजिक विश्वास, सुरक्षा और मानवीय स्वतंत्रता के लिए खतरा बन सकता है।

एआई स्वयं मानवता के भाग्य का निर्धारण नहीं करती। उसका प्रभाव मानवीय निर्णयों, संस्थाओं, कानूनों और मूल्यों से निर्धारित होगा। हमें न तो हर तकनीकी विकास से डरना चाहिए और न ही प्रत्येक नए आविष्कार को बिना सोचे-समझे स्वीकार करना चाहिए। हमें सावधानी के साथ वैज्ञानिक जिज्ञासा, जिम्मेदारी के साथ रचनात्मकता और करुणा के मार्गदर्शन में तकनीकी प्रगति की आवश्यकता है।

भविष्य ऐसा नहीं होना चाहिए, जिसमें मनुष्य अपना विवेक मशीनों के हवाले कर दें। इसके बजाय हमें ऐसी दुनिया बनानी चाहिए, जहाँ मशीनें मनुष्यों को अधिक स्पष्टता से सोचने, अधिक सुरक्षित जीवन जीने और अधिक न्यायपूर्ण समाज बनाने में सहायता करें।

एआई प्रगति की शक्ति भी बन सकती है और विनाश का कारण भी। निर्णायक बात केवल यह नहीं है कि हम कितनी बुद्धिमत्ता विकसित करते हैं, बल्कि यह है कि उसका उपयोग कितनी समझदारी और जिम्मेदारी से करते हैं।

लोकतंत्र की रक्षा के लिए दलबदलू नेताओं पर लगे आजीवन प्रतिबंध और रद्द हों सुविधाएं'

हरि ओम वाजपेयी।

नादान। भारतीय राजनीति में तेजी से पनप रही दलबदल की संस्कृति पर कड़ा प्रहार करते हुए 'नादान' ने देश की राजनीतिक व्यवस्था में व्यापक और कठोर सुधारों की मांग की है। उन्होंने कहा कि आज देश की एकता, अखंडता और जनमत की गरिमा को बनाए रखने के लिए दलबदल करने वाले जनप्रतिनिधियों पर न केवल कड़े कानून बनाने की जरूरत है, बल्कि उनकी सभी विशेषाधिकार सुविधाएं भी तुरंत प्रभाव से निरस्त की जानी चाहिए।जनमत का सौदा करने वालों की पेंशन व सुविधाएं हों निरस्त हो जो नेता चुनाव जीतने के बाद निजी स्वार्थ या सत्ता के लालच में दल बदलते हैं, उनकी विधायक अथवा सांसद के रूप में मिलने वाली सभी सरकारी सुविधाएं, भत्ते, आवास और आजीवन पेंशन तत्काल प्रभाव से रद्द की जाएं क्योकि जनता के करों के पैसे से ऐसे नेताओं को पोषित करना लोक तंत्र और आम नागरिकों के साथ सीधा अन्याय है। जो भी एक दल से दूसरे दल या एक सदन से दूसरे सदन में जाने की इच्छा रखने वाले प्रतिनिधि को सबसे पहले अपने वर्तमान पद से त्यागपत्र देना अनिवार्य किया जाए तथा दलबदल करने वाले नेताओं पर कम से कम एक निश्चित समय पाच वर्ष के लिए चुनाव लड़ने पर पूर्ण प्रतिबंध लगाया जाए, ताकि राजनीति में क्रय-विक्रय की संस्कृति पर विराम लग सके आज नेता और जनता के लिए समान कानून हो जब देश का आम नागरिक जब पीड़ित होता है तो वह न्याय के लिए सर्वोच्च न्यायालय का द्वार खटखटाता है। कानून केवल आम जनता को अनुशासित करने के लिए नहीं, बल्कि जनप्रतिनिधियों को भी जवाबदेह बनाने के लिए होना चाहिए। आज जरूरत है सर्वोच्च न्यायालय को अपनी संवैधानिक शक्तियों का प्रयोग करते हुए राजनीति के शुद्धीकरण के लिए कठोर दिशा-निर्देश जारी करने चाहिए। दलबदल से जुड़े मामलों का निपटारा समय सीमा अधिकतम ९० दिन के भीतर करना अनिवार्य किया जाए। राजनीतिक अस्थिरता और जनमत के अनादर से देश की आंतरिक सुरक्षा, विकास नीतियां और लोकतांत्रिक ढांचा कमजोर होता है यदि नागरिकों का चुनाव और लोकतंत्र से विश्वास उठ गया, तो देश की अखंडता पर विपरीत असर पड़ेगा। इसलिए इस कठोर कानून का बनना अब राष्ट्रहित में अनिवार्य हो चुका है।

₹दलबदल करने वाले नेताओं पर कठोर आर्थिक और राजनीतिक प्रतिबंध लगाना अब केवल एक विचार या सुझाव नहीं, बल्कि भारत के लोकतंत्र के अस्तित्व और देश की अखंडता की रक्षा के लिए आज समय की सबसे बड़ी पुकार है।

भाजपा नेता ने उपराष्ट्रपति का स्वागत किया

खूंटी।एम्स देवघर के द्वितीय दीक्षांत समारोह में शामिल होने देवघर पहुंचे भारत के माननीय उपराष्ट्रपति श्री सी. पी. राधाकृष्णन का भारतीय जनता पार्टी के राष्ट्रीय मंत्री एवं राज्यसभा सांसद डॉ. प्रदीप वर्मा ने गर्मजोशी के साथ स्वागत एवं अभिनंदन किया। इस अवसर पर डॉ. वर्मा ने उपराष्ट्रपति के देवघर आगमन पर प्रसन्नता व्यक्त की।

नव श्री केशव रामलीला कमेटी, रोहिणी

त्रिदेव थीम पर बना तीन मंजिला नव श्री केशव रामलीला कमेटी का मंच लोगों के बीच रहा आकर्षण का केन्द्र

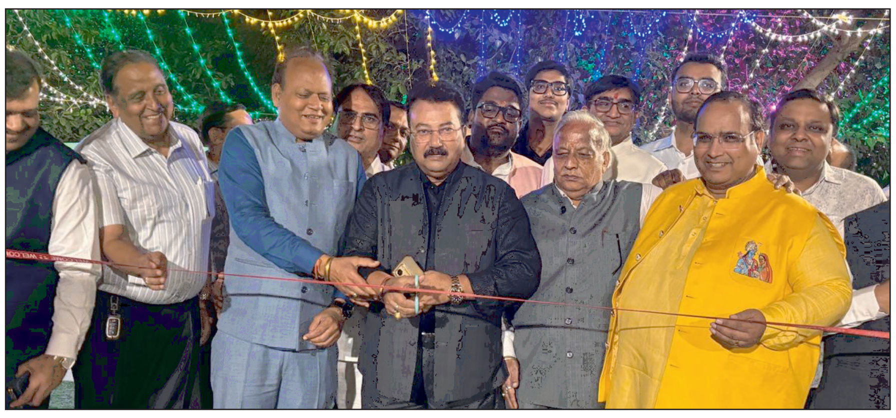

गणेश वंदना व शिव पार्वती संवाद से शुरू हुई नव श्री केशव रामलीला

परिवहन विशेष न्यूज

नई दिल्ली: दिल्ली के रोहिणी स्थित जापानी पार्क, नजदीक बोट क्लब, सेक्टर 11 के सामने नव श्री केशव रामलीला कमेटी की रामलीला गणेश वंदना व शिव पार्वती संवाद से शुरू हुई। नव श्री केशव रामलीला कमेटी के चेयरमैन पुष्पेन्द्र रस्तोगी ने बताया कि त्रिदेव थीम पर बने इस बार तीन मंजिला भव्य स्टेज पर लीला का मंचन हो रहा है, जो लोगों के बीच आकर्षण का केन्द्र बना हुआ है। हर बार की तरह इस बार भी रामलीला का भव्य आयोजन किया जा रहा है। 10 दिन तक उत्सव का माहौल रहेगा। उन्होंने यह भी बताया कि रामलीला में आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस, कंप्यूटर ग्राफिक्स, एनीमेशन, थ्री डी मैपिंग, एलईडी स्क्रीन व डिजिटल साउंड जैसी तकनीकों का उपयोग किया जा रहा है। शिव पार्वती संवाद में अपने दृश्यों को जीवंत बनाने के लिए कलाकार अपने संवादों में चौपाइयों को भी इस्तेमाल कर रहे थे। लोगों ने अपने स्थान पर खड़े होकर इन कलाकारों का जोरदार तालियों से इनका हौसला बढ़ाया। श्री राम पथिक कला केन्द्र के कलाकरों द्वारा रामलीला का मंचन किया जा रहा है।

इस अवसर पर संस्था के प्रेरणा स्रोत व दिल्ली के महापौर प्रवेश वाही, चेयरमैन पुष्पेन्द्र रस्तोगी, अध्यक्ष जय किशन बंसल, एडिशनल चेयरमैन संजय कुमार गुप्ता, महामंत्री कृष्ण जिंदल, कोषाध्यक्ष दिनेश सर्राफ, लीला महामंत्री हरि किशन मित्तल, सी. वाईस चेयरमैन पुरुषोत्तम लाल सिंघल सहित कई गणमान्य लोग उपस्थित थे। संस्था द्वारा आयोजित भव्य कार्यक्रम का यह 30वां वर्ष है।

संस्था चेयरमैन पुष्पेन्द्र रस्तोगी बताया कि यहां पर सुरक्षा के भी पुख्ता इंतजाम किए गए हैं। सुरक्षा में प्राइवेट वालंटियर, सीसीटीवी कैमरा, हैंड मेटल डिटेक्टर के साथ दिल्ली पुलिस के जवान के नेतृत्व में सुरक्षा का इंतजाम है। उन्होंने बताया कि इंजीनियरों और शिक्षाविदों का एक विशेष समूह इस कार्यक्रम का प्रबंधन कर रहा है। इसमें 100 से ज्यादा स्टॉल लगाए गए हैं और मेले में हर प्रकार के झूले हैं, जो कि बच्चों के लिए आकर्षण का केन्द्र बने हुए हैं। नव श्री केशव रामलीला कमेटी में सिंगल यूज प्लास्टिक पर पूर्ण रुप से रोक रहेगी व पर्यावरण की रक्षा एवं प्रदूषणमुक्त रामलीला मंचन को ध्यान में रखते हुए आतिशबाजी के लिए पटाखों का प्रयोग नहीं किया जाएगा। उन्होंने बताया की रामलीला मैदान में सैकड़ों गाडियों के पार्किग की व्यवस्था की गई। सैकड़ों लोगों के बैठने की व्यवस्था भी है, वहीं मेले का भी आयोजन जा रहा। रामलीला मैदान में जगह जगह एलईडी स्क्रील लगाई गई है, जिससे लोग रामलीला देख सकते हैं। नव श्री केशव रामलीला कमेटी द्वारा डांडिया नाईट, मेला सहित कई अन्य कार्यक्रमों का आयोजन होगा।

11 अक्टूबर 2026 से 18 अक्टूबर 2026 तक प्रतिदिन यहां विभिन्न क्षेत्र से जुडे गणमान्य व्यक्ति पधारेंगे व रोज बॉलीवुड व टीवी धारावाहिकों के सुरप्रसिद्ध कलाकार अपनी प्रस्तुति देगें, जिसमें फिल्म हनुमान अंश के बाल कलाकार विहान, बॉलीवुड अभिनेत्री डेलनाज़ ईरानी, प्रसिद्ध कवयित्री डॉ. अनामिका जैन अम्बर, अनुपमा सीरियल के फिल्मी कलाकार वरुण कस्तूरिया, अक्षिता वात्सायन, क्योंकि सास भी कभी बहू थी की कलाकार तनिषा मेहता सहित कई नामी हस्तियां उपस्थित होगी

परिवहन विशेष - संपादकीय विश्लेषणात्मक - जंतर-मंतर 2.0

जंतर - मंतर 2.0 का महासंग्राम! हिरासत - बैरिकेडिंग और मानवाधिकारों पर महासवाल!

सड़कों से सुप्रीम कोर्ट और संयुक्त राष्ट्र तक गूंजा युवा आंदोलन – क्या लोकतंत्र की सबसे बड़ी अग्निपरीक्षा ले रहा है सत्ता तंत्र?

लेखक: एडवोकेट किशन सनमुखदास भावनानी, गोंदिया, महाराष्ट्र

प्रस्तावना: दिल्ली का जंतर-मंतर एक बार फिर राष्ट्रीय राजनीति, नागरिक स्वतंत्रता और लोकतांत्रिक जवाबदेही की बहस के केंद्र में है। मुख्य निर्वाचन आयुक्त के इस्तीफे और चुनावी सुधारों की मांग को लेकर 10 अक्टूबर को कॉकरोच जनता पार्टी (सीजेपी) के प्रदर्शन पर पुलिस की कार्रवाई ने ऐसा विवाद खड़ा कर दिया, जो अब सुप्रीम कोर्ट की 11 अक्टूबर 2026 को विशेष रविवार सुनवाई और संयुक्त राष्ट्र मानवाधिकार कार्यालय की चिंता तक पहुंच गया है। भारत ने संयुक्त राष्ट्र की टिप्पणी को अपने आंतरिक मामलों में अनुचित हस्तक्षेप बताते हुए खारिज किया है।

1. तथ्य - पांच बड़े सवाल

1. क्या शांतिपूर्ण विरोध के अधिकार को पर्याप्त संरक्षण मिला?

2. क्या सार्वजनिक व्यवस्था के नाम पर लगाए गए प्रतिबंध आनुपातिक थे?

3. क्या सार्वजनिक परिवहन और इंटरनेट सेवाओं को प्रभावित करना ज़रूरी था?

4. क्या हिरासत की प्रक्रिया कानून के अनुरूप रही?

5. क्या चुनावी संस्थाओं पर उठ रहे सवालों का जवाब संवाद से दिया जाएगा या टकराव से?

2. तथ्य - जंतर-मंतर 1.0 से 2.0 तक

- सीजेपी ने पहले भी युवाओं के मुद्दों को लेकर प्रदर्शन किए थे। शिक्षा मंत्री के इस्तीफे के बाद इस आंदोलन को अपनी राजनीतिक ताकत के उदाहरण के रूप में प्रस्तुत किया गया।

- अब 10 अक्टूबर के प्रदर्शन का केंद्र मुख्य निर्वाचन आयुक्त का इस्तीफा और मतदाता सूची के विशेष गहन पुनरीक्षण (SIR) में कथित अनियमितताओं की जांच है।

- आंदोलनकारियों का आरोप है कि मतदाता सूची से बड़े पैमाने पर नाम हटने से चुनावी निष्पक्षता प्रभावित हो सकती है। दूसरी ओर, निर्वाचन आयोग और सत्तारूढ़ पार्टी ने आरोपों को खारिज किया है। इसलिए इन दावों को सिद्ध तथ्य नहीं, बल्कि जांच और जवाबदेही की मांग से जुड़े आरोपों के रूप में देखना चाहिए।

3. तथ्य - अनुमति क्यों नहीं मिली? सुरक्षा बनाम मौलिक अधिकार

- दिल्ली पुलिस ने 10 अक्टूबर को जंतर-मंतर पर प्रस्तावित प्रदर्शन की अनुमति देने से इनकार कर दिया।

- पुलिस के अनुसार, आयोजकों ने 7 अक्टूबर को सूचना दी थी, जबकि सामान्य प्रक्रिया के तहत कम से कम दस दिन पहले आवेदन अपेक्षित होता है।

- पुलिस ने पिछले प्रदर्शनों में नियमों और लिखित आश्वासनों के कथित उल्लंघन, यातायात संबंधी कठिनाइयों तथा कानून-व्यवस्था और सार्वजनिक सुरक्षा की आशंकाओं का भी हवाला दिया।

- संवैधानिक आधार: अनुच्छेद 19(1)(क) अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता और अनुच्छेद 19(1)(ख) शांतिपूर्वक तथा बिना हथियार एकत्र होने का अधिकार देता है। लेकिन ये अधिकार पूर्णतः निरंकुश नहीं हैं; सार्वजनिक व्यवस्था पर उचित प्रतिबंध लगाए जा सकते हैं।

- धारा 163: भारतीय नागरिक सुरक्षा संहिता, 2023 की धारा 163 के तहत निषेधात्मक आदेश लागू होने की बात सामने आई। इसका प्रयोग भी कानून के अनुसार होना चाहिए।

4. तथ्य - हजारों हिरासत, मेट्रो बंदी और सुप्रीम कोर्ट की चिंता

- समाचार एजेंसियों की रिपोर्टों में दो हजार से अधिक लोगों को हिरासत में लिए जाने का उल्लेख है; कुछ रिपोर्टों में इससे अधिक आंकड़े भी सामने आए।

- सीजेपी के संस्थापक तथा सह-संयोजक और एक अन्य को दिल्ली पहुंचने पर हिरासत में लिए जाने की खबर आई। एक यूट्यूबर और विपक्षी नेताओं सहित अन्य लोगों की हिरासत का मामला भी चर्चा में रहा।

- दिल्ली के कई मेट्रो स्टेशनों पर प्रवेश प्रतिबंधित किए गए और रेल सेवाओं में व्यवधान की खबरें आईं।

- वरिष्ठ अधिवक्ताओं ने अदालत में दावा किया कि लोगों को प्रदर्शन स्थल से दूर क्षेत्रों और ट्रेनों से भी हिरासत में लिया गया, इंटरनेट सेवाएं बाधित हुईं और वकीलों, महिलाओं, छात्रों तथा पत्रकारों के साथ दुर्व्यवहार हुआ। ये आरोप सुनवाई के दौरान प्रस्तुत किए गए थे; इन्हें सभी मामलों में न्यायिक रूप से सिद्ध निष्कर्ष नहीं माना जाना चाहिए।

- सुप्रीम कोर्ट ने 9 अक्टूबर को ही सार्वजनिक परिवहन पर पूर्ण प्रतिबंध के बजाय नियंत्रित संचालन और आम जनता की सुविधा का ध्यान रखने पर जोर दिया था।

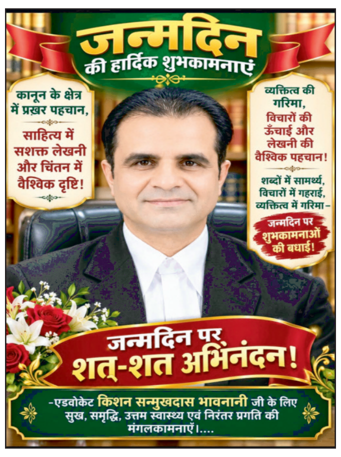

5. तथ्य - रविवार को सुप्रीम कोर्ट की विशेष सुनवाई

- 11 अक्टूबर को न्यायमूर्ति जॉयमाल्या बागची और न्यायमूर्ति वी. मोहना की विशेष पीठ ने सुनवाई की।

- पहली: बंदी प्रत्यक्षीकरण याचिका - हिरासत की वैधता पर सवाल।

- दूसरी: अवमानना याचिका - आरोप कि अधिकारियों ने 9 अक्टूबर के निर्देशों का पालन नहीं किया।

- सुप्रीम कोर्ट के निर्देश: मेट्रो सेवाएं सामान्य कार्यक्रम के अनुसार चलाने, इंटरनेट सेवाओं को कानून के विपरीत बाधित न करने, बैरिकेडिंग की समीक्षा करने और बिना वैधानिक प्रक्रिया किसी को हिरासत में नहीं लेने पर जोर। धारा 163 के आदेश से प्रभावित क्षेत्र के बाहर लोगों की आवाजाही और शांतिपूर्ण एकत्र होने के अधिकार को अनावश्यक रूप से नहीं रोका जाना चाहिए। न्यायालय परिसर के बाहर धारा 163 का उल्लेख करने वाला बोर्ड हटाने का निर्देश भी दिया गया। संबंधित अधिकारियों से जवाब मांगते हुए कारण बताओ नोटिस जारी किए गए।

6. तथ्य - तीन आंदोलनकर्ताओं की रिहाई और भावनात्मक प्रसंग

- सीजेपी संस्थापक की 85 वर्षीय दादी का महाराष्ट्र के हिंगोली जिले में निधन हुआ। वे दिल्ली में हिरासत में थे, जिसके कारण अंतिम संस्कार में शामिल होने को लेकर सवाल उठे।

- दिल्ली पुलिस ने कहा कि उनको निधन की जानकारी संवेदनशीलता के साथ दी गई थी और अंतिम संस्कार के लिए गृह नगर जाने में मानवीय आधार पर सहायता की पेशकश की गई थी। दूसरी ओर सीजेपी और परिवार से जुड़े लोगों ने सूचना और संपर्क को लेकर सवाल उठाए।

- 11 अक्टूबर को कार्यकारी मजिस्ट्रेट के समक्ष पेश किए जाने के बाद, सीजेपी प्रमुख व अन्य दो को रिहा कर दिया गया। रिपोर्टों के मुताबिक, रिहाई की शर्त एक वर्ष तक शांति बनाए रखने से संबंधित थी।

7. तथ्य - संयुक्त राष्ट्र पहुंचा मामला

- संयुक्त राष्ट्र मानवाधिकार उच्चायुक्त कार्यालय (OHCHR) के प्रवक्ता थमीम अल-खीथान ने प्रदर्शनकारियों, आंदोलन के नेताओं, नागरिक समाज संगठनों के सदस्यों, वकीलों और पत्रकारों को हिरासत में लिए जाने की खबरों पर चिंता व्यक्त की।

- कार्यालय ने अधिकारियों से शांतिपूर्ण सभा के अधिकार का सम्मान करने, कानून लागू करने वाले कर्मियों से अत्यधिक संयम बरतने और मनमाने ढंग से हिरासत में लिए गए लोगों को तत्काल तथा बिना शर्त रिहा करने का आग्रह किया।

- यह टिप्पणी मानवाधिकार संबंधी चिंता और अपील थी; इसे भारत के विरुद्ध किसी न्यायिक फैसले या औपचारिक दंडात्मक कार्रवाई के रूप में प्रस्तुत करना गलत होगा।

8. तथ्य - भारत का पलटवार

- जिनेवा स्थित संयुक्त राष्ट्र में भारत के स्थायी मिशन ने 10 अक्टूबर की देर रात सोशल मीडिया मंच एक्स पर कड़ा वक्तव्य दिया।

- भारत ने OHCHR की चिंताओं को गलत संदर्भ पर आधारित और देश के आंतरिक मामलों में अनावश्यक हस्तक्षेप बताया।

- भारत का तर्क: वह दुनिया का सबसे बड़ा लोकतंत्र है, जहां शांतिपूर्ण तरीके से एकत्र होने का अधिकार संविधान द्वारा सुनिश्चित है और मजबूत संस्थाओं, स्वतंत्र न्यायपालिका तथा स्वतंत्र मीडिया से संरक्षित है। हर लोकतंत्र की तरह यहां भी सार्वजनिक व्यवस्था बनाए रखने के लिए उचित प्रतिबंध लागू होते हैं, अधिकारी कानून के अनुसार कार्य करते हैं और शिकायतों के निवारण के लिए अदालतें उपलब्ध हैं।

मुख्य बिंदु - संपादकीय निष्कर्ष:

1. असली परीक्षा सत्ता की ताकत की नहीं, लोकतंत्र के संतुलन की है।

2. प्रशासन का दायित्व सार्वजनिक सुरक्षा, यातायात और कानून-व्यवस्था बनाए रखना है। नागरिकों को शांतिपूर्ण विरोध, अपनी बात रखने और न्यायालय तक पहुंचने का संवैधानिक अधिकार प्राप्त है।

3. अब असली कसौटी यह होगी कि क्या सरकार, पुलिस और प्रदर्शनकारी संवाद का रास्ता अपनाते हैं; क्या चुनावी अनियमितताओं के आरोपों पर तथ्यपरक जवाब सामने आते हैं; और क्या अदालत की निगरानी में नागरिक अधिकारों तथा सार्वजनिक व्यवस्था के बीच संतुलन सुनिश्चित किया जाता है।

4. लोकतंत्र की मजबूती इस बात से नहीं मापी जाती कि विरोध की आवाज कितनी आसानी से रोकी जा सकती है, बल्कि इससे मापी जाती है कि संस्थाएं उस आवाज का जवाब कितनी पारदर्शिता, निष्पक्षता और संवैधानिक मर्यादा के साथ देती हैं।

श्रमिकों के रोजगार को बंधक बनाकर आंदोलन न करें युवा : डॉ. दीपेन्द्र चाहर

स्वतंत्र सिंह भुल्लर नई दिल्ली

परिवहन विशेष समाचार पत्र दैनिक

नई दिल्ली। भारतीय मजदूर संघ, दिल्ली प्रदेश के महामंत्री डॉ. दीपेन्द्र चाहर ने राजधानी में प्रदर्शनों के कारण बाजारों, सार्वजनिक परिवहन और यातायात व्यवस्था पर पड़ रहे असर को लेकर चिंता जताई है। उन्होंने कहा कि कनॉट प्लेस, जनपथ, पालिका बाजार और सदर बाजार जैसे प्रमुख व्यापारिक क्षेत्रों में कामकाज प्रभावित होने तथा मेट्रो स्टेशनों पर पाबंदियों और यातायात मार्गों में बदलाव से असंगठित क्षेत्र के श्रमिकों की आजीविका पर असर पड़ रहा है।

डॉ. चाहर ने समाचार पत्रों में प्रकाशित रिपोर्टों का हवाला देते हुए कहा कि एक दिन में 2,000 करोड़ रुपये और नौ दिनों में 5,000 करोड़ रुपये से अधिक का व्यापार प्रभावित होने की बात सामने आई है। उन्होंने कहा कि व्यापारिक गतिविधियां प्रभावित होने का असर केवल कारोबारियों तक सीमित नहीं रहता, बल्कि होटलों में काम करने वाले कर्मचारियों, दुकानों के सेल्समैन, रेहड़ी-पटरी संचालकों, ऑटो-टैक्सी चालकों, वितरण कर्मियों, घरेलू कामगारों और दिहाड़ी मजदूरों की कमाई पर भी पड़ता है। नवरात्र, रामलीला और दीपावली से पहले का समय इन कामगारों के लिए अतिरिक्त कमाई और परिवार के खर्चों की व्यवस्था करने के लिहाज से महत्वपूर्ण होता है।

उन्होंने कहा कि भारतीय मजदूर संघ शांतिपूर्ण विरोध के संवैधानिक अधिकार का सम्मान करता है, लेकिन विरोध के दौरान कानून-व्यवस्था बिगड़ने और आम लोगों की आजीविका प्रभावित होने की स्थिति से बचना चाहिए। डॉ. चाहर ने 20 जुलाई 2026 को जंतर-मंतर पर हुए घटनाक्रम का उल्लेख करते हुए कहा कि ऐसे मामलों में पुलिस और प्रशासन के लिए कानून-व्यवस्था बनाए रखना महत्वपूर्ण है। उन्होंने दुकानों में लूटपाट और श्रमिक बस्तियों में अशांति की आशंका को लेकर भी चिंता जताई।

डॉ. चाहर ने कहा कि मेट्रो और बस सेवाओं में व्यवधान, मार्गों में बदलाव और जाम के कारण कर्मचारियों को कार्यस्थल तक पहुंचने में परेशानी हो सकती है। इससे उनकी मजदूरी और वेतन भी प्रभावित होने की आशंका रहती है। उन्होंने कहा कि ऐसी स्थिति राष्ट्रहित, उद्योगहित और श्रमिकहित के अनुकूल नहीं है।

भारतीय मजदूर संघ की प्रमुख मांगें

भारतीय मजदूर संघ, दिल्ली प्रदेश ने मांग की कि जंतर-मंतर जैसे संवेदनशील क्षेत्र से स्थायी प्रदर्शन स्थल को किसी अन्य उपयुक्त स्थान पर स्थानांतरित करने पर विचार किया जाए। त्योहारी सीजन में प्रभावित असंगठित श्रमिकों, रेहड़ी-पटरी संचालकों और दिहाड़ी मजदूरों के लिए दिल्ली सरकार विशेष राहत और रोजगार संबंधी उपायों की घोषणा करे। विरोध प्रदर्शनों के दौरान मेट्रो, बस और आवश्यक परिवहन सेवाओं को पूरी तरह बाधित करने के बजाय वैकल्पिक सुरक्षित मार्गों से संचालित किया जाए। साथ ही, डिजिटल माध्यमों पर भ्रामक वीडियो फैलाने वालों के खिलाफ नियमानुसार कार्रवाई की जाए।

डॉ. चाहर ने कहा कि युवाओं की ऊर्जा देश के निर्माण में लगनी चाहिए, न कि ऐसी गतिविधियों में जिनसे आम लोगों और श्रमिकों की आजीविका प्रभावित हो। उन्होंने युवाओं से अपील की कि वे श्रमिकों के रोजगार को बंधक बनाकर आंदोलन न करें।

टेंपल आफ लिबरलाइजेशन एंड वेलफेयर अलाइड ट्रस्ट पंजीकृत https://tolwa.com/about.html | tolwaindia@gmail.com, tolwadelhi@gmail.com

पिंकी कुंडू

आज का साइबर सुरक्षा विचार: Free AI Vulnerability Scanner Launched by Anthropic: A reliable OSS scanner

आप जिन ऐप्स का उपयोग करते हैं, वे OSS Scanner से होकर गुजरने पर और सुरक्षित हो जाते हैं।

Anthropic का नया OSS Scanner एक मुफ्त AI संचालित vulnerability scanner है जो ओपन सोर्स सॉफ़्टवेयर के लिए बनाया गया है।

यह Claude के सबसे शक्तिशाली मॉडलों का उपयोग करके सुरक्षा खामियों को स्वतः पहचानता है, विस्तृत बग रिपोर्ट तैयार करता है, और पैच भी सुझाता है — वह भी मेंटेनर्स के लिए बिल्कुल मुफ्त।

मुख्य लाभ :

1. सभी के लिए मजबूत सुरक्षा

भले ही आप डेवलपर न हों, आप रोज़ ऐसे ऐप्स का उपयोग करते हैं जो ओपन सोर्स सॉफ़्टवेयर पर आधारित हैं — WhatsApp, बैंकिंग ऐप्स, ब्राउज़र, UPI ऐप्स आदि। यदि ओपन सोर्स लाइब्रेरी सुरक्षित होती हैं, तो आपका फोन, आपके ऐप्स और आपका डेटा भी सुरक्षित होता है। Anthropic का स्कैनर अकादमिक बेंचमार्क पर 85%+ vulnerabilities खोजता है, जबकि पिछले वर्ष यह <20% था।

2. मुफ्त, उच्च गुणवत्ता वाली AI बग रिपोर्ट

स्कैनर यह तैयार करता है:

* vulnerability की व्याख्या
* उसे दोहराने के चरण
* सुझाया गया पैच
* बग कब आया (यदि पता लगाया जा सके)

यह मेंटेनर्स को समस्याएँ जल्दी ठीक करने में मदद करता है — जिससे साइबर हमलों की संभावना कम होती है।

3. मानव समीक्षा से तेज़ खोज

6 महीनों में AI ने 29,000+ vulnerability candidates खोजे, जबकि मनुष्य केवल ₹6,000 की पुष्टि कर पाए। AI अब कुछ ही मिनटों में समस्याएँ ढूँढ सकता है, जिससे रक्षकों को समय का लाभ मिलता है।

4. महत्वपूर्ण इंफ्रास्ट्रक्चर की सुरक्षा

Project Glasswing ऐसे व्यापक रूप से उपयोग किए जाने वाले सॉफ़्टवेयर को स्कैन करता है जैसे: NGINX, jq, Mastodon, ImageMagick, FreeRDP, MinIO — ये सॉफ़्टवेयर अप्रत्यक्ष रूप से बैंकों, सरकारी प्रणालियों और एंटरप्राइज़ ऐप्स को शक्ति देते हैं।

5. कोई लागत नहीं, कोई हार्डवेयर नहीं चाहिए

ओपन सोर्स मेंटेनर्स को सर्वर या महंगे टूल्स की आवश्यकता नहीं होती। Anthropic कंप्यूट लागत स्वयं वहन करता है।

एक आम व्यक्ति इसका उपयोग कैसे कर सकता है या इससे कैसे लाभ उठा सकता है :

भले ही OSS Scanner प्रोजेक्ट मेंटेनर्स के लिए बनाया गया है, आम उपयोगकर्ता भी इससे व्यावहारिक रूप से लाभ उठा सकते हैं:

1. सुरक्षित ओपन सोर्स लाइब्रेरी पर आधारित ऐप्स का उपयोग करें

जब लोकप्रिय प्रोजेक्ट OSS Scanner में शामिल

होते हैं, तो आपके उपयोग किए जाने वाले ऐप्स स्वतः सुरक्षित हो जाते हैं। आपको कुछ करने की आवश्यकता नहीं — सुरक्षा ऊपर से ही बेहतर हो जाती है।

2. देखें कि आपके पसंदीदा ऐप्स/लाइब्रेरी शामिल हैं या नहीं

यदि आप इन टूल्स पर निर्भर हैं:

* VLC
* Firefox
* Signal
* Python packages

तो आप OSS Scanner GitHub पेज पर जाकर देख सकते हैं कि उनके मेंटेनर्स ने नामांकन किया है या नहीं। (यह आम उपयोगकर्ताओं के लिए सूचित रहने का अप्रत्यक्ष तरीका है।)

3. छोटे ओपन सोर्स प्रोजेक्ट मेंटेनर्स जो कोई भी छोटा ओपन सोर्स प्रोजेक्ट मेंटेन करता है, वह Anthropic से मुफ्त AI सुरक्षा स्कैन प्राप्त कर सकता है। बस अपना प्रोजेक्ट नामांकित करें। यह समुदाय की सुरक्षा को बेहतर बनाता है।

4. अधिक विश्वसनीय ऐप्स का उपयोग करें

जो ऐप्स सार्वजनिक रूप से बताते हैं कि वे OSS Scanner या Project Glasswing verified लाइब्रेरी का उपयोग करते हैं, उन्हें अधिक सुरक्षित माना जा सकता है।

मेंटेनर्स OSS Scanner का उपयोग कैसे करते हैं (सरल चरण):-

GitHub प्रोजेक्ट मेंटेन करने वाले डेवलपर्स या तकनीकी उपयोगकर्ताओं के लिए:

1. OSS Scanner रिपॉज़िटरी पर जाएँ github.com/anthropics/oss-scanner
2. एक Pull Request बनाएँ एक कॉन्फ़िग फ़ाइल जोड़ें: projects/<your-project>/project.yaml
3. Anthropic यह सत्यापित करता है कि आप कोर मेंटेनर हैं (दुरुपयोग रोकने के लिए)
4. नियमित AI जनित vulnerability रिपोर्ट प्राप्त करें ड्ढ कोई मानव समीक्षा नहीं ड्ढ तेज़ निष्कर्ष ड्ढ पैच और पुनरुत्पादन चरण शामिल
5. समस्याएँ ठीक करें और अपने प्रोजेक्ट की सुरक्षा बढ़ाएँ

भारत और आम उपयोगकर्ताओं के लिए यह क्यों महत्वपूर्ण है:-

* भारत का डिजिटल इकोसिस्टम (UPI, आधार लिंक्ड ऐप्स, बैंकिंग ऐप्स) ओपन सोर्स कंपोनेंट्स पर भारी निर्भर है। ड्ढ तेज vulnerability detection इन जोखिमों को कम करता है:

o डेटा चोरी
o बैंकिंग धोखाधड़ी
o मैलवेयर हमले
o सप्लाई चेन समझौते

* भले ही आप कभी कोड को इस्तेमाल नहीं करते हो, आपकी डिजिटल सुरक्षा बेहतर होती है।

आदर्श एवं मर्यादाओं युक्त है श्री राम का जीवन: सतीश गर्ग

परिवहन विशेष न्यूज

नई दिल्ली। आदर्श रामलीला कमेटी अशोक विहार फेस-2 के रामलीला स्थल पर कमेटी के द्वारा नवरात्रों का शुभारंभ भजन क्लबिंग के साथ हुआ। यहां महिला पुरुष व बच्चों ने पूरे उत्साह और उमंग के साथ गरबा व डांडिया खेलते हुए जमकर आनंद लिया रंग-बिरंगे पारंपरिक परिधानों में सजी महिलाओं एवं पुरुषों ने भाव भरे मधुर भजनों के साथ धार्मिक व फिल्मी धुन पर खूब थिरकते हुए माहौल को खुशनुमा और उत्सवप्रिय बना दिया।

उत्सव के दौरान जहां गायकों ने अपने उमंग भरे भजनों का रसास्वादन किया तो वहीं नृत्यांगनाओं ने जमकर झूमने पर विवश किया। कार्यक्रम का उद्घाटन सामाजसेवी विवेक मंगल व अजय गुप्ता ने किया। मुख्य अतिथि के रूप में भारतीय जनता पार्टी दिल्ली प्रदेश के कोषाध्यक्ष सतीश गर्ग सम्मिलित हुए। इस अवसर पर सतीश गर्ग ने कहा कि श्री राम का चरित्र, कर्तव्यनिष्ठ ,कर्म प्रधान, आदर्शों एवं मर्यादाओं से युक्त अति विनम्र व प्रेम प्रधान है। रामलीला के अध्यक्ष अशोक गर्ग ने सभी को महापर्व नवरात्रि की शुभकामनाएं दी। मेले का उद्घाटन समाज सेवी अंकित गुप्ता और राहुल बैजल ने किया। इस अवसर पर रामलीला के निदेशक नितिन बत्रा, महामंत्री, देवराज, चंदन शर्मा कोषाध्यक्ष प्रदीप गोयल ,ऊषा गोयल, सुमेधा गर्ग, । दृष्टि गर्ग, संदीप गुप्ता, राहुल गुप्ता,राकेश गुप्ता, घनश्याम गुप्ता , पंकज वासिया,समेत अन्य पदाधिकारी उपस्थित थे।

9 करोड़ रुपये से अधिक का घोटाला: सड़क एवं भवन निर्माण विभाग के 3 कर्मचारी गिरफ्तार

9.24 करोड़ रुपये की सरकारी राशि के गबन मामले में ओडिशा विजिलेंस की कार्रवाई, अब तक 9 आरोपी गिरफ्तार

मनोरंजन शासमल , स्टेट हेड ओड़िशा

भुवनेश्वर: ओडिशा विजिलेंस ने सड़क एवं भवन निर्माण विभाग (आरएंडबी) में 9.24 करोड़ रुपये से अधिक की सरकारी राशि के गबन के मामले में तीन और आरोपियों को गिरफ्तार किया है। इनमें एक कोषागार कर्मचारी भी शामिल है। इस मामले में अब तक कुल नौ लोगों की गिरफ्तारी हो चुकी है।

यह मामला भुवनेश्वर स्थित अधीक्षण अभियंता, आरएंडबी डिवीजन-1 कार्यालय में 9.24 करोड़ रुपये से अधिक की वित्तीय अनियमितता और गबन से जुड़ा है। गिरफ्तार तीनों आरोपियों को भुवनेश्वर स्थित विशेष विजिलेंस अदालत में पेश किया गया।

गिरफ्तार किए गए नए आरोपियों की पहचान भुवनेश्वर जिला कोषागार कार्यालय के वरिष्ठ लेखाकार कृष्ण चंद्र बेहरा, पुरी आरएंडबी डिवीजन के वरिष्ठ सहायक विश्वनाथ दास और भुवनेश्वर आरएंडबी डिवीजन-1 के चपरासी कुमुद साहू के रूप में हुई है।

इस मामले में कुल 9,24,10,193 रुपये के गबन का आरोप है। इसे लेकर भुवनेश्वर विजिलेंस थाने में केस नंबर 21/2026 दर्ज किया गया है। इससे पहले 27 सितंबर को मुख्य आरोपी एवं सेक्शन ऑफिसर बनलता महांती और कनिष्ठ सहायक विभुदत्त नायक समेत छह लोगों को गिरफ्तार कर न्यायिक हिरासत में भेजा गया था।

विजिलेंस जांच में सामने आया है कि मुख्य आरोपी विभुदत्त नायक ने कथित तौर पर फर्जी बिलों को बिना किसी बाधा के पास कराने के लिए कृष्ण चंद्र बेहरा को फोनपे के माध्यम से 3.90 लाख रुपये दिए थे। मार्च 2025 से जुलाई 2026 के बीच कुल 11 बार यह राशि हस्तांतरित की गई थी। दूसरी ओर, इस कार्यालय में पहले कनिष्ठ सहायक के रूप में कार्य कर चुके विश्वनाथ दास ने कथित तौर पर अपने, अपनी मां और रिश्तेदार कान्हू चरण बेहरा के बैंक खातों का विवरण मुख्य आरोपी को उपलब्ध कराया था। जांच के अनुसार, ग्रेच्युटी और अवकाश वेतन के नाम पर गबन की गई राशि इन खातों में जमा की जाती थी।

जांच में पता चला है कि विश्वनाथ दास की मां के खाते में 50 लाख रुपये, कान्हू चरण बेहरा के खाते में 15 लाख रुपये और उनके अपने खाते में 37 लाख रुपये जमा किए गए थे। बाद में उन्होंने कथित तौर पर इनमें से कुछ राशि मुख्य आरोपी को वापस कर दी, जबकि शेष रकम नकद निकाल ली।

विजिलेंस मामले की आगे जांच कर रही है।

नवरात्रि की शुरुआत और इतिहास से जुड़ी पौराणिक ग्रंथों में दो मुख्य कथाएं

Ms. Aanchal Agarwal
Working as PRT in one of the renowned school of Delhi
Done PGDM in IT & HR, M.COM., B.Ed.

नवरात्रि की शुरुआत और इतिहास से जुड़ी पौराणिक ग्रंथों में दो मुख्य कथाएं

1. महिषासुर का वध (देवी दुर्गा की कथा)

पौराणिक कथाओं के अनुसार, महिषासुर नाम के एक शक्तिशाली राक्षस ने ब्रह्मा जी की कठोर तपस्या करके यह वरदान प्राप्त कर लिया था कि कोई भी देवता, दानव या मनुष्य उसका वध न कर सके—सिवाय एक स्त्री के। महिषासुर को लगता था कि कोई स्त्री उसका मुकाबला नहीं कर सकती।

– वरदान मिलते ही उसने तीनों लोकों पर अत्याचार करना शुरू कर दिया और देवताओं को स्वर्ग से निकाल दिया।

– तब ब्रह्मा, विष्णु और महेश (शिव) सहित सभी देवताओं के क्रोध और तेज से माँ दुर्गा का प्राकट्य हुआ।

– देवताओं ने माँ दुर्गा को अपने-अपने अस्त्र-शस्त्र सौंपे।

– माँ दुर्गा और महिषासुर के बीच नौ दिनों तक भयंकर युद्ध चला।

– दसवें दिन माँ दुर्गा ने महिषासुर का वध कर तीनों लोकों को उसके अत्याचारों से मुक्त कराया।

– इसी जीत की खुशी में और देवी शक्ति के प्रति आभार व्यक्त करने के लिए नौ दिनों तक नवरात्रि का पर्व मनाया जाने लगा और दसवें दिन को 'विजयदशमी' (दशहरा) के रूप में मनाया जाता है।

2. भगवान श्रीराम द्वारा देवी पूजा (रामायण काल की कथा)

– जब रावण ने माता सीता का हरण कर लिया था और भगवान राम लंका पर आक्रमण करने की तैयारी कर रहे थे, तब युद्ध में विजय प्राप्त करने के लिए भगवान राम ने आश्विन मास (शारदीय नवरात्रि) में नौ दिनों तक माँ दुर्गा का अनुष्ठान और व्रत रखा था।

– भगवान राम ने देवी को प्रसन्न करने के लिए 108 नीलकमल अर्पित करने का संकल्प लिया था।

– देवी ने श्रीराम की परीक्षा लेने के लिए एक कमल छिपा दिया। तब श्रीराम ने अपना एक नेत्र (जिन्हें कमल-नयन कहा जाता है) देवी को अर्पित करने का निर्णय लिया।

– श्रीराम की इस अटूट भक्ति से प्रसन्न होकर माँ दुर्गा प्रकट हुईं और उन्हें विजय का आशीर्वाद दिया।

– इसके बाद दसवें दिन (विजयदशमी) भगवान राम ने रावण का वध कर लंका पर विजय प्राप्त की। माना जाता है कि तभी से शारदीय नवरात्रि का उत्सव व्यापक रूप से मनाया जाने लगा।

नवरात्रि में प्रतिदिन बोला जाने वाला लोकप्रिय नवदुर्गा मंत्र

पुराणों में वर्णित नवादुर्गा मंत्र का यह शक्तिशाली श्लोक पूरी नवरात्रि में रोज़ बोला जा सकता है। इसे माँ दुर्गा के सभी रूपों की कृपा पाने के लिए महत्वपूर्ण माना गया है:

सर्वमंगल मांगल्ये शिवे सर्वार्थ साधिके।

शरण्ये त्र्यंबके गौरि नारायणि नमोऽस्तु ते॥

अर्थ: "हे देवी! आप सभी प्रकार के मंगल प्रदान करने वाली हैं, परम कल्याणकारी हैं और सभी पुरुषार्थों को सिद्ध करने वाली हैं। शरणागत की रक्षा करने वाली, तीन नेत्रों वाली और गौर वर्ण वाली हे नारायणी देवी! आपको नमस्कार है।"

11 ड्रोन से 2,708 रूट किलोमीटर रेलमार्ग और 284 स्टेशनों की निगरानी

मनोरंजन शासमल , स्टेट हेड ओड़िशा

भुवनेश्वर : पूर्व तट रेलवे ने ड्रोन आधारित निगरानी के क्षेत्र में भारतीय रेलवे के बीच अग्रणी स्थान हासिल किया है। वर्तमान में इसके तीनों मंडलों में 11 ड्रोन तैनात हैं, जबकि मार्च 2027 तक इनकी संख्या बढ़ाकर 22 करने की योजना है। इस पहल से रेलमार्गों की सुरक्षा, यात्रियों की संरक्षा, भीड़ नियंत्रण और रेलवे संपत्तियों की सुरक्षा को और मजबूत किया जा रहा है। 'DROAWK EYE' से संवेदनशील क्षेत्रों पर नजर,

'DROAWK EYE – Observation, Detection, Prevention' नाम से संचालित यह व्यवस्था रेलवे सुरक्षा बल (RPF) को संवेदनशील स्थानों पर निगरानी रखने, संदिग्ध गतिविधियों का पता लगाने और अपराधों की रोकथाम में मदद कर रही है। वर्तमान में तैनात 11 ड्रोन में से खुर्दा रोड मंडल में 4, संबलपुर मंडल में 6 और रायगढ़ा मंडल में 1 ड्रोन कार्यरत है। इनके संचालन में DGCA से प्रमाणित 160 ड्रोन पायलट सहयोग कर रहे हैं। यह नेटवर्क रेलवे सुरक्षा बल की 31 चौकियों के अंतर्गत 284 स्टेशनों, 2,708 रूट किलोमीटर और 6,072 ट्रैक किलोमीटर रेलमार्ग को कवर करता है। 15 सितंबर तक किए गए 3,033 ड्रोन मिशन।1 जनवरी से 15 सितंबर 2026 के बीच पूर्व तट रेलवे के रेलवे सुरक्षा बल ने कुल 3,033 ड्रोन उड़ान मिशन संचालित किए। इनमें खुर्दा रोड मंडल में 680, रायगढ़ा मंडल में 1,024 और संबलपुर मंडल में 1,329 मिशन शामिल हैं। इनमें से 1,265 रेड-कोडेड मिशन महत्वपूर्ण सुरक्षा गतिविधियों पर केंद्रित थे। इनके अंतर्गत तोड़फोड़ और पत्थरबाजी की रोकथाम, केबल चोरी का पता लगाने तथा अग्नि सुरक्षा की निगरानी जैसे कार्य शामिल थे। नाइट विजन और थर्मल कैमरों से लैस ड्रोन।

नाइट विजन और थर्मल कैमरों से लैस ये ड्रोन जंगलों, पहाड़ी क्षेत्रों, सुरंगों, पुलों और सुनसान रेलमार्गों की निगरानी में विशेष रूप से उपयोगी साबित हो रहे हैं। कोरापुट–रायगढ़ा–किरंदुल रेल लाइन पर इनकी उपयोगिता काफी महत्वपूर्ण है। ये ड्रोन रेलवे स्टेशनों, कोचिंग यार्डों और महत्वपूर्ण प्रतिष्ठानों की निगरानी करने के साथ-साथ अवैध प्रवेश, चोरी और अतिक्रमण का पता लगाने में मदद करते हैं। इसके अलावा, जांच और आपदा प्रबंधन के कार्यों में भी इनका उपयोग किया जा रहा है।

रथयात्रा के दौरान भीड़ प्रबंधन में मिली मदद।

पुरी में रथयात्रा 2026 के दौरान भीड़ प्रबंधन में ड्रोन निगरानी व्यवस्था ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। यह महिला यात्रियों की सुरक्षा के लिए संचालित 'मेरी सहेली' पहल, स्वच्छता अभियान, पर्यावरण संरक्षण और संवेदनशील रेलवे संपत्तियों की निगरानी में भी सहायक है। लाइव सर्विलांस और ऑडियो चेतावनी के माध्यम से रेलवे ट्रैक को अनधिकृत रूप से पार करने तथा पत्थरबाजी जैसी घटनाओं को रोकने में भी मदद मिल रही है।

एक ड्रोन टीम 8 से 10 किलोमीटर रेलमार्ग की कर सकती है निगरानी। पूर्व तट रेलवे के अनुसार, एक ड्रोन टीम लगभग 8 से 10 किलोमीटर रेलमार्ग की प्रभावी निगरानी कर सकती है। इससे बड़े क्षेत्रों में सुरक्षा निगरानी संभव हो रही है और सुरक्षा कर्मियों की तैनाती अधिक कुशलता से की जा सकती है। मार्च 2027 तक ड्रोन की संख्या बढ़ाकर 22 करने की योजना के साथ पूर्व तट रेलवे तकनीक आधारित निगरानी प्रणाली को और मजबूत बनाने की दिशा में काम कर रहा है। इसका उद्देश्य रेलमार्गों की सुरक्षा बढ़ाने के साथ-साथ यात्रियों की संरक्षा को और बेहतर बनाना है।

में तैनात 11 ड्रोन में से खुर्दा रोड मंडल में 4, संबलपुर मंडल में 6 और रायगढ़ा मंडल में 1 ड्रोन कार्यरत है। इनके संचालन में DGCA से प्रमाणित 160 ड्रोन पायलट सहयोग कर रहे हैं।

यह नेटवर्क रेलवे सुरक्षा बल की 31 चौकियों के अंतर्गत 284 स्टेशनों, 2,708 रूट किलोमीटर और 6,072 ट्रैक किलोमीटर रेलमार्ग को कवर करता है। 15 सितंबर तक किए गए 3,033 ड्रोन मिशन।

1 जनवरी से 15 सितंबर 2026 के बीच पूर्व तट रेलवे के रेलवे सुरक्षा बल ने कुल 3,033 ड्रोन उड़ान मिशन संचालित किए। इनमें खुर्दा रोड मंडल में 680, रायगढ़ा मंडल में 1,024 और संबलपुर मंडल में 1,329 मिशन शामिल हैं। इनमें से 1,265 रेड-कोडेड मिशन महत्वपूर्ण सुरक्षा गतिविधियों पर केंद्रित थे। इनके अंतर्गत तोड़फोड़ और पत्थरबाजी की रोकथाम, केबल चोरी का पता लगाने तथा अग्नि सुरक्षा की निगरानी जैसे कार्य शामिल थे। नाइट विजन और थर्मल कैमरों से लैस ड्रोन।

नाइट विजन और थर्मल कैमरों से लैस ये ड्रोन जंगलों, पहाड़ी क्षेत्रों, सुरंगों, पुलों और सुनसान रेलमार्गों की निगरानी में विशेष रूप से उपयोगी साबित हो रहे हैं। कोरापुट–रायगढ़ा–किरंदुल रेल लाइन पर इनकी उपयोगिता काफी महत्वपूर्ण है। ये ड्रोन रेलवे स्टेशनों, कोचिंग यार्डों और महत्वपूर्ण प्रतिष्ठानों की निगरानी करने के साथ-साथ अवैध प्रवेश, चोरी और अतिक्रमण का पता लगाने में मदद करते हैं। इसके अलावा, जांच और आपदा प्रबंधन के कार्यों में भी इनका उपयोग किया जा रहा है।

रथयात्रा के दौरान भीड़ प्रबंधन में मिली मदद।

पुरी में रथयात्रा 2026 के दौरान भीड़ प्रबंधन में ड्रोन निगरानी व्यवस्था ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। यह महिला यात्रियों की सुरक्षा के लिए संचालित 'मेरी सहेली' पहल, स्वच्छता अभियान, पर्यावरण संरक्षण और संवेदनशील रेलवे संपत्तियों की निगरानी में भी सहायक है। लाइव सर्विलांस और ऑडियो चेतावनी के माध्यम से रेलवे ट्रैक को अनधिकृत रूप से पार करने तथा पत्थरबाजी जैसी घटनाओं को रोकने में भी मदद मिल रही है।

एक ड्रोन टीम 8 से 10 किलोमीटर रेलमार्ग की कर सकती है निगरानी।

पूर्व तट रेलवे के अनुसार, एक ड्रोन टीम लगभग 8 से 10 किलोमीटर रेलमार्ग की प्रभावी निगरानी कर सकती है। इससे बड़े क्षेत्रों में सुरक्षा निगरानी संभव हो रही है और सुरक्षा कर्मियों की तैनाती अधिक कुशलता से की जा सकती है। मार्च 2027 तक ड्रोन की संख्या बढ़ाकर 22 करने की योजना के साथ पूर्व तट रेलवे तकनीक आधारित निगरानी प्रणाली को और मजबूत बनाने की दिशा में काम कर रहा है। इसका उद्देश्य रेलमार्गों की सुरक्षा बढ़ाने के साथ-साथ यात्रियों की संरक्षा को और बेहतर बनाना है।

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक संजय कुमार बाटला द्वारा इम्प्रेशंस प्रिंटिंग एंड पैकेजिंग लिमिटेड, सी-18,19,20 सेक्टर 59, नोएडा (उत्तर प्रदेश) से मुद्रित एवं 3, प्रियदर्शनी अपार्टमेंट ए-4, पश्चिमी विहार, नई दिल्ली- 110063 से प्रकाशित। सम्पर्क : 9212122095, 9811902095. newstransportvishesh@gmail.com
(इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन पी.आर.बी. एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी) किसी भी कानूनी विवाद की स्थिति में निपटारा दिल्ली के न्यायालय के अधीन होंगे। RNI No :- DELHIN/2023/86499. DCP Licensing Number F.2 (P-2) Press/2023